



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

सप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 29] नई दिल्ली, शनिवार, जुलाई 20—जुलाई 26, 2013 (आषाढ़ 29, 1935)

No. 29] NEW DELHI, SATURDAY, JULY 20—JULY 26, 2013 (ASADHA 29, 1935)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

पृष्ठ सं.

भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं.....	389
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	773
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	1069
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम.....	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ.....	*
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रबंध समितियों के बिल तथा रिपोर्ट.....	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं).....	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को	*

*अंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं.....	पृष्ठ सं.
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं).....	*
भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश.....	*
भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.....	641
भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंट्स और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस.....	*
भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.....	*
भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं.....	1553
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस.....	847
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के अंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक.....	*

CONTENTS

Page No.	Page No.		
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	389	Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	773	PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence.....	1	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	1069	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	641
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1553
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*	PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	847
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the		PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folios not received.

भाग I — खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 1 जुलाई 2013

सं. 41-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, अरुणाचल प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:--

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. विक्रमजीत सिंह,
पुलिस अधीक्षक
2. थॉमस परटिन,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

दिनांक 20 अक्टूबर, 2012 को खोंसा के जिला पुलिस प्राधिकारियों को खोंसा शहर की स्वीटफाल कालोनी में नगाबो अबोह नामक एन एस सी एन (के) के एक कट्टरवादी कैडर स्वयोषित कैप्टन-सह राजापियों की मौजूदगी के बारे में जानकारी मिली। तदनुसार, तिरप जिले के पुलिस अधीक्षक श्री विक्रमजीत सिंह (आई पी एस) ने दो दल बनाएः एक दल का नेतृत्व उन्होंने स्वयं किया और दूसरा दल उप पुलिस अधीक्षक जेम्स के लेगो (एस डी पी ओ खोंसा) के नेतृत्व में गठित किया। उप पुलिस अधीक्षक, जेम्स के लेगो के नेतृत्व वाले दल ने कालोनी की निचले छोर से तलाशी शुरू कर दी, जबकि श्री विक्रमजीत सिंह के नेतृत्व वाले दल ने, जिसमें उप-निरीक्षक थॉमस परटिन, (ओ सी, पुलिस स्टेशन खोंसा), सहायक उप निरीक्षक वाई. तेसरिंग, हेड कांस्टेबल टेग तेजी और नेनी कोयांग और कांस्टेबल एस. मण्डल, डी. जुगली, एल. मिहू. एच. मिसो, टी. गुम्बो, एल. बैंगयांग, के. नायडु और पी. रुतुम शामिल थे, ऊपरी छोर से तलाशी करनी शुरू कर दी जब दो झोपड़ियों की तलाशी पूरी करने के बाद दल तीसरी झोपड़ी के पास पहुंचा और उसे चारों ओर से घेर लिया था, तब श्री विक्रमजीत सिंह पिछले छोर से युक्तिपूर्वक झोपड़ी के अन्दर प्रवेश करने लगे और उनके पीछे-पीछे एस. आई. थॉमस परटिन और हेड कांस्टेबल एन. कोयांग भी गए, जबकि एस. आई. वाई. तेसरिंग और टीम के अन्य सदस्यों ने झोपड़ी के सामने के और पीछे के प्रवेश द्वारों को घेर लिया।

जैसे ही श्री विक्रमजीत सिंह झोपड़ी में पैर रखने वाले थे, उसी समय भीतर से एक व्यक्ति ने 15 इंच लम्बे ब्लेड वाले एक स्थानीय चाकू 'दाव' से उन पर हमला कर दिया। श्री विक्रमजीत सिंह ने अभियुक्त का

हाथ पकड़ते हुए चाकू को रोकने का प्रसास किया और इस प्रक्रिया में उनके बाएं हाथ की हथेली और अंगूठा कट गया। इस प्रतिरोध को देखते हुए उस व्यक्ति ने तत्काल 'दाव' को नीचे फेंक दिया और अपना दाहिना हाथ छुड़ा लिया और उनके पीछे पहुंच गया। इसी बीच, हेड कांस्टेबल एन. कोयांग, जो श्री विक्रमजीत सिंह के बिल्कुल पीछे थे, ने 'दाव' छीन लिया। यह महसूस करते हुए कि अभियुक्त किसी दूसरे हथियार तक पहुंच रहा है, श्री सिंह ने उसे नियंत्रित करके दबोचने की कोशिश की। उप निरीक्षक थॉमस परटिन, जो कुछ ही कदम की दूरी पर थे, ने अभियुक्त को अपनी बेल्ट में लगी पिस्तौल को निकालते देखा और उसे ट्रिगर दबाने से रोकने के लिए उसका हाथ पकड़ने के लिए आगे की ओर लपके। इस हाथापाई और भिड़न्त के परिणामस्वरूप श्री विक्रमजीत सिंह, पुलिस अधीक्षक, खोंसा और उप निरीक्षक थॉमस परटिन दोनों को ही मामूली चोटें आई। शोरगुल सुनकर दल के अन्य सदस्य उक्त स्थल की ओर भागे और अभियुक्त को दबोचने और उसे निहत्था करने में सफल हो गए। उसे पकड़कर तलाशी ली गई। उसके कब्जे से गोला बारूद के 5 जीवित राँडों सहित 7.65 एम एम की एक पिस्तौल और अफीम लगे कुछ कपड़े बरामद किए गए। जानकारियों की जांच करने पर यह पुष्टि हुई कि वह एन एस सी एन (के) का खूंखार स्वघोषित कैप्टन-सह-राजापियों नगाबो अबोह ही था जो व्यापारियों और सरकारी कर्मचारियों से धन ऐंठने के लिए उन्हें आतंकित करता रहा था।

की गई बरामदगी

1. आटोमैटिक पिस्तौल 7.65 एम एम कैलिबर -01
2. 7.65 एम एम की मैगजीन
3. 7.65 एम एम गोला बारूद के जिन्दा राउण्ड
4. 15 इंच × 1.52 इंच के ब्लेड वाला चाकू -‘दाव’

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री विक्रमजीत सिंह, पुलिस अधीक्षक और थॉमस परटिन, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 20.10.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 42-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. प्रांजित बोराह
सब-डिवीजनल पुलिस अधिकारी
2. प्रांजित लहकर
उप निरीक्षक (यू. बी.)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

दिनांक 15.10.2010 को रात्रि लगभग 8.30 बजे गोसांझांव के सब-डिवीजनल पुलिस अधिकारी श्री प्रांजित बोराह को सिमुलटापू औ पी के प्रभारी, उप निरीक्षक (यू. बी.) प्रांजित लहकर से फोन पर सूचना मिली कि उल्फा के कुछ संदिग्ध उग्रवादियों को डिंगडिंगा क्षेत्र में लोगों से धन ऐंठने और फिराती के लिए उन्हें अगुवा करने के इरादे से इधर-उधर घूमते देखा गया है। दुर्गापूजा समारोह का समय होने के कारण, उपलब्ध सुरक्षा बलों को पूरे क्षेत्र में फैला दिया गया तथा व्यवस्था संबंधी ड्यूटी के लिए तैनात किया गया था। इसके बावजूद गोसांझांव के एसडीपीओ श्री प्रांजित बोराह, केवल अपने पी एस ओ के साथ तत्काल उक्त क्षेत्र के लिए निकल गए और उन्होंने सिमुलटापू औ पी के प्रभारी को उपलब्ध औ पी स्टॉफ के साथ आगे बढ़ने का निर्देश दिया। साथ ही, 15 डोगरा रेजीमेन्ट कैम्प गोसांझांव की स्थानीय सेना इकाई को भी सूचित कर दिया गया और उन्होंने भी एक छोटा दल भेज दिया।

उक्त क्षेत्र में पहुंचने पर, पुलिस और सेना के संयुक्त दल को दो हिस्सों में बांट दिया गया और सेना के कार्मिकों वाले एक दल ने डिंगडिंगा बाजार की पिछली ओर से अर्थात् मचपारा की ओर से और पुलिस और सेना वाले दूसरे दल ने श्रीरामपुर की ओर से तलाशी शुरू कर दी। गोसांझांव के एसडीपीओ श्री प्रांजित बोराह के नेतृत्व में श्रीरामपुर की ओर वाले दल ने केमबेलपुर, जो श्रीरामपुर-तमारहाट रोड का चौराहा था, पर एक अवरोध खड़ा कर दिया। लगभग रात 10.45 बजे ग्राहमपुर की ओर से एक मोटरसाइकिल आती दिखाई दी जिस पर दो व्यक्ति सवार थे। बाइक को देखकर गोसांझांव के एसडीपीओ प्रांजित बोराह के नेतृत्व वाले तलाशी दल ने बाइक को रुकने का संकेत दिया, किन्तु रुकने के बजाय पिछली सीट पर बैठे व्यक्ति ने दल पर अचानक स्वचालित हथियार से गोलियां चला दीं गोसांझांव के एसडीपीओ प्रांजित बोराह, सिमुलटापू औ पी के प्रभारी, एसआई (यू.बी.) प्रांजित लहकर और एसडीपीओ के दो पीएसओ नामतः कोकराझार डीईएफ के एबीसी देबजीत कलिता और 7वीं एपी बटालियन के सीएन डानबास्को, जो आगे थे, उग्रवादियों की स्वचालित गोलियों से बाल-बाल बच गए और बचाव के लिए खुली जमीन पर गिर गए। उसी समय, बाइक चलाने वाला व्यक्ति अचानक चौराहे पर दाहिनी ओर मुड़ गया, जबकि पीछे बैठा व्यक्ति गोलियां चलाता रहा।

तत्काल जमीन पर गिरने और खुली सड़क पर पड़े रहने पर भी गोसांझांव के एसडीपीओ श्री प्रांजित बोराह और सिमुलटापू औ पी के प्रभारी एसआई (यू.बी.) प्रांजित लहकर ने अपनी 9 एम एम सर्विस

पिस्तौलों से जबाब में गोलियां चलाई और दोनों पीएसओ ने भी इसमें उनका साथ दिया। गोसांझांव के एसडीपीओ और उनके दल द्वारा त्वरित और सही निशाने पर चलाई गई जवाबी गोलियों से वाहन पर पीछे बैठा व्यक्ति घायल हो गया और जमीन पर गिर गया। दूसरे व्यक्ति ने भी अपनी बाइक से छलांग लगा दी और सड़क के पुश्टे के पीछे धान के खेत में छिपकर अपनी पिस्तौल से गोलियां चलानी शुरू कर दी। इसी बीच, घायल उग्रवादी भी रेंगता हुआ पुश्टे पर पहुंच गया और अपने स्वचालित हथियार से गोलियां चलाने लगा।

इस समय गोसांझांव के एसडीपीओ और उनका दल खुले स्थान पर दिखाई दे रहे थे जबकि दोनों उग्रवादी छिपे हुए थे। इसके बावजूद वे पीछे नहीं हटे और पूरे समय अपनी जानों को जोखिम में डालते हुए गोलियां चलाते रहे। इस अनुकरणीय साहसिक कार्रवाई की बजह से पुलिस/सेना दल के अन्य सदस्यों ने चौराहे पर अपनी पोजीशन ले ली और गोलियां चलानी शुरू कर दी जिससे दोनों उग्रवादियों का ध्यान हट गया। इस बात का लाभ उठाते हुए और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा पर ध्यान दिए बिना गोसांझांव के एसडीपीओ प्रांजित बोराह और उनका दल रेंगकर बांधी ओर गया और निकट से अपनी पिस्तौलों से उग्रवादियों की तरफ सही निशाने पर गोलियां चलायी। इस गोलाबारी में दोनों उग्रवादी घायल हो गए और उनकी ओर से गोलियां चलनी बंद हो गयीं।

कुछ समय पश्चात्, जब वे उग्रवादियों के पास सावधानीपूर्वक पहुंचे, तो वहां दो उग्रवादी जीवित अवस्था में पड़े हुए पाये गये। उन्हें तत्काल 108 एम्बुलेंस सर्विस द्वारा गोसांझांव स्थित आरएनबी सिविल अस्पताल पहुंचाया गया, जहां ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर द्वारा उन्हें मृत अवस्था में लाया गया घोषित किया गया।

बाद में दोनों उग्रवादियों की उल्फा के कट्टर सदस्यों के रूप में पहचान की गई। वे थे :—(i) सुखदेव रावा उर्फ केस्टो राय पुत्र स्व. निरोद रावा, गांव तिरुबारी, भुमका, पुलिस स्टेशन: गोसांझांव (ii) प्रशान्त बर्मन पुत्र सुधीर बर्मन, गांव झाकुपाड़ा, पुरानी बोगांझांव, पुलिस स्टेशन बोगांझांव। मारे गए उग्रवादियों से निम्नलिखित हथियार/गोला-बारूद आदि जब्त किए गए:—

1. 9 एमएम कार्बाइन-01
2. 9 एमएम कार्बाइन मैगजीन-02
3. 9 एमएम पिस्तौल-01
4. 9 एमएम पिस्तौल मैगजीन-02
5. 9 एमएम गोलाबारूद (जिन्दा) 53 राउंड्स
6. 9 एमएम के खाली खोखे-04
7. एक बजाज डिस्कवर बाइक नं. ए एस-19/ए 20151

श्री प्रांजित बोराह, श्री प्रांजित लहकर और दोनों पीएसओ नामतः एबीसी देबजीत कलिता और सी एन डानबास्को खाका द्वारा किया गया यह कार्य अनुकरणीय साहस और वीरता की कार्रवाई है जिसमें वे पूर्णतया खुले रूप से उग्रवादियों की स्वचालित हथियार से की जा रही गोलाबारी के समक्ष रेंगते हुए उनके पास पहुंचे और अपनी सही निशाने पर की गई गोलाबारी से दोनों उग्रवादियों को निष्प्रभावी कर दिया। इस कार्रवाई में बहुत अधिक जोखिम था और उन्होंने अदम्य साहस, कौशल और

उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो स्पष्ट रूप से उनकी अपेक्षित इयूटी से कहीं अधिक था।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री प्रांजित बोराह, एसडीपीओ, और प्रांजित लहकर, उप निरीक्षक (यूबी) ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 15.10.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 43-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:--

नाम और रैंक	सर्वश्री
1. अनुराग अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. शुभाशीष बरुआ, सब-डिवीजनल पुलिस अधिकारी	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. ग्रेट्सन मराक, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

दिनांक 18.03.2011 को कारबी आंगलोंग के पुलिस अधीक्षक श्री अनुराग अग्रवाल, आईपीएस को बोपाथर पुलिस स्टेशन के अन्तर्गत डॅंगजा तिरोन गांव के क्षेत्र में शस्त्रों और गोलाबारूद सहित कैपीएलटी के कैडरों की आवाजाही के बारे में सूचना मिली। उक्त कैपीएलटी सूचना मिलते ही श्री अनुराग अग्रवाल ने अन्य पुलिस और सुरक्षा कर्मियों के साथ स्वयं अपने नेतृत्व में सुबह-सुबह ही 5वीं राज-राइफल और सीआरपीएफ की 20वीं बटालियन के समन्वय से संयुक्त कार्रवाई शुरू की। प्रातः लगभग 6 बजे जब पुलिस दल डॅंगजा तिरोन गांव से गुजर रहा था, तभी जंगल की ओर से पुलिस दल पर, उन्हें मारने के इरादे से, भारी गोलीबारी की गई श्री अनुराग अग्रवाल ने अपने दल को शीघ्रता से जवाबी हमला करने का आदेश दिया और स्वयं भी अपनी एके-47 राइफल से आतंकवादियों पर गोलियां चलानी शुरू कर दी। गोलियां चलाते समय उन्हें आस-पास कोई छिपने का स्थान नहीं मिला, इसलिए वे उग्रवादियों की जोखिम भरी गोलीबारी के सामने आ गए और रंगते हुए उनकी ओर बढ़ने लगे। उग्रवादियों की गोलीबारी के विरुद्ध उनकी निडरता से की गई कार्रवाई से अन्य पुलिस कर्मी भी उत्साहित और प्रेरित हो गए और उन्होंने भी उग्रवादियों पर गोलियां चलानी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप लगभग 20-25 मिनट तक भीषण मुठभेड़ हुई। श्री अनुराग अग्रवाल गोलीबारी की दिशा में आगे बढ़े और इस प्रकार

उग्रवादियों की गोलियों के सामने आ गए। कुछ उग्रवादियों ने अंधेरे और घने पेड़-पौधों की ओट में बचने का प्रयत्न किया। इसी प्रकार श्री शुभाशीष बरुआ, एसडीपीओ बोकाजन ने भी अपने दल, विशेष रूप से एबीसी ग्रेट्सन मराक के साथ यही तरीका अपनाया और उग्रवादियों की गोलीबारी की ओर बढ़ना शुरू कर दिया। श्री अनुराग अग्रवाल भग रहे उग्रवादियों का लगभग 2-3 किमी। तक तब तक पीछा करते रहे जब तक कि वे दूसरी ओर से जंगल में गायब नहीं हो गए। श्री शुभाशीष बरुआ और श्री ग्रेट्सन मराक भी उग्रवादियों की ओर बढ़ते रहे। इसके पश्चात् उन्होंने उस क्षेत्र की पूरी तलाशी की और तलाशी की कार्रवाई के दौरान सेना की वर्दी में गोलियों से छलनी एक लावारिस शब बरामद हुआ। बाद में इस शब की पहचान केपीएलटी के कारपोरल, अंगतुक टेरोन के रूप में हुई। तलाशी के दौरान मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित हथियार/बारूद बरामदगियां की गई:--

- (i) एके-56 राइफल-1
- (ii) एके-56 मैगजीन-2
- (iii) डेटोनेटर (तार से बंधे हुए 2)-3
- (iv) जिलेटिन स्टिक (नियो-जेल-90)-1
- (v) एके-56 के जिन्दा गोलाबारूद के राउंड्स-36
- (vi) एके-56 के खाली खोखे-23
- (vii) बैटरी-5
- (viii) बिजली के स्विच-1

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अनुराग अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक, शुभाशीष बरुआ, एसडीपीओ और ग्रेट्सन मराक, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 18.03.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 44-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:--

नाम और रैंक	सर्वश्री
1. गणेश कुमार, पुलिस अधीक्षक	
2. कालेश्वर पासवान, सब-डिवीजनल पुलिस अधिकारी	
3. नीरज कुमार सिंह, उप पुलिस अधीक्षक	

4. चन्द्र भूषण मिश्रा,
उप निरीक्षक
5. ओम प्रकाश,
उप निरीक्षक
6. धनराज कुमार,
जूनियर कमाण्डो
7. धीरज थापा,
जूनियर कमाण्डो
8. अजय कुमार चौधरी,
जूनियर कमाण्डो
9. जय राम सिंह,
जूनियर कमाण्डो
10. प्रकश कुमार शर्मा,
जूनियर कमाण्डो
11. अनिरुद्ध कुमार पंडित
कास्टेबल
12. नन्दू राम,
कास्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

दिनांक 13.03.2011 को जिला पूर्व चम्पारन (मोतीहारी) बिहार के पुलिस अधीक्षक श्री गणेश कुमार, आईपीएस को बिहार, पटना के महानिरीक्षक (ऑपरेशन) श्री के. एस. द्विवेदी, आईपीएस से केसरिया पुलिस स्टेशन के दरमाहा गांव में प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) के 30–35 सशस्त्र कट्टर उग्रवादियों के इकट्ठे होने की खुफिया सूचना मिली। यह सूचना मिलने पर मोतीहारी के पुलिस अधीक्षक ने तत्काल गांव के भूभाग और स्थलाकृति के बारे में आवश्यक ब्यौरे एकत्र किए, अभियान की योजना बनाई और उग्रवादियों को गिरफ्तार करने की रणनीति तैयार की। उन्होंने अपने जिला पुलिस बल को संघटित किया और चकिया के एसडीपीओ श्री कालेश्वर पासवान को सीआरपीएफ की एक कम्पनी के साथ गांव पहुंचने का निर्देश दिया। आई जी (ऑपरेशन) के निर्देश पर एसटीएफ (एसआईजी) बल और उप पुलिस अधीक्षक, एसटीएफ नीरज कुमार सिंह भी गांव में पहुंच गए। जैसे ही लगभग अपराह्न 3.30 बजे पुलिस दल गांव पहुंचा, नक्सलियों ने अपने स्वचालित हथियारों से पुलिस पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। पुलिस बल ने पोजीशन ले ली और नक्सलियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। तथापि, नक्सली पुलिस पर गोलियां चलाते रहे। पुलिस ने मोतीहारी के पुलिस अधीक्षक, जो पहले ही गांव के लिए निकल पड़े थे, को सूचित किया और नक्सलियों पर नियंत्रित और प्रभावकारी गोलीबारी करनी शुरू कर दी।

लगभग आधे घण्टे बाद, पुलिस अधीक्षक, मोतीहारी वहां पहुंच गये और उन्होंने सारी स्थिति का भार सम्भाला। नक्सली अनुकूल स्थानों पर थे जबकि पुलिस दल बिना किसी सुरक्षित आश्रय के खुले क्षेत्र में था। दुर्भाग्यवश, एसएपी के जवान शिवशंकर सिंह जिप्सी में प्रवेश करने के लिए रेंग कर जाते समय जांघ में गोली लगने से घायल हो गए। इसी

बीच, नक्सलियों ने गेहूं के खेतों और झोपड़ियों में लाभप्रद स्थिति में अपनी पोजीशन ले ली, जहां जिप्सियों से नहीं पहुंचा जा सकता था। तब, पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में पुलिस दल रेंगते हुए, अंधाधुंध गोलियों का सामना करते हुए उग्रवादियों की ओर बढ़ा और उसने झोपड़ियों के अंदर फंसे ग्रामीणों को बचाया। चूंकि नक्सली लगातार पुलिस पर गोलियां चला रहे थे, इसलिए पुलिस ने भी बदले में गोलियां चलाई। जैसे ही अंधेरा हुआ, पुलिस ने पूरे गांव को चारों ओर से घेर लिया ताकि उग्रवादी बचकर भाग न सकें रात भर उग्रवादियों द्वारा अंधाधंध गोलियां चलाकर कई बार बचकर भागने का निर्थक प्रयास किया गया। किन्तु उनके ऐसे सभी प्रयास ठोस जवाबी कार्रवाई, प्रभावशाली घेराबंदी और चौकस गश्त से असफल हो गए।

दिनांक 14.03.2011 को प्रातः लगभग 2 बजे श्री के. एस. द्विवेदी, आईजी (ऑपरेशन) घटनास्थल पर पहुंचे और उन्होंने स्थिति का जायजा लिया और स्वयं कमान सम्भाल ली। उच्च क्षमता से युक्त, सही योजना बनाकर और उसे पूर्ण रूपेण कार्यान्वित करके आईजी (ऑपरेशन) ने कार्रवाई का नेतृत्व सम्भाल लिया। सूर्योदय से पूर्व, पुलिस दल सहित सभी बाधाओं का वीरतापूर्वक सामना करते हुए उन्होंने उपलब्ध सुक्ष्मा के अधीन नक्सलियों की ओर बढ़ा शुरू कर दिया। नक्सलियों ने एक बार दुबारा भारी गोलीबारी करके उन्हें रोकने का संकेन्द्रित प्रयास किया। पुलिस कर्मिकर्ताओं ने भी जबाबी गोलियां चलाई जिसके परिणामस्वरूप दो नक्सली मारे गए। मौजूदा स्थिति का लाभ उठाते हुए दोनों पुलिस दलों ने अपनी जान की गंभीर जोखिम की परवाह न करते हुए, नक्सलियों पर अद्यता साहस से हमला किया और उनमें से दस नक्सलियों को सशस्त्र गिरफ्तार कर लिया।

सूर्योदय के पश्चात् गहन तलाशी का काम शुरू किया गया और 6 नक्सलियों के शब और बड़ी मात्रा में स्त्र॑ और गोला-बारूद बरामद किए गए। इनमें 14 पुलिस राइफलें (जो नक्सलियों द्वारा बगाहा, सीतामढ़ी, मोतीहारी और रेल मुजफ्फरपुर जिलों के पुलिस कर्मियों से लूटी गई थी), 1449 जिन्दा राउंड्स और 2 जिन्दा बम शामिल थे। गिरफ्तार किए गए नक्सलियों में सीपीआई (माओवादी) का सब-जोनल कमाण्डर अतीश भी शामिल था, जिसने पूर्व में कई नक्सली कार्रवाइयां की थीं। पुलिस अधीक्षक, मोतीहारी और पुलिस महानिरीक्षक (ऑपरेशन) की सतर्कतापूर्ण योजना और अभियान चलाने के परिणामस्वरूप किसी भी नागरिक को कोई चोट पहुंचे बिना 10 कट्टर उग्रवादी गिरफ्तार किए गए और 6 मारे गए।

पुलिस अधिकारियों और कर्मियों ने अपने कर्तव्य के प्रति वचनबद्धता और निष्ठा प्रदर्शित की और अपनी जानों और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बगैर नक्सलियों के विरुद्ध अभूतपूर्व अभियान का सामने से नेतृत्व करके उच्च कोटि के साहस का प्रदर्शन किया।

अभियान स्थल से निम्नलिखित शस्त्र/गोलाबारूद बरामद किए गए:--

(1) मारे गए नक्सलियों के शब	06
(2) गिरफ्तार किए गए नक्सलवादी	10
(3) 7.62 एमएम की एसएलआर राइफलें	05
(4) .303 बोल्ट एक्शन राइफल	09
(5) देशी पिस्तौल	01

(6) 7.62 एमएम एसएलआर की खाली मैगजीन	11
(7) .303 एमएम बोल्ट एक्शन राइफल की खाली मैगजीन	11
(8) 7.62 एमएम जिन्दा राउंड्स	695
(9) .303 एमएम के जिन्दा राउंड्स	733
(10) 7.62 एमएम के खाली खोखे	56
(11) .303 एमएम के खाली खोखे	11
(12) 7.62 × 39 एमएम के खाली खोखे	32
(13) .303 एमएम गोलाबारूद के चार्जर क्लिप	68
(14) बाकी-टाकी सेट	02
(15) 03 बैटरी यार्च	01
(16) इलेक्ट्रॉनिक डेटोनेटर	01
(17) इलेक्ट्रॉनिक चार्जर	01
(18) लेजर माइन के लिए फ्लैश	01
(19) नकदी सहित पर्स-2000/- रुपये	

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री गणेश कुमार, पुलिस अधीक्षक, कालेश्वर पासवान, सब-डिवीजनल पुलिस अधिकारी, नीरज कुमार सिंह, उप पुलिस अधीक्षक, चन्द्र भूषण मिश्रा, उप निरीक्षक, ओम प्रकाश, उप निरीक्षक, धनराज कुमार, जूनियर कमाण्डो, धीरज थापा, जूनियर कमाण्डो, अजय कुमार चौधरी, जूनियर कमाण्डो, जय राम सिंह, जूनियर कमाण्डो, प्रकाश कुमार शर्मा, जूनियर कमाण्डो, अनिरुद्ध कुमार पंडित, कांस्टेबल और नन्दू राम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भूता भी दिनांक 14.03.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 45-प्रेज/2013-राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

नाम और रैंक	
सर्वश्री	
1. मर्यंक श्रीवास्तव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. नीलकण्ठ साहू उप पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 15 दिसम्बर, 2008 को नारायणपुर पुलिस को सूचना मिली कि नारायणपुर के अबुझ-माद पहाड़ी क्षेत्र के दुर्गम और टेढ़े-मेढ़े कुमनार और घोड़ागांव नामक ग्राम के निकट किसी बड़ी आतंकवादी घटना को अंजाम देने के लिए कोहकामेता दलम के सशस्त्र माओवादी बड़ी संख्या में इकट्ठे हो रहे हैं। इस सूचना के आधार पर, एएसपी श्री मर्यंक श्रीवास्तव और डीएसपी श्री नीलकण्ठ साहू (डीएसपी मुख्यालय) के नेतृत्व में डीईएफ और सीआरपीएफ के संयुक्त बल ने उसी रात घोड़ागांव के लिए कूच किया। दिनांक 16.12.2008 की सुबह घोड़ागांव के जंगल में पहुंच कर बल को तीन पार्टियों में बांटा गया – पार्टी-1 डीएसपी मुख्यालय, श्री एन. के. साहू के अधीन, पार्टी-2 एएसपी श्री श्रीवास्तव के अधीन और पार्टी-3 63 बटालियन सीआरपीएफ के डीसी श्री ललित यादव के अधीन बनाई गई। एएसपी श्रीवास्तव ने कार्य का बंटवारा किया और पार्टी कमाण्डरों को संक्षेप में ब्यौरे दिए। श्री साहू के नेतृत्व में पार्टी-1 को घोड़ागांव के पूर्व की ओर अवरोध (कट-ऑफ) पार्टी के रूप में भेजा गया और जबकि पार्टी-2 और पार्टी-3 को क्रमशः घोड़ागांव और कुमनार की घेराबंदी और तलाशी करनी थी। पार्टी-2 और पार्टी-3 तलाशी कर रही थी और प्रातः काल तक घोड़ागांव के पूर्व की ओर बढ़ती रही। पार्टी-1 ने दोनों अन्य पार्टियों को इसकी सूचना दी और लक्षित स्थान की ओर बढ़ी। माओवादियों ने पार्टी पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी किन्तु डीएसपी साहू ने अपने अन्य साथियों सहित उनकी ओर बढ़ते हुए बुद्धिमत्तपूर्वक जवाबी गोलीबारी की। डीएसपी साहू और एक विशेष पुलिस अधिकारी (गोपनीय सैनिक) माओवादियों के काफी निकट पहुंचे और अन्य सभी लोगों से आगे थे ताकि दोनों ओर की गोलियों को रोक सकें। इससे अन्यों ने गोलियां चलानी बंद कर दी। वे अपने जीवन की सुरक्षा की परवाह किये बैगर अभी भी आगे बढ़ते रहे और गोलियां चलाते रहे। उनके बहुत निकट एक ग्रेनेड फटा। इसी बीच, पार्टी-2 भी लक्षित स्थान के निकट पहुंच गई। टीले पर होने के कारण माओवादी लाभप्रद स्थिति में थे। एएसपी श्रीवास्तव ने उक्त स्थल और माओवादियों और पुलिस पार्टियों की अवस्थिति का पता लगाया और दूसरी ओर से उनकी घेराबंदी शुरू कर दी। माओवादियों के दूसरे ग्रुप ने पार्टी-2 पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। एएसपी श्रीवास्तव ने अदम्य साहस दर्शाया और अपने कुछ लोगों के साथ माओवादियों की ओर बढ़कर उन पर सीधा धावा बोल दिया। यद्यपि शत्रु उन पर अंधाधुंध गोलियां चला रहा था और गोलियां उनके ऊपर से गुजर रही थीं, तथापि अपनी जान की सुरक्षा की परवाह किये बिना वे साहसपूर्वक और चतुराई से आगे बढ़ते रहे। उन्होंने अपने लोगों को उनके पीछे आने के लिए प्रेरित किया। शीघ्र ही माओवादियों का संघर्ष जारी रखने का मनोबल टूट गया और उन्होंने पीछे हटना शुरू कर दिया। दूसरी ओर से पार्टी-3 भी वहां पहुंच गई। जब पार्टी-3 गोलीबारी के स्थान की ओर बढ़ रही थी, तब नक्सलियों ने 3 बारूदी सुरंगों में विस्फोट किया, डीसी ललित और कांस्टेबल कलबिन्द्र सिंह ने नक्सलियों को चुनौती दी और जबाबी गोलीबारी करते हुए उनकी ओर आगे बढ़ते रहे। तीनों पार्टियों की ओर से भारी गोलीबारी देखकर माओवादी घने जंगलों का लाभ उठाते हुए पहाड़ी की दूसरी ओर से नीचे उतरकर पीछे हट गए। क्षेत्र की तलाशी लेने पर, पुलिस ने वर्दीधारी माओवादियों के दो शब्द बरामद किए।

बरामदगी – पुलिस पार्टी ने एक मजल लोडिंग गन, एक आई.ई.डी., विस्फोटक पाउडर, 9 एमएम पिस्तौल, 06 जिन्दा राठंडस, एक ग्रेनेड, एक टार्च, एक रेडियो, सात फटाका बम, 50 मीटर बिजली का तार, 01 डेटेनेटर और अन्य अपराध संकेती सामग्रियां बरामद की।

इस मुठभेड़ में सर्वश्री मयंक श्रीवास्तव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और नीलकण्ठ साहू, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 16.12.2008 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव

राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 46-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

श्री धनेश्वर यादव	(मरणोपरांत)
कांस्टेबल	

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 21 अक्टूबर, 2010 को दो संयुक्त दल, जिनमें 38 बटालियन आई.टी.बी.पी और जिला पुलिस शामिल थी, छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र सीमा के निकट जिला राजनंदगांव के मानपुर पुलिस स्टेशन क्षेत्र में नक्सल-रोधी अभियान के लिए गए। पहले दल का नेतृत्व निरीक्षक एच. पी. नायक और दूसरे दल का नेतृत्व जिला पुलिस बल के निरीक्षक श्री संजय सिंह कर रहे थे। बाद में दिन के समय दोनों दल परवीडीह गांव में मिले और उन्होंने बुकमारका और सम्बलपुर के पहाड़ी और घने जंगली क्षेत्र में तलाशी अभियान शुरू किया। रात को, लगभग 10.00 बजे सम्बलपुर से लगभग 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित स्थान पर भारी शस्त्रों से लैस लगभग 40-50 नक्सलियों ने पुलिस पार्टी पर घात लगाई और उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

मुठभेड़ के दौरान कांस्टेबल धनेश्वर यादव ने अत्यधिक व्यक्तिगत साहस और रणनीतिक कुशाग्र बुद्धि का परिचय दिया। वे नक्सलियों की अवस्थिति के निकट गये और अपने व्यक्तिगत हथियार से गोलियाँ चलाकर नक्सलियों को प्रभावी ढंग से उलझा दिया। शत्रु की भारी गोलीबारी के समक्ष उनकी वीरतापूर्ण कार्रवाई ने अन्य जवानों को भी प्रेरित किया। सुरक्षा बलों की प्रभावी कार्रवाई ने नक्सलियों को भागने पर मजबूर कर दिया। निरीक्षक एच. पी. नायक के नेतृत्व में कांस्टेबल धनेश्वर यादव और अन्य जवानों ने भाग रहे नक्सलियों का पीछा किया। इस मुठभेड़ और नक्सलियों का पीछा करने के दौरान कांस्टेबल धनेश्वर यादव गंभीर रूप से घायल हो गए और राजनन्दगांव जाते हुए मार्ग में ही उनकी मृत्यु हो गई।

कांस्टेबल धनेश्वर यादव ने गंभीर खतरे में अनुकरणीय साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। उन्होंने कर्तव्य पालन के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री धनेश्वर यादव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 22.10.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 47-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

श्री नरेश कुमार	(मरणोपरांत)
कांस्टेबल	

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

17 और 18 मई, 2012 की मध्यरात्रि में श्री नरेश कुमार कांस्टेबल डीएचजी कांस्टेबल शंकर के साथ बुनकर चौक पर पिकेट ड्यूटी पर थे और भारत नगर पुलिस पुलिस स्टेशन के क्षेत्र में मोटर साइकिल संख्या डीएल-I एस एन-5993 पर गश्त लगा रहे थे। लगभग रात्रि 02.00 बजे वायरलेस सेट पर यह सूचना मिलने पर कि टाटा-407 में सवार 5-6 लोगों द्वारा पथराव किया जा रहा है, उन्होंने उस क्षेत्र में गश्त बढ़ा दी। लगभग 2.45 बजे वायरलेस सेट पर आगे यह सूचना मिलने पर कि उक्त टाटा-407 का पुलिस वाहन द्वारा पीछा किया जा रहा है और यह पुलिस स्टेशन, भारत नगर क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है, वे उक्त वाहन को रोकने के लिए डीएचजी कांस्टेबल के साथ बुनकर चौक पिकेट पर खड़े हो गए। इसी बीच वह टाटा-407 वाहन, जिसमें पीछे 5-6 लोग खड़े थे और 2-3 लोग ड्राइवर के कंबिन में थे, जे जे कालोनी वजीरपुर की ओर से तेजी से आया और पिकेट पार कर गया। उस वाहन का तीन पुलिस वाहनों द्वारा पीछा किया जा रहा था। उन्होंने भी डीएचजी कांस्टेबल सहित उक्त वाहन का पीछा करना शुरू कर दिया। टाटा-407 में सवार लोगों ने उन्हें पीछा न करने की चेतावनी दी। उन्हें डाराने की चेतावनी को नजरअंदाज करते हुए और अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए वे टाटा-407 से आगे निकल गए। उन्होंने चिल्लाकर पिकेट पर तैनात कर्मचारियों को बैरिकेड बंद करने और उस वाहन को रोकने के लिए कहा। इस पर टाटा-407 में सवार लोगों ने चिल्लाकर कहा कि वे उन्हें मार देंगे और उक्त वाहन के ड्राइवर ने उनकी मोटर साइकिल को टक्कर मार दी और उनके ऊपर वाहन चढ़ा दिया। उनकी वहाँ पर मौत हो गई।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उक्त टाटा-407 वाहन पंजीकरण संख्या की नम्बर प्लेट के बिना चलाया जा रहा था और इन अपराधियों ने के-ब्लॉक, शकूरपुर, दिल्ली के क्षेत्र में हो रहे एक विवाह समारोह में लोगों पर लोहे की छड़ी से हमला और पत्थरबाजी भी की थी। उत्तर-पश्चिम

जिला, दिल्ली के सुधाष प्लेस पुलिस स्टेशन की दो पीसीआर वैनों और एक ईआरवी द्वारा उनका पीछा किया जा रहा था।

कांस्टेबल नरेश कुमार ने अनुकरणीय साहस और उच्चकोटि के उत्तराधित्व का परिचय दिया और उन्होंने वाहन में यात्रा कर रहे गुंडों द्वारा बार-बार डरा जाने और ऐसा करने में अपनी जान को जोखिम के बावजूद उनका पीछा किया और देश की सेवा में अपना जीवन अर्पण कर दिया।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री नरेश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 18.05.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 48-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक	
सर्वश्री	
1. विधि कुमार बिरदी,	
पुलिस अधीक्षक	
2. हसीब-उर-रहमान,	
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक	
3. नूर-उल-हसन,	
उप पुलिस अधीक्षक	
4. अमजिद खान	
फालोअर	

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 14-15/07/2011 की मध्यवर्ती रात्रि में कुपवाड़ा की जिला पुलिस को मैदानपुरा के मकदम मोहल्ले में किसी गुलाम मोहम्मद मीर पुत्र गफ्कार मीर के घर में कुछ आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना मिली। लोलाब के उप पुलिस अधीक्षक ने पुलिस पार्टी और आर आर 18 के सैन्य दलों के साथ घर के आस-पास घेराबंदी कर दी। दिनांक 15.07.2011 की सुबह मकान में छिपे हुए आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी और घर में रहने वाले 4 लोगों को बंधक बना लिया। बंधकों (निवासियों) को बचाना बहुत कठिन हो गया क्योंकि आतंकवादियों ने सभी दिशाओं में भारी और अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी थीं और इसके साथ ही पुलिस बल जवाबी कार्रवाई नहीं कर पर रहे थे क्योंकि इससे नागरिकों की मृत्यु के रूप में संपार्श्वक क्षति हो सकती थी। बंधकों को बचाना और आस-पास रहने वाले नागरिकों को वहां से हटाना ही उस समय प्राथमिकता थी। श्री विधि कुमार बिरदी, एस. पी. कुपवाड़ा, श्री हसीब-उर-रहमान, ए.एस.पी. (आप.)

कुपवाड़ा और श्री नूर-उल-हसन, डी.एस.पी. (आप.), लोलाब ने अन्य बलों के परामर्श से बंधकों को बचाने की रणनीति तैयार की। इसके साथ ही आस-पास रहने वाले नागरिकों को वहां से हटा दिया गया। श्री विधि कुमार बिरदी, एस. पी. कुपवाड़ा, श्री नूर-उल-हसन, डी.एस.पी. (आप.) लोलाब के साथ बी पी बंकर में घर के बहुत नजदीक गए और आतंकवादियों को मुक्त करने के लिए मनाने की कोशिश की। आतंकवादियों को बंधकों को मुक्त करने के लिए कहा गया और साथ ही साथ भीतर के लोगों को घर से बाहर आने के लिए प्रोत्साहित किया गया। बी पी बंकर पर भारी गोलीबारी के कारण पार्टी पीछे हट गयी।

कुछ समय बाद, श्री विधि कुमार बिरदी और श्री नूर-उल-हसन कांस्टेबल मोह. अकबर और फालोअर अमजिद खान की सहायता से छोटे दल के रूप में भारी गोलीबारी में अपनी जान और सुरक्षा की परवाह किए बिना ही घर की पिछली ओर से घर के निकट चले गए ताकि वे भीतर के लोगों को बाहर आने के लिए प्रोत्साहित कर सकें। अन्ततः भीतर से सभी लोगों को घर के भूतल की खिड़की से खींचकर निकाल लिया गया और एक औरत ही अंदर रह गई क्योंकि आतंकवादियों ने पहली मंजिल से पुलिस पार्टी पर ग्रेनेड फैंकेने शुरू कर दिए और पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करते हुए पीछे हटकर सुरक्षित स्थान पर चले गए।

इसी बीच, आतंकवादियों का ध्यान हटाने के इरादे से आस-पास के मकानों से नागरिकों को हटाने पर जोर दिया जाने लगा। चूंकि आतंकवादी लगातार गोलियां चला रहे थे और आस-पास के घर सीधे उनकी गोलियों के धेर में थे, अतः अपनी जानों की परवाह किए बगैर श्री हसीब-उर-रहमान, ए.एस.पी. (आप.) कुपवाड़ा ने पुलिस पार्टी के साथ आस-पास के घरों में से नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालना शुरू कर दिया। अभियान के दौरान, श्री विधि कुमार बिरदी, एस. पी. कुपवाड़ा, श्री नूर-उल-हसन, कांस्टेबल मोह. अकबर और फालोअर अमजिद खान द्वारा पुनः प्रयास किया गया और आतंकवादियों द्वारा भारी गोलीबारी के बावजूद महिला को सफलतापूर्वक बचा लिया गया।

श्री विधि कुमार बिरदी, एस.पी. कुपवाड़ा की अगुवाई में श्री हसीब-उर-रहमान, ए.एस.पी. (आप.) कुपवाड़ा और श्री नूर-उल-हसन, डी.एस.पी. (आप.) लोलाब ने दूसरे बल द्वारा गोलीबारी को तब तक नियंत्रित किया और रोके रखा जब तक कि उस क्षेत्र को खाली कराने का काम पूरा नहीं कर लिया गया और इस प्रकार किसी नागरिक के हताहत होने/घायल होने का अवसर नहीं दिया गया। मकान के भीतर के निवासियों को बचाने और नागरिकों को वहां से हटाने के तुरंत बाद अभियान दल ने अधिकारियों के मार्गदर्शन में घर में फंसे आतंकवादियों के विरुद्ध आक्रामक कार्रवाई शुरू कर दी, जिसके परिणामस्वरूप पूरे दिन बंदूकें चलाई जाती रहीं, जिससे घर में आग लग गई। चूंकि आतंकवादी अभी भी घर के अंदर से रुक-रुक कर गोलियां चला रहे थे, अतः अभियान दिनांक 16.07.2011 तक जारी रहा। बाद में दिनांक 16.07.2011 की शाम को यह अभियान समाप्त हुआ। इस अभियान में घर के अंदर 5 आतंकवादी (एफ टी) मारे गए जिनकी पहचान कारी सैफुल्लाह (एलईटी), साकिब भाई (एलईटी), छोटा साद उर्फ छोटा कारी (एचयूएम) और उमेर उर्फ हाजिफ (जेर्झीएम) के रूप में की गई। उनके कब्जे से निम्नलिखित मात्रा में हथियार/बोलाबारूद बरामद किए गए :--

1. ए के-47	05
2. ए के-47 मैगजीन	21
3. यू बी जी एल	05
4. रेडियो सेट आई-काम	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री विधि कुमार बिरदी, पुलिस अधीक्षक, हसीब-उर-रहमान, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, नूर-उल-हसन, उप पुलिस अधीक्षक और अमजिद खान, फालोअर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 15.07.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 49-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

श्री वसीम अहमद
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26 मार्च, 2009 को उत्तर कश्मीर के आवासीय मकान, जो किसी कलाम-उ-दीन किसाना पुत्र फकीर अहमद किसाना निवासी हच मारगी विलगाम का था, में एक अति वांछित उग्रवादी की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना मिलने पर हंदवारा पुलिस ने 01-पारा (पी ए आर ए) और 06-आर आर की मदद से तेजी से एक टीम बनाई और उसे तीन अलग-अलग समूहों में बांटा। उप निरीक्षक वसीम अहमद की अगुवाई एक समूह ने उक्त मकान के निकट पहुंचने पर पाया कि लक्षित मकान के आस-पास के मकानों में कुछ नागरिक मौजूद हैं। वसीम अहमद, उप-निरीक्षक अपने दल सहित नागरिकों को उस स्थान से बचाने के लिए अनुकरणीय साहस के साथ आगे बढ़े। ज्योंही वसीम अहमद और उनके दल ने नागरिकों को वहां से निकालना शुरू किया, आतंकवादी ने उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, वसीम अहमद ने उच्चकोटि की सूझ-बूझ का परिचय दिया और अपनी कुशल रणनीति का उपयोग किया जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने लक्षित मकान से परिवार के सदस्यों को निकाल लिया और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर भेज दिया। इसके बाद, आतंकवादी को आतंकसमर्पण करने के लिए कहा गया जिसके लिए उसने इंकार कर दिया और इसके विपरीत उसने वसीम अहमद और उनके दल, जो असुरक्षित स्थान से उग्रवादी को चुनौती दे रहे थे, पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। वसीम अहमद अपनी उच्चकोटि की युद्ध रणनीति के परिणामस्वरूप आतंकवादी के अचानक किए गए हमले से अपने

आप को बचाने में सफल हुए और लेटे हुए उस पर जवाबी हमला किया। जवाबी गोलियां बहुत ही पेशेवर और कुशल ढंग से चलाई गई ताकि नागरिकों के जीवन और सम्पत्ति को किसी प्रकार की हानि न हो। गोलीबारी कई घण्टे तक जारी रही क्योंकि आतंकवादी अभियान दल पर लगातार गोली चलाता रहा और ग्रेनेड फेंकता रहा। अभियान दल के अन्य समूह लक्षित घर के बाहरी धेरे पर तैनात थे ताकि आतंकवादी उक्त स्थान से बचकर न भाग पाए। यह अंदाजा लगाने पर कि आतंकवादी के पास बड़ी मात्रा में गोलाबारूद है और मुठभेड़ रातभर चल सकती है जो अभियान दल के लिए घातक हो सकती है, उप-निरीक्षक वसीम अहमद जवाबी गोलियां चलाते हुए स्वेच्छा से लक्षित घर की ओर बढ़ने लगे और इसी बीच उग्रवादी ने भी उन पर अंधाधुंध गोलियां चलाई। किन्तु वसीम अहमद बड़ी बहादुरी और कर्मठता से घर के भीतर जाने में सफल हो गये और उन्होंने प्रभावी हमला किया जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादी मारा गया। बाद में उसकी पहचान मोहम्मद उमेर बाही पुत्र मोह. सुलीमान निवासी चक नं. 40/12 एल, तहसील चिका वाटनी, जिला साहीबाल, पाकिस्तान के एलईटी गुट के सदस्य के रूप में हुई। उक्त उग्रवादी राजवाड़ और रमहाल क्षेत्र में लम्बे समय से सक्रिय था और उसने उस क्षेत्र में लोगों और मुख्य धारा के राजनैतिक कार्यकर्ताओं में आतंक फैला रखा था। उस क्षेत्र के स्थानीय लोगों ने उसकी मृत्यु की बहुत सराहना की और अभियान में सामान्य रूप से हंदवारा पुलिस की ओर विशेष रूप से वसीम अहमद की भूमिका की भी प्रशंसा की गई।

की गई बारामदगियां:--

1. ए के-47 राइफल	01
2. ए के मैगजीन	01
3. ए के राउंड्स	20
4. पाऊच	01

इस मुठभेड़ में श्री वसीम अहमद, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 26.03.2009 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 50-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक
सर्व/श्री
1. मो. शफी मीर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक
2. राज कुमार, उप पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 15.02.2010 को, ग्राम थाकरपुरा कमोह कुलगाम में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना मिलने पर मो. शफी मीर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, कुलगाम और श्री राज कुमार, उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन), कुलगाम के पर्यवेक्षण में 9 आर आर और 18वीं बटालियन सीआरपीएफ की मदद से एक अभियान शुरू किया गया। तदनुसार, गांव में छिपे उग्रवादियों को बंदी बनाने/मारने के लिए समुचित रणनीतिक योजना के तहत पूरे क्षेत्र की घेराबंदी की गई। उस मकान का पता लगाना, जिसमें उग्रवादी छिपे थे और साथ ही आस-पास के घरों को कब्जे में लेना सबसे बड़ी चुनौती थी। लगभग 07:10 बजे जब लक्षित घर की तलाशी की जा रही थी, तब अभियान पार्टी पर अलग-अलग दिशाओं से भारी मात्रा में गोलियां बरसने लगीं। मो. शफी मीर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, कुलगाम और श्री राज कुमार, उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन), कुलगाम ने अभियान पार्टी को बड़े साहस से सम्भाला। कार्रवाई के दौरान एक उग्रवादी मुठभेड़ स्थल से बचकर भागने के लिए घर से बाहर निकला। तथापि, मो. शफी मीर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, कुलगाम ने उस आतंकवादी को लक्ष्य बनाने में बड़ी चौकसी दर्शायी और उसे वहाँ मार गिराया। आतंकवादी को मारने के बाद श्री राज कुमार, डीएसपी (आपरेशन), कुलगाम ने दूसरे आतंकवादी पर दबाव बनाया, जिसके फलस्वरूप वह भी घर से बाहर निकल आया और उक्त अधिकारी ने उसे निकट से गोली चलाकर मार गिराया। बाद में इन उग्रवादियों की पहचान मोह. अशरफ शेख उर्फ अशरफ मौलवी (जिला कमाण्डर) पुत्र गुलाम हसन शेख, निवासी रामपुरा कमोह और रुफ़ अहमद जभात उर्फ अबु सलीम पुत्र मोह. मकबूल भट निवासी रेडवानी कमोह के रूप में की गई, जो उनके आतंकी गतिविधियों में शामिल थे।

अशरफ मौलवी एलईटी गुट के जिला कमाण्डर के रूप में कार्य कर रहा था। उसे दो बार पीएसए के अधीन गिरफ्तार किया गया था किन्तु छूटने के बाद वह चुप नहीं बैठा और नए सिरे से कट्टर आतंकवादी के रूप में गुट में शामिल हो गया। उसने युवाओं को उग्रवाद में शामिल होने के लिए उकसाने में बड़ी भूमिका निभाई और गुलजार अहमद डार, पुत्र जलालुदीन डर, निवासी ब्राजलू को मारने के साथ-साथ दो अवसरों पर कमोह पुलिस स्टेशन पर गोलीबारी करने के लिए भी जिम्मेवार था। दोनों ही आतंकवादी किसी के जीवन अथवा सम्पत्ति को कोई संपर्किक हानि पहुंचाये बिना मार गिराए गए, जो मो. शफी मीर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं राज कुमार, उप पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व गुण और सूझबूझ का दॊयोतक है। आतंकवादियों से निम्नलिखित हथियार/गोला-बारूद बरामद किए गए :—

1. ए के 46 राफल	01
2. ए के 47 राइफल (के के)	01
3. मैगजीन	03
4. ए के 47 राउंड्स	50
5. ग्रेनेड	01

इस मुठभेड़ में मो. शफी मीर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और राज कुमार, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 15.02.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 51-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

नाम और रैंक

- मो. खुर्शीद वनी,
एसजी कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08.06.2010 को डी एच पुरा, कुलगाम के लाहानपठारी क्षेत्र के जंगलों में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना मिलने पर, एस ओ जी कुलगाम और 62 आर आर द्वारा एक अभियान शुरू किया गया। क्षेत्र में छिपे हुए आतंकवादियों को पकड़ने/उनका सफाया करने के लिए उचित रणनीतिक योजना के तहत पूरे क्षेत्र की घेराबंदी कर ली गई। अभियान दल के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती घने जंगलों में छिपे आतंकवादियों के स्थान का निर्धारण करने की थी सीओ 62 आर आर के साथ एस पी कुलगाम स्थल पर पहुंच गए। डिप्टी एस पी आपरेशन, कुलगाम की कमान में एक दल का गठन किया गया और उसे आतंकवादियों के स्थान का निर्धारण करने/छिपे हुए आतंकवादियों के स्थान का पता लगाने और आस-पास के जंगलों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने का कार्य सौंपा गया। अभियान दल को देखते ही आतंकवादियों ने जंगल के विभिन्न स्थानों से अंधाधुंध गोलीबारी करनी शुरू कर दी। तथापि, भारी गोलीबारी के बीच, एसओजी दल बी पी शील्ड की सहायता से उस जंगल की ओर बढ़ा, जहां से आतंकवादी गोलीबारी कर रहे थे। एस ओ जी दल का उस स्थान पर पहुंचने का प्रयास वास्तव में वीरतापूर्ण था। हमला दल ने लक्षित क्षेत्र को सफलतापूर्वक अपने कब्जे में ले लिया और समय बरबाद किए बिना लक्षित स्थान के आसपास के कुछ जंगलों को साफ कर दिया। यह कार्य अत्यंत तीव्र गति से और वास्तविक पेशेवरता प्रदर्शित करते हुए किया गया था और अंततः गोलीबारी की लड़ाई आंभ हो गई जो लगभग 02 घण्टे तक चली और इस गोलीबारी की लड़ाई में एच एम गुट का एक आतंकवादी नामतः फारुक अहमद डार उर्फ इशफाक पुत्र गलाम-उद-दीन डार निवासी बरमडार तहसील मोहोर मारा गया। उक्त आतंकवादी कुछ समय से जिला रियासी में सक्रिय था और बाद में छिपे-छिपे डी एच पुरा क्षेत्र में चला गया ताकि उक्त क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम दे सके।

एस ओ जी दल, विशेष रूप से एसजी कांस्टेबल मो. खुर्शीद वनी द्वारा प्रदर्शित पेशेवरता और उत्कृष्ट साहस सराहनीय था क्योंकि अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयास वास्तव में वीरतापूर्ण था। मिशन का पूरा होना इस अभियान की मुख्य विशेषता थी। यह

अभियान इस प्रकार चलाया गया कि इसमें जान माल की कोई भी क्षति नहीं हुई। निम्नलिखित हथियार एवं गोलाबारूद बरामद किए गए :--

1. ए के 56 राइफल	01
2. ए के मैगजीन	03
3. ए के गोलाबारूद	40 राउंड

इस मुठभेड़ में मो. खुर्शीद वनी, एस.जी. कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 08.06.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 52-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:--

नाम और रैंक

- श्री ऋषि कुमार
फालोअर

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

नारोल क्षेत्र में जेर्इएम के चीफ कमांडर अबू दाउद की मौजूदगी के बारे में विश्वसनीय सूचना प्राप्त होने पर, एक स्रोत को उसके छिपने के वास्तविक ठिकाने का पता लगाने के लिए भेजा गया। दिनांक 16.01.2010 को, उस भेजे गए स्रोत ने सूचित किया कि वांछित कमांडर शिंकठा में घूम रहा है। तदनुसार, डी आई जी और एस एस पी पुंछ के पर्यवेक्षण में एक संयुक्त तलाशी एवं नष्ट करने का अभियान शुरू किया गया और संदिग्ध क्षेत्र की घेराबंदी कर दी गई। दिनांक 17.01.2010 को प्रातः बेला में घर-घर जाकर तलाशी ली गई। इसी बीच, डिप्टी एस पी (आपरेशन) पुंछ के नेतृत्व वाले कमांडो ग्रुप की टुकड़ी भी तलाशी अभियान में शामिल हो गई। तलाशी अभियान दोपहर तक चलता रहा, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। अतः दल को पास के झरने पर कुछ समय तक आराम करने के लिए कहा गया। लगभग 15:00 बजे स्रोत मो. रजाक (कोड नाम) ने सूचित किया कि दाउद सेवानिवृत्त हेड कांस्टेबल मोत्र दीन के घर में मौजूद है। उक्त सिविलियन सैन्य दल को संदिग्ध मकान तक ले गया। एस पी ओ मकसूद अहमद और एस पी ओ मो. फारुक ने आतंकवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन इसके बदले उन पर अंधाधुंध गोलीबारी की गई और वे बाल-बाल बच गए। भारी गोलीबारी के बावजूद, दोनों एस जी ओ ने घुटनों के बल रेंगते हुए गोलीबारी की दिशा में आगे बढ़ना जारी रखा। आतंकवादी मवेशी के शेड में छिपा हुआ था और उसकी एक खिड़की से रुक-रुक कर गोलीबारी कर रहा था। इसके अतिरिक्त, उसने छापामार दल पर ग्रेनेड भी फेंका। दोनों एस पी ओ अपनी जान की परवाह किए बिना खिड़की की ओर

आगे बढ़े और एक के बाद एक ग्रेनेड फेंके। विस्फोट के बाद कुछ देर तक वातावरण शांत हो गया। इसी बीच डिप्टी एस पी (आपरेशन) और फालोअर ऋषि कुमार, जो मवेशी की शेड के दरवाजे के पास खड़े थे, ने एक आतंकवादी को घायल होने की वजह से लड़खड़ा कर चलते हुए और बचकर भागने का प्रयास करते हुए देखा। उन्हें देखते ही, आतंकवादी ने उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस पर उन दोनों ने अपनी जान की परवाह किए बिना भाग रहे आतंकवादी का 10-15 मीटर तक पीछा किया तथा उस पर ताबड़तोड़ गोलीबारी की ओर आतंकवादी मारा गया। मारे गए आतंकवादी की पहचान जेर्इएम के चीफ कमांडर अबू दाउद के रूप में की गई।

की गई बरामदगी:--

1. ए के 56 राइफल	01
2. ए के मैगजीन	03
3. ए के गोलाबारूद	61 राउंड
4. चीन में निर्मित ग्रेनेड	2 (वहीं पर नष्ट कर दिया गया)
5. नोकिया मोबाइल सेट	01
6. सिम	07
7. रेडियो सेट आईकाम	01 (क्षतिग्रस्त)
8. पिस्टॉल के राउंड	10
9. 7.62 एमएम. पिस्टल के राउंड	02
10. भारतीय करेंसी	1,400/- रु. पर्स में और 3,837/- रु. गोलियों से फटे हुए।

इस मुठभेड़ में श्री ऋषि कुमार, फालोअर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 17.01.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 53-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:--

नाम और रैंक

- श्री मोरिफथ हुसैन, (मरणोपरांत)
एसजी कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02.06.2011 को, गांव सीर रोड सोपोर में आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर, सोपोर पुलिस/52 आर आर द्वारा एक अभियान की योजना बनाई गई/शुरू की गई। लक्षित स्थान पर पहुंचने पर, क्षेत्र की घेराबंदी कर दी गई और आतंकवादियों की मौजूदगी की पुष्टि की गई। सेना 52 आर आर/सोपोर पुलिस की संयुक्त टुकड़ियों की तैनाती करके घेराबंदी को मजबूत कर दिया गया और घेराबंदी से आतंकवादियों के बचकर निकलने का कोई रास्ता नहीं छोड़ा गया। घेराबंदी की कवायद और तलाशी अभियान के दौरान, एक मकान से, जो घेराबंदी और तलाशी दल की निगरानी में था, अचानक तलाशी दल पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी गई, जिससे लक्षित मकान और इसके आस-पास के मकानों से सिविलियरों को सुरक्षित बाहर निकालने का कार्य बहुत कठिन हो गया एसजी कांस्टेबल मोरिफथ हुसैन के साथ तत्कालीन एसपीपीडी सोपोर की अगुवाई में जम्मू-कश्मीर पुलिस का एक छोटा सा दल इस कार्य के लिए स्वेच्छा से आगे आया। जम्मू-कश्मीर पुलिस के बचाव दल ने अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालकर लक्षित मकान तथा आस-पास के मकानों के अन्दर फंसे सभी सिविलियरों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। सम्पूर्ण बचाव अभियान के दौरान, खूंखार आतंकवादियों ने सामान्य रूप से बचाव दल पर और विशेष रूप से श्री मोरिफथ हुसैन एस.जी. कांस्टेबल पर अंधाधुंध गोलीबारी करना जारी रखा। तथापि, अत्यधिक सतर्कता और सावधानी के साथ तथा उच्च पेशेवरता प्रदर्शित करते हुए, सभी सिविलियरों को सफलतापूर्वक सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। इस कवायद के तुरंत बाद, संयुक्त अभियान दल ने फंसे हुए आतंकवादियों पर हमला बोल दिया, जिससे लम्बी गोलीबारी की लड़ाई शुरू हो गई। चूंकि आतंकवादियों के पास भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद थे, इसलिए वे अभियान दल पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे। आतंकवादियों के पास अधिक मात्रा में हथियार का अन्दाजा लगाकर सामान्य रूप से अभियान दल और विशेष रूप से श्री मोरिफथ हुसैन ने अपने मनोबल को ऊंचा बनाए रखा और अपनी अटल जवाबी गोलीबारी से आतंकवादियों पर धावा बोल दिया, जिसके परिणामस्वरूप अन्ततः एलईटी गुट के तीन खूंखार शीर्ष आतंकवादी मारे गए जिनकी पहचान बाद में एफ टी अब्दुल्ला बाबर निवासी पाक, फैजल अहमद भट उर्फ गजली पुत्र गुलाम हसन भट निवासी बगत बटपुरा सोपोर और गुलाम नबी डार पुत्र मो. अयूब डार निवासी नसीमबाग सीर रोड सोपोर के रूप में की गई। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन सोपोर में एक मामला, एफ आई सं. 146/2011, आर पी सी की धारा 307 तथा आयुध 1 अधिनियम की धारा 7/25 के तहत दर्ज है। अभियान के दौरान बरामद किए हथियारों एवं गोलाबारूद में 03 एके-47 राइफलें (क्षतिग्रस्त), 06 एके मैगजीनें (क्षतिग्रस्त), 55 ए के राउंड, 03 आर पी जी, 01 मैट्रिक्स शीट और 02 मोबाइल फोन शामिल हैं।

इस सम्पूर्ण अभियान में, श्री मोरिफथ हुसैन, एस जी कांस्टेबल ने बहादुरी/मैत्री भाव की विशिष्ट भूमिका निभाई और सिविलियरों का सुरक्षित बाहर निकाला जाना सुनिश्चित किया। अधिकारी द्वारा प्रदर्शित निःस्वार्थ कर्तव्य निष्ठा और अद्वितीय साहस के परिणामस्वरूप तीन खूंखार आतंकवादी मारे गए। तथापि, उक्त अधिकारी बाद में पुलिस स्टेशन सोपोर में आतंकवादियों द्वारा किए गए बारूदी सुरंग के विस्फोट में दिनांक 06.07.2011 को शहीद हो गए। इस आशय का एस मामलों, एफ आई आर सं. 182/2011 पुलिस स्टेशन सोपोर में दर्ज है।

इस मुठभेड़ में स्वर्णीय श्री मोरिफथ हुसैन, एसजी कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 02.06.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 54-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सर्वर प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

1. शौकत अहमद,
एसजी कांस्टेबल
2. सैयद गौहर,
कांस्टेबल
3. मुनीर अहमद,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

हामला कृमहोरा के जंगलों (तहसील हंदवाड़ा, जिला कुपवाड़ा) में आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में एस ओ जी हंदवाड़ा द्वारा जुटाई गई विशिष्ट जानकारी के आधार पर, एस ओ जी हंदवाड़ा द्वारा 21 आर आर की सहायता से एक अभियान की योजना बनाई गई/कार्यान्वित की गई। संयुक्त अभियान दलों द्वारा लक्षित स्थान की समुचित रूप से घेराबंदी की गई और 15 जून 2011 की शाम को छिपे हुए आतंकवादियों के साथ सम्पर्क की उस समय पुष्टि हो गई जब आतंकवादियों ने घेराबंदी को तोड़ने का प्रयास किया और पुलिस दल, जिसमें एस.जी. कांस्टेबल शौकत अहमद, कांस्टेबल सैयद गौहर, 7वीं बटालियन, कांस्टेबल मुनीर अहमद शामिल थे पर गोलियों की बौछार कर दी। पुलिस दल ने गोलीबारी का प्रभावी रूप से जवाब दिया और आतंकवादियों को घेराबंदी को तोड़ने और स्थल से भागने का कोई मौका नहीं दिया। विद्रोह-रोधी अभियानों में लड़ाई का अच्छा कौशल होने की वजह से ये पुलिस कर्मी स्वेच्छा से आगे आए और इन्होंने आतंकवादियों के छिपने के स्थान की ओर आगे बढ़ना शुरू कर दिया तथा उन पर बड़े पैमाने पर हमला कर दिया जिसके परिणामस्वरूप एक आतंकवादी उसी स्थान पर मारा गया। दूसरे आतंकवादी के पास अभी भी काफी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद था और उसने घेराबंदी को तोड़ने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस अधिकारियों ने उसे गोलीबारी में उलझा दिया और अन्ततः वह मारा गया। बाद में, आतंकवादियों की पहचान अबू जिबार उर्फ आमित निवासी पाक डिवी, नार्थ कश्मीर के एलईटी कमांडर और नवीद निवासी पाकिस्तान एलईटी के रूप में की गई।

मारे गए दोनों आतंकवादी पुलिस जिला हंदवाड़ा के राजवाड़, रमहात, काजियाबाद, मावर क्षेत्रों में काफी लम्बे अरसे से सक्रिय थे और उस क्षेत्र

के लोगों तथा मुख्य धारा के राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच आतंक फैला रखा था। ये आतंकवादी क्षेत्र में विभिन्न विद्रोही गतिविधियों में संलिप्त थे तथा अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों, सुरक्षा बलों और पुलिस एजेंसियों के लिए बहुत बड़ा खतरा बने हुए थे एवं युवाओं को आतंकवादी काड़ों में शामिल होने के लिए भी प्रेरित कर रहे थे।

निम्नलिखित हथियार/गोलीबारूद/अन्य सामग्रियां बरामद की गई :-	
1. ए के 47 राइफल	02
2. ए के मैगजीन	08 (01 क्षतिग्रस्त)
3. ए के राउंड	209
4. चीन में निर्मित ग्रेनेड	02
5. पाउच	02
6. भारतीय करेंसी	2,020/- रु.
7. वायरलेस सेट	01 (क्षतिग्रस्त)

इस मुठभेड़ में सर्वश्री शौकत अहमद, एस.जी. कांस्टेबल, सैयद गौहर, कांस्टेबल और मुनीर अहमद, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 15.06.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 55-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:--

नाम और रैंक

1. श्री स्टैंजिन नारबू,	(मरणोपरांत)
उप निरीक्षक	

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05 अप्रैल, 2011 को अवन्तीपुरा पुलिस को ग्राम डाडसर में जाविद अहमद शेख पुत्र मोहम्मद अकबर शेख के मकान में एच एम के जिला कमांडर सजद अहमद डार उर्फ/आमिर/बली/मोलवी मुत्र गुलाम मोहिं-उ-दीन डार की मौजूदगी के संबंध में विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। 42 आर आर के साथ मिलकर अभियान की योजना बनाई गई और उक्त मकान के चारों ओर घेराबंदी कर ली गई। बाहरी घेराबंदी 180 एवं 185 सी आर पी एफ की सहायता से की गई। निरीक्षक तारिक अहमद एन जी ओ एस एच ओ अवन्तीपुरा की अगुवाई में पुलिस और आर आर का एक संयुक्त दल मकान में दखल देने के लिए गठित किया गया। दल के अन्य सदस्यों में उप निरीक्षक स्टैंजिन नारबू, उप निरीक्षक नाजिर, कांस्टेबल अशोक सिंह, कांस्टेबल बिक्रम सिंह एस ओ जी ट्राल, कांस्टेबल नाजिर अहमद, 05 एस पी और 42 आर आर के 03 सेना कार्मिक

शामिल थे, जिन्होंने तलाशी के लिए मकान पर धावा बोल दिया, किन्तु आतंकवादी कमांडर नहीं मिला क्योंकि वह बाथरूम में छिपा हुआ था। छिपे हुए आतंकवादी ने तलाशी अभियान दल पर गोलीबारी कर दी जिससे उप निरीक्षक स्टैंजिन नारबू और एक जवान अमरजीत सिंह घायल हो गए। शेष पुलिस दल ने मकान के दो अलग-अलग कमरों में तत्काल पोजीशन ले ली। इसी बीच, आतंकवादी छिपने के स्थान से बाहर आया और भागने का प्रयास किया, लेकिन घायल उप निरीक्षक स्टैंजिन नारबू ने बहादुरी के साथ उस पर गोली चला दी जिससे आतंकवादी घायल हो गया। बाद में उप निरीक्षक स्टैंजिन नारबू और आर. आर. के अमरजीत सिंह ने घायल होने की बजह से दम तोड़ दिया। उप निरीक्षक नाजिर, कांस्टेबल अशोक सिंह, कांस्टेबल बिक्रम सिंह एस.ओ.जी. ट्राल, कांस्टेबल नाजिर अहमद, 05 एस ओ पी ने आतंकवादी को गोलीबारी में उलझा रखा। आतंकवादी ने अंधार्घुंघ गोलीबारी की, ग्रेनेड फैंके और लक्षित मकान से पास के सरसों के खेतों में भागने का प्रयास किया।

उत्कृष्ट साहस, पेशेवर गुणों और विद्रोह-रोधी तलाशी अभियानों में पूर्व अनुभव का प्रदर्शन करते हुए, संयुक्त तलाशी दल के सदस्यों ने आतंकवादी पर गोलीबारी की और उसे उसी स्थान पर मार गिराया। मुठभेड़ के दौरान, मेजर ताशी वाग्याल और एसपीओ शमीम अहमद घायल हो गए। मारा गया आतंकवादी एच एम गुट के “क” श्रेणी का था और पिछले 06 वर्षों से ट्राल क्षेत्र में सक्रिय था। वह क्षेत्र में एच एम गुट की कमान संभाल रहा था और अनेक विद्रोही गतिविधियों/सिविलियों की हत्या में शामिल था। उक्त आतंकवादी के मारे जाने से आम जनता ने राहत की सांस ली।

की गई बरामदगी :--

1. ए के राइफल	01
2. ए के 47 की मैगजीन	04 (03 क्षतिग्रस्त)
3. ए के गोलीबारूद	58 राउंड
4. डेटोनेटर	03
5. मोबाइल बैटरी	04
6. पाउच	01
7. पैड सहित सील	एक-एक
8. कटर	01
9. भारतीय करेंसी	35,580/- रु. (3,230/- रु. क्षतिग्रस्त)

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री स्टैंजिन नारबू, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 05.04.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 56—प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

नाम और रैंक

1. श्री दलेर सिंह, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 30.09.2010 को, गंव अखल में आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में गांदरबल पुलिस द्वारा तैयार की गई विशिष्ट सूचना के आधार पर श्री संजय भगत, उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन्स), गांदरबल की कमान में उस क्षेत्र में सेना एवं पुलिस का एक संयुक्त अभियान चलाया गया। जहां, सेना ने बाहरी घेराबंदी की, वहां लक्षित घर को पुलिस द्वारा सील कर दिया गया और भागने के सभी रास्ते बंद कर दिए गए। सार्जेंट गुलाम मोहम्मद डार, कांस्टेबल ऑंकार सिंह, कांस्टेबल मोहिंदर सिंह और कांस्टेबल दलेर सिंह के पुलिस दल ने जब घर में बुसने की कोशिश की, तो आतंकवादियों ने, घेराबंदी को तोड़ कर भागने के लिए आगे बढ़ रहे पुलिस दल पर अंधाधूंध गोलीबारी कर दी। सभी अधिकारियों ने अपनी सूझ-बूझ एवं अदम्य साहस का परिचय देते हुए आतंकवादियों को बचकर भागने से रोकने के लिए उन्हें उलझाए रखा। इसी बीच एक आतंकवादी ने बाहर आकर लक्षित मकान की चारदीवारी की आड़ लेकर सिपाही दलेर सिंह पर गोलियां चला दी और उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया। तथापि, घायल होने के बावजूद कांस्टेबल दलेर सिंह ने अपने कर्तव्य के प्रति उच्च स्तर की निष्ठा के साथ उस आतंकवादी के ऊपर गोली दाग कर उसे घायल कर दिया, जिसमें श्री संजय भगत उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन्स), सार्जेंट गुलाम मोहम्मद डार, कांस्टेबल ऑंकार सिंह और कांस्टेबल मोहिंदर सिंह के पुलिस दल ने सहायतार्थ गोलीबारी करके उनका साथ दिया। तथापि, श्री संजय भगत, उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन्स) के आगे बढ़ने पर, जिन्होंने अपनी जान को जोखिम में डालकर बेहद नजदीक से आतंकवादी के ऊपर निशाना साधा, इसी के बाद हुई मुठभेड़ में वह आतंकवादी मारा गया। तथापि, कांस्टेबल दलेर सिंह की भी घायल होने की वजह से मृत्यु हो गई।

श्री संजय भगत, उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन्स), गांदरबल की कमान के अधीन उपर्युक्त पुलिस कार्मिकों ने सेना की प्रभावी कवरिंग गोलीबारी का लाभ उठाते हुए पुनः उस लक्षित घर की ओर बढ़ना शुरू किया, जहां से आतंकवादी आगे बढ़ रहे दल पर निरंतर गोलियां दाग रहे थे। सार्जेंट गुलाम मोहम्मद डार, कांस्टेबल ऑंकार कांस्टेबल मोहिंदर सिंह पूरब की तरफ से धान के खेतों में रेंगते हुए आगे बढ़ते रहे और अपने ऊपर हो रही गोलियों की बौछार के बावजूद उस घर के काफी नजदीक पहुंच गए। आतंकवादियों ने घर के भीतर बने कंर्कीट के बाथरूम से गोलीबारी जारी रखी। श्री संजय भगत, उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन्स) ने अन्य पुलिस अधिकारियों के कवर फायर के साथ बाथरूम से आतंकवादियों को बाहर निकालने के लिए वहां हथगोला फेंका। वहां से बाहर निकलते हुए आतंकवादियों ने पुलिस दल की ओर निशाना साधते हुए भारी गोलीबारी की जिसमें कांस्टेबल ऑंकार सिंह घायल हो गए। श्री संजय भगत, उप पुलिस अधीक्षक (आपरेशन्स), गांदरबल ने उच्च स्तर का बंधुत्व एवं नेतृत्व प्रदर्शित करते हुए घटना

स्थल से अपने घायल सहकर्मी को बाहर निकाला और पुलिस पार्टी के साथ मिलकर प्रभावी गोलीबारी में आतंकवादियों को उलझाकर उन्हें मार गिराया। लश्कर-ए-तैयबा संगठन के दोनों मारे गए पाकिस्तानी आतंकवादियों की बाद में (1) हाफिज़ ज़ब्बार तथा (2) आमिर के रूप में पहचान हुई। मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित मात्रा में हथियार एवं गोलीबारूद बरामद हुए:—

1. ए. के. राइफल-03
2. ए. के. मैगजीन-03
3. ए. के. राउंड-43
4. पाउच-01
5. यू.बी.जी.एल-01
6. यू.बी.जी.एल ग्रेनेड-01

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री दलेर सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 30.09.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 57—प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

नाम और रैंक

1. श्री गुलाम हसन गुज्जर, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बागहट बाटपोरा सोपोर में एक आतंकवादी की मौजूदगी के संबंध में एक खास सूचना के प्राप्त होने पर दिनांक 21.06.2010 को सोपोर पुलिस ने 22 आर आर की सहायता से कार्रवाई की योजना बनाई और लक्षित स्थान पर पहुंच गई। 22 आर आर की टुकड़ी के साथ मिलकर एस पी पी डी सोपोर की कमान के अधीन पुलिस पार्टी ने उस क्षेत्र की घेराबंदी करके तलाशी अभियान चलाया। तलाशी दल का नेतृत्व कांस्टेबल गुलाम हसन करते हुए कि उपरोक्त पुलिस अधिकारी और उनके सहयोगी छिपने के स्थान की ओर बढ़ रहे हैं, आतंकवादी ने गुलाम हसन गुज्जर, कांस्टेबल और उनके सहयोगियों के ऊपर गोलियों की बौछार कर दी। गोलीबारी का जवाब देने से पहले कांस्टेबल गुलाम हसन ने वहां फंसे हुए नागारिकों को सुरक्षित बाहर निकालने के कार्य में लग गए और इस कवायद में आतंकवादी ने गुलाम हसन गुज्जर के ऊपर बार-बार गोली चलाई,

लेकिन गुलाम हसन गुज्जर उच्च स्तर की बंधुत्व भावना को दर्शाते हुए गोलियों की बौद्धार के बीच मुठभेड़ स्थल से सभी नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। बचाव की कवायद के फौरन बाद कांस्टेबल गुलाम हसन ने आगे बढ़ कर अपने दल का नेतृत्व करते हुए बेहद नजदीक से गोलीबारी का जवाब दिया, जिससे वहाँ भारी गोलीबारी हुई और उसके परिणामस्वरूप आतंकवादी मारा गया, जिसकी बाद में लशकर-ए-तैयबा संगठन से जुड़े पी.ओ.के. निवासी जुबैर उमर के रूप में पहचान हुई। गोलीबारी के दौरान नागरिकों को बचाने की प्रक्रिया में कांस्टेबल गुलाम हसन को कई गोलियाँ लगीं और अत्यधिक खून बह जाने के कारण वे शहीद हो गए। इस संबंध में पुलिस स्टेशन सोपोर में धारा 307, 7/27 आई ए के अधीन प्राथमिकी संख्या 286/2010 दर्ज है। मुठभेड़ स्थल से हथियार एवं गोलाबारूद बरामद किए गए।

बरामदगी:-

1. ए. के.-47-1
2. ए. के.-47 मैगजीन-02
3. ए. के.-47 राउंड-10
4. पिस्टौल-01
5. पिस्टौल मैगजीन-01
6. मोबाइल फोन-01
7. मैट्रिक्स शीट-02

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री गुलाम हसन गुज्जर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भूता भी दिनांक 21.06.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 58-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सर्वोच्च प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. युगल मन्हास, (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक
2. विवेक गुप्ता, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक
3. सिकंदर हुसैन, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
फॉलोअर

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन, मैंदर के क्षेत्र में बेरी राख (छजला गांव) में, जहाँ कि घना जंगल और कांटेदार झाड़ियाँ हैं और बड़ा क्षेत्र है, कुछ आतंकवादियों के छिपे होने के संबंध में 8 जुलाई, 2010 की रिपोर्ट पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, युगल मन्हास और एसडीपीओ, मैंदर विवेक गुप्ता, आईपीएस ने एसपीओ मोहम्मद यासीन और एसपीओ रोहित शर्मा को वहाँ के स्थानीय निवासी होने के कारण उनके छिपने के वास्तविक ठिकाने का पता लगाने के लिए भेजा। उस स्थान की सफाई करना एक कठिन कार्य था। समन्वित प्रयासों एवं स्थानीय लोगों के साथ सम्पर्क के पश्चात् दिनांक 13.07.2010 को इस कार्य के लिए भेजे गए दोनों एसपीओ ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, पुंछ और एसडीपीओ, मैंदर को राख के पूरब की ओर घनी झाड़ियों में कुछ आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना दी। तदनुसार, इस सूचना को एनसीआई के साथ साझा किया गया और दिनांक 13.07.2010 को एक संयुक्त तलाशी अभियान शुरू किया गया। पुलिस के तलाशी दल को अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, पुंछ, एसडीपीओ, मैंदर और उप पुलिस अधीक्षक (प्रोब) प्रदीप सिंह के नेतृत्व में तीन दस्तों में बांटा गया। एसडीपीओ, मैंदर के नेतृत्व वाले दस्ते ने पश्चिम की ओर से धेराबंदी की, जबकि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व वाले दस्ते को पूरब की ओर से धेराबंदी करनी थी। इसी प्रकार, उप पुलिस अधीक्षक (प्रोब) के नेतृत्व वाले दस्ते को नीचे की ओर से, अर्थात् नाले के किनारे से आगे बढ़ना था। वह क्षेत्र काफी घना और कम ऊँचाई वाली कंटीली झाड़ियों से भरा हुआ था। आगे बढ़ना बेहद कठिन था। पुलिस के जस्ते को विवश होकर, झुक कर और लेटकर आगे बढ़ना पड़ रहा था। वह स्थान फिसलन वाला था और जवानों को झाड़ियों की कांटेदार शाखाओं को पकड़ कर संतुलन बनाना था। तलाशी अभियान दोपहर में शुरू हुआ। जब एसडीपीओ के नेतृत्व वाला दल पश्चिम से पूरब की ओर बढ़ रहा था, तभी लगभग 17.30 बजे अचानक आतंकवादियों ने पास के ही स्थान से गोलीबारी कर दी और हथगोले फेंके, जोकि काफी हानिकारक साबित हुआ, क्योंकि इसमें सेना के दो अधिकारी एवं एसपीओ मोहम्मद यासीन सहित पांच अन्य रैंक के अधिकारी मामूली एवं गंभीर रूप से घायल हो गए। इसमें गंभीर रूप से घायल हुए मेजर अजीत कुमार थिंगे की मृत्यु हो गई। गोलीबारी का जवाब दिया गया। जल्द ही वहाँ युद्ध जैसी स्थिति बन गई। भारी गोलीबारी एवं दुर्गम भू-भाग के बावजूद यह जस्ता आगे बढ़ने से हिचका नहीं। अचानक ही एसडीपीओ, मैंदर की नजर सेना के एक जवान पर पड़ी, जिसके शरीर से काफी खून बह रहा था। वे उस जवान के पास गए और तुरंत एसपीओ रोहित शर्मा और एसपीओ मोहम्मद यासीन को उस घायल जवान को चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने के लिए सुरक्षित स्थान पर ले जाने का आदेश दिया। एसपीओ रोहित शर्मा और एसपीओ मोहम्मद यासीन ने जोकि भारी गोलीबारी के बीच स्वयं घायल हो गए थे, अपनी जान की परवाह किए बगैर उस घायल जवान को वहाँ से उठाया और वहाँ से बाहर निकालने के लिए सुरक्षित स्थान पर ले गए। हालांकि दोनों और से गोलीबारी जारी रही, फिर भी कुछ आतंकवादी वहाँ से भाग निकले। चूंकि इस बात की आशंका थी कि वहाँ अभी भी कुछ आतंकवादी फंसे हुए हैं इसलिए धेराबंदी को कायम रखा गया। जैसा कि अनुमान था, आतंकवादियों ने दिनांक 14.07.2010 को तालाशी दल के कार्मिकों पर गोलीबारी जारी रखी, जोकि देर रात तक जारी रही। दिनांक 15.07.2010 को रुक-रुक कर गोलीबारी होती रही। सबैरे झाड़ियों में छिपकर रुक-रुक कर गोली

चला रहे एक आतंकवादी को एसपीओ मोहम्मद यासीन और एसपीओ रोहित शर्मा ने देख लिया और उन्होंने एसडीपीओ, मैंटर को इसकी सूचना दे दी। बगैर समय नष्ट किए एसडीपीओ अपने साथ एसपीओ मोहम्मद यासीन और एसपीओ रोहित शर्मा को लेकर आगे बढ़े और उस आतंकवादी को मार गिराया, जिसे संयुक्त दल द्वारा पूरी रात उलझा कर रखा गया था।

जैसे ही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व वाले दल ने पूरब से पश्चिम की ओर नजदीक बढ़ना शुरू किया, एक अन्य आतंकवादी ने जोकि तब तक दूसरी झाड़ियों में छिप गया था, आगे बढ़ रहे दल पर हथगोला फेंका जिसमें अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के रक्षक मामूली रूप से घायल हो गए और उस आतंकवादी ने गांव छजला के एक आबादी वाले मोहल्ले के निकट आश्रय ले लिया। लेकिन इसके बावजूद, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और उनके दल ने अपनी सूझबूझ को खोए बगैर घेराबंदी को और कस दिया। उसी बीच अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और उनके दल द्वारा यह भी सुनिश्चित किया गया कि नागरिकों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जाए। अब जबकि तलाशी दल घेराबंदी को छोटा करता जा रहा था, तभी उस आतंकवादी ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व वाले तलाशी दल पर फिर से हथगोला फेंका और अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा। उस आतंकवादी के स्थान पर पता लगाना बेहद मुश्किल था। बहादुरी से आगे बढ़ते हुए कांस्टेबल बदर दीन और फॉलोअर सिंकंदर हुसैन की सहायता से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने आतंकवादी को उस समय मार गिराया जब वह गोली चलाते हुए दूसरी झाड़ियों में भाग रहा था। दोनों आतंकवादियों के मारे जाने के बाद आतंकवादियों की ओर से कोई प्रतिकारात्मक कार्रवाई नहीं हुई। अतः उस क्षेत्र की तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान हथियारों, गोलाबारूद एवं वायरलेस सेट के साथ मारे गए दोनों आतंकवादियों के शव बरामद किए गए। यह अभियान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और एसडीपीओ, मैंटर द्वारा अपने दल के नेतृत्व के दौरान, उनके द्वारा दिखाई गई दूरदर्शिता और उनके निजी सुरक्षा कर्मियों के घायल होने के बावजूद जवाबी कार्रवाई के दौरान जवानों को पर्याप्त नैतिक प्रोत्साहन देते रहने के कारण सफल हुआ। जहां एसडीपीओ ने न सिर्फ अच्छा नेतृत्व प्रदान किया, बल्कि एक घायल जवान को मुठभेड़ स्थल से बाहर निकाल कर उसकी जान बचाई, वहीं एसपीओ मोहम्मद यासीन और एसपीओ रोहित शर्मा ने अपनी जान को जोखिम में डालकर आतंकवादियों के छिपने के वास्तविक ठिकाने का पता लगाया और भारी गोलीबारी के बीच सेना के जवान को वहां से उठाकर सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया। दूसरी ओर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, कांस्टेबल बदर दीन और फॉलोअर सिंकंदर हुसैन ने हथगोले के आक्रमण से घायल होने के बावजूद अपनी सूझ-बूझ नहीं खोई और मुठभेड़ स्थल से नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के अलावा भाग रहे आतंकवादियों के स्थान का पता लगाकर उन्हें मार गिराया। इस कार्रवाई में दो एके-47 राइफलें, ए.के.-47 की छह मैगजीनें, 10,000/- रुपये की भारतीय मुद्रा, दो धार्मिक पुस्तकें और दो मैट्रिक शीटें बरामद की गईं।

इस मुठभेड़ में श्री युगल मन्हास, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, श्री विवेक गुप्ता, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री सिकंदर हुसैन, फॉलोअर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 15.07.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 59-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. अजहर बशीर,
उप पुलिस अधीक्षक
2. मोहम्मद इलियास,
उप निरीक्षक
3. मोहम्मद अयाज़
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

दिनांक 15.04.2010 को फैयाज़ अहमद शाह उर्फ फैयाज़ पीर एच एम संगठन का बटालियन कमांडर, पुत्र मोहम्मद अकबर, निवासी-सांगेरवानी और अब्दुल रशीद खान, उर्फ ओसामा, पुत्र-अब्दुल क्यूम, निवासी-सोनबारी कोकेरनाग अनन्तनाग नामक दो आतंकवादियों द्वारा बेस कैंप का स्थान केलर के जंगल के ऊपरी हिस्से से बदलकर गांव थेराना केलर शोपियां में करने के बारे में विशेष सूचना प्राप्त होने पर उप निरीक्षक मोहम्मद इलियास, उप निरीक्षक शीतल चरक, हेड कांस्टेबल मोहम्मद यासीन, सार्जेंट कांस्टेबल फारूक अहमद, कांस्टेबल मोहम्मद अयाज़, एस पी ओ जोगिंदर पॉल, एस पी ओ अमज़िद हुसैन, एस पी ओ खुराद अहमद और एस पी ओ गुलाम हसन भट्ट के साथ उप पुलिस अधीक्षक अजहर बशीर की कमान के अधीन एस ओ जी मुख्यालय, श्रीनगर से एक विशेष दल ने उस गांव का दौरा किया और जानकारी को पुख्ता किया। उस दल ने उस क्षेत्र का मुआयना करने के बाद वापस उसकी सूचना भेजी और तत्पश्चात् उप पुलिस अधीक्षक अज़हर बशीर के पर्यवेक्षण में पर्याप्त संख्या में दल पुनः उस गांव के लिए रवाना हुआ। अतिरिक्त क्षति को यालने और साफ-सुधारी कार्रवाई के संचालन के उद्देश्य से शोपियां पुलिस और 44 आर आर को भी सहायता के लिए कहा गया।

कार्रवाई में शामिल दल को तीन पृथक दलों में विभाजित किया गया। शोपियां पुलिस और 44 आर आर के पहले दल को लक्षित क्षेत्र की बाहरी घेराबंदी का कार्य सौंपा गया, श्रीनगर पुलिस की टीम और 44 आर आर वाले दूसरे दल को उस मोहल्ले की घेराबंदी का कार्य सौंपा गया जहां कि लक्षित घर स्थित था और उप पुलिस अधीक्षक अज़हर बशीर

की कमान के अधीन एस ओ जी, श्रीनगर एवं शोपियां पुलिस वाले तीसरे दल को उस घर के नजदीक घेराबंदी करने और वहां हस्तक्षेप करने का कार्य सौंपा गया। आपस में संपूर्ण समन्वय के साथ दिनांक 16.04.2010 को सभी दल लगभग 12.00 बजे लक्ष्य क्षेत्र की ओर बढ़े फिर 15.20 बजे लक्षित घर के नजदीक घेराबंदी डाले हुए दल ने न सिर्फ उस घर से बल्कि आसपास के मकानों से भी लोगों को बाहर निकाल कर सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया। नागरिकों को वहां से निकालने के बाद वहां घेरे हुए दो आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिसके लिए उन्होंने मना कर दिया। हस्तक्षेप दल ने वहां हस्तक्षेप करने की कार्रवाई शुरू की और लक्षित घर के निकट पहुंचने के बाद उनके ऊपर घर के भीतर पोजीशन लिए हुए आतंकवादियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी। आतंकवादियों ने आगे बढ़ रहे दल के ऊपर हथगोले भी फेंके जिसमें पुलिस के लोग बाल-बाल बचे। तथापि, एक रणनीतिक कदम के रूप में हस्तक्षेप करने वाला दल पीछे हट गया जिसने पुनः पीछे की ओर से उस घर में प्रवेश किया।

इस चरण में उप पुलिस अधीक्षक, अज़हर बशीर जो नजदीकी घेराबंदी वाले दल के प्रभारी थे, ने दो छोटे दलों का गठन किया और उस घर में सामने/पीछे दोनों तरफ से घुसने का निर्णय लिया। पहले दल में उप पुलिस अधीक्षक अज़हर बशीर, उप निरीक्षक मोहम्मद इलियास, सार्जिट कांस्टेबल फारूक़ अहमद के साथ एस पी ओ जोगिंदर पॉल और एस पी ओ खुर्शीद अहमद शामिल थे, जबकि, दूसरे दल में उप निरीक्षक शीतल चरक, हेड कांस्टेबल मोहम्मद यासीन, कांस्टेबल मोहम्मद अयाज़ के साथ एस पी ओ अमज़िद हुसैन और एस पी ओ गुलाम हसन भट्ट शामिल थे। जैसे ही पहले दल ने उस घर में पिछले हिस्से से घुसने की कोशिश की, वहां घेरे आतंकवादियों ने एक खिड़की से फिर से हथगोले फेंके, लेकिन उससे कोई क्षति नहीं हुई, क्योंकि पुलिस दल काफी युक्ति से आगे बढ़ रहा था। अपने दल के साथ उप पुलिस अधीक्षक अज़हर बशीर रेंगते हुए उस खिड़की के निकट पहुंचे जहां से आतंकवादियों ने हथगोले फेंके थे। इस चरण में आतंकवादियों ने पहली मंजिल के मुख्य दरवाजे को खोल दिया और घेराबंदी को तोड़कर भागने के लिए वहां से कूद कर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे। एच सी मोहम्मद यासीन, कांस्टेबल मोहम्मद अयाज़, एस पी ओ अमज़िद हुसैन और एस पी ओ गुलाम हसन भट्ट के साथ उप निरीक्षक शीतल चरक ने, जिन्होंने कि लक्षित घर के ठीक बाहर पोजीशन ले रखी थी, गोलीबारी का प्रभावी ढंग से जवाब दिया और घेराबंदी को तोड़कर भागने के लिए वहां से कूद कर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे। एच सी मोहम्मद यासीन, कांस्टेबल मोहम्मद अयाज़, एस पी ओ अमज़िद हुसैन और एस पी ओ गुलाम हसन भट्ट के साथ उप निरीक्षक शीतल चरक ने, जिन्होंने कि लक्षित घर के ठीक बाहर पोजीशन ले रखी थी, गोलीबारी का प्रभावी ढंग से जवाब दिया और घेराबंदी को तोड़कर भागने के लिए वहां से कूद कर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे। इस चरण में उप पुलिस अधीक्षक अज़हर बशीर और उनके साथ उप निरीक्षक मोहम्मद इलियास, सार्जिट कांस्टेबल फारूक़ अहमद, एस पी ओ जोगिंदर पॉल एवं एस पी ओ खुर्शीद अहमद ने अपनी जान की परवाह किए बगैर बहादुरी से उस दूसरे आतंकवादी का पीछा करते हुए उसे भी मार गिराया। इस संबंध में पुलिस स्टेशन, शोपियां में धारा 307 आर पी सी, 6/27, आयुद्ध अधिनियम, के अधीन प्राथमिकी सं. 157/2010 दर्ज है। दोनों आतंकवादी बहुत से नागरिकों की हत्या करने में शामिल थे। इन दोनों आतंकवादियों का मारा जाना पुलिस के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी और एच एम संगठन के नेटवर्क के लिए बड़ा

झटका था। इस कार्रवाई में निम्नलिखित हथियार एवं गोलाबारूद बरामद किए गए :--

1. ए.के.-47 राइफल	01
2. ए.के.-74	01
3. ए.के. मैगजीन	06
4. ए.के. गोलाबारूद	93 राउंड
5. पाउच	02
6. मोबाइल बैटरी	02
7. वायर कटर	01
8. प्लास्टिक का छोटा कम्पास	01
9. पेंसिल सेल	02
10. मोबाइल चार्जर	01
11. ईयर फोन	01

इस मुठभेड़ में सर्वश्री अजहर बशीर, उप पुलिस अधीक्षक, मोहम्मद इलियास, उप निरीक्षक और मोहम्मद अयाज़ कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायनता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 16.04.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 60-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, झारखण्ड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

सर्वश्री

- रति भान सिंह,
उप निरीक्षक
- परमेश्वर दुड़
कांस्टेबल
- फ्रांसिस टोप्पो,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

झारखण्ड में पंचायत चुनाव के अवसर पर सी पी आई (माओवादी) का सशस्त्र दस्ता जिले के विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूमकर चुनाव का बहिष्कार करने के लिए लोगों पर दबाव डाल रहा था। वे लोगों के दिल

में भय और निराशा का भाव पैदा करना चाह रहे थे और पुलिस को हानि पहुंचाने की रणनीति बना रहे थे। उप निरीक्षक रति भान सिंह, ओ. सी. घाटशिला को दिनांक 22 नवम्बर, 2010 को 21.00 बजे एक गोपनीय लेकिन अपुष्ट सूचना मिली कि 10-15 सदस्यों वाला नक्सलियों का एक सशस्त्र दस्ता पुलिस स्टेशन से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित गांव बारडीह पहुंच रहा है और किसी हिंसक कार्रवाई की तैयारी कर रहा है। वरिष्ठ अधिकारियों को सूचित करने के पश्चात् और समय गंवाए बगैर उप निरीक्षक रति भान सिंह एक अधिकारी एवं 08 कांस्टेबलों को साथ लेकर पांच मोटर साइकिलों पर सवार होकर गांव बारडीह के लिए रवाना हो गए। अपनी सुरक्षा एवं गोपनीयता को सुनिश्चित करने के लिए उन लोगों ने अंतिम 3 से 4 कि.मी. की दूरी अपनी मोटर साइकिलों की हेडलाइट को बुझाकर तय की। जैसे ही पुलिस दल गांव बारडीह पहुंचा और सूचना की जांच करने की कोशिश की, उनका सशस्त्र नक्सलियों से आमना-सामना हो गया। नक्सलियों ने उप निरीक्षक रति भान सिंह की अगुवाई वाले पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और उनकी स्थिति चिंताजनक हो गई, लेकिन निराशाजनक एवं कठिन परिस्थिति में भी उप निरीक्षक रति भान सिंह ने अत्यंत धैर्य, बहादुरी एवं सूझबूझ का प्रदर्शन किया और सुरक्षित स्थान पर पहुंचकर नक्सलियों पर जवाबी गोली चलाई। नक्सलियों को चकमा देने के लिए, जिनकी संख्या पुलिस से अधिक थी, उप निरीक्षक रति भान सिंह दो कांस्टेबलों के साथ निरंतर अपना स्थान बदलते रहे और नक्सलियों को ऐसा आभास करवाया कि उन्हें एक बड़े पुलिस दल ने धेर लिया है। उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बगैर दुश्मनों पर दबाव बढ़ा दिया जो कि निर्णायक साबित हुआ। एक नक्सली के मारे जाने के बाद भी नक्सल दल ने पुलिस दल के ऊपर गोलीबारी जारी रखी। इसमें उप निरीक्षक रति भान सिंह, कांस्टेबल परमेश्वर दुड़ू और कांस्टेबल प्रांसिस टोप्पो बाल-बाल बचे। इसके बावजूद उप निरीक्षक रति भान सिंह, कांस्टेबल परमेश्वर दुड़ू और कांस्टेबल प्रांसिस टोप्पो ने नक्सलियों को धेरने की कोशिश की और वे रुक-रुक कर गोली चलाते रहे। घरों में होने के कारण नक्सलियों के पास बेहतर मोर्चा था। पुलिस दल खुले में था। अत्यधिक बहादुरी और साहस का प्रदर्शन करते हुए वे एक सशस्त्र नक्सली को हथियार (.303 राइफल) के साथ उस समय गिरफ्तार करने में सफल रहे, जब वह भागने की कोशिश कर रहा था। बड़ी मात्रा में नियमित हथियारों, गोलाबारूद, नक्सल प्रचार साहित्य और लगभग एक लाख रु. की बरामदगी के साथ नक्सलियों के तीन सक्रिय समर्थकों को भी पकड़ा गया।

यहां यह भी उल्लेख करना प्रासंगिक है कि इस मुठभेड़ में मारा गया अरूप मोर्चा सब-जोनल कमांडर था जो अठारह (18) से अधिक नक्सल संबंधी हिंसक गतिविधियों में शामिल था। गिरफ्तार किया गया सशस्त्र नक्सली भी बारह (12) से अधिक हत्या एवं हिंसा के मामलों में शामिल था।

इस मुठभेड़ में उप निरीक्षक रति भान सिंह ओ/सी घाटशिला ने जीवन को जोखिम में डालने वाली स्थिति में निर्भय होकर अपने बलों की अगुवाई की और बहादुरी एवं साहस का प्रदर्शन किया। उन्होंने परमेश्वर दुड़ू कांस्टेबल तथा फ्रांसिस टोप्पो, कांस्टेबल के साथ साहस, दृढ़ता, रणनीति, अनुशासन, नेतृत्व एवं उच्च स्तर की पेशेवरता का प्रदर्शन किया।

की गई बरामदगी

I. हथियार

1. एन एल 28611 की सं. वाली .303 बोर पुलिस राइफल मार्क-04
2. 6307 की सं. वाली .303 बोर पुलिस राइफल मार्क-04
3. 16426408 की सं. वाली 9 एम एम पिस्टल
4. 1 पिस्टल (7.65 एम एम) बीयरिंग। यूएसए में निर्मित ऑटो पिस्टल।

II. गोलाबारूद

1. .303 बोर-74 (चौहतर)
2. 9 एम एम-04 (चार)
3. 7.65 एम एम-08 (आठ)

III. खाली कारतूस

1. .303-22
2. 5.56 इन्सास-10

IV. नगदी 96,910/- रु. (छियानबे हजार नौ सौ दस रुपए)।

इस मुठभेड़ में सर्वश्री रति भान सिंह, उप निरीक्षक, परमेश्वर दुड़ू कांस्टेबल और फ्रांसिस टोप्पो, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 23.11.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 61-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

श्री वीर सिंह सप्रे,
निरीक्षक

(मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10 सितम्बर, 2006 को 10 बजे थाना-चाचोड़ा में तैनात उप निरीक्षक एस.पी. सक्सेना को यह सूचना प्राप्त हुई कि 15 से 20 दिन पूर्व रोडी बाई नामक एक भील महिला के साथ किसी ने बलात्कार किया है और उसी के परिणामस्वरूप गांव-डांड, थाना-सुथालिया में एक टैक के निकट भील जनजाति के लोगों ने एक बैठक का आयोजन किया है, जिसमें गुना, राजगढ़ और राजस्थान से भील लोग शामिल हो रहे हैं। उप निरीक्षक द्वारा यह सूचना उच्चाधिकारियों को दी गई और जब वे पुलिस

कार्मिकों के साथ स्वयं गांव डांड पहुंचे तो उन्हें जानकारी मिली कि भीलों की उपर्युक्त बैठक समाप्त हो गई है और वहां से भील जत्थों में गांव कोन्याकलां की ओर रवाना हो चुके हैं। ऐसी स्थिति में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न होने से रोकने के लिए उप निरीक्षक अपने पुलिस कार्मिकों के साथ फौरन गांव कोन्याकलां की ओर रवाना हो गए। रास्ते में तेलीगांव के निकट उनकी मुलाकात एस.डी. ओ.पी., राघोगढ़ और थाना प्रभारी, कुंभारज, श्री वीर सिंह सप्रे से हुई। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए एसडीएम, चाचोड़ा भी उनके साथ शामिल हो गए। जब वे सब लगभग 3.15 बजे अपराह्न गांव कोन्याकलां पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि लगभग 3 से 4 हजार भील लोग बंदुकों, लाठियों, फरसा, लोहे के सरियों, तलवारों एवं भाले-बरछों से लैस होकर खतरनाक ढंग से गांव कोन्याकलां की ओर बढ़ रहे थे। इन डराने धमकाने वाले और तुले हुए सशस्त्र भीतों को देखकर, ग्रामीण, सहायता एवं सुरक्षा के लिए चिल्ला रहे थे क्योंकि आम ग्रामीणों का जीवन संकट में था।

जब पुलिस दल ने भीलों के साथ हस्तक्षेप करने की कोशिश की, तो वो रुके नहीं, बल्कि उन्होंने अपने हथियारों से पुलिस दल पर ही हमला कर दिया। हिंसक भीड़ के घातक हमले पर नियंत्रण करने के लिए पुलिस ने पहले हवा में गोलियां चलाई और उसके साथ-साथ भीड़ के हिंसक सदस्यों पर गोलियां चलाई जिसमें एक भील की गोली लगने से मौत हो गई। लेकिन भीलों ने हठपूर्वक हमला करना जारी रखा। यद्यपि सशस्त्र हुड़दंगी (भील) बड़ी संख्या में थे, तथापि ग्रामीणों पर उनके हमले का प्रतिरोध करने के लिए श्री वीर सिंह सप्रे ने बहादुरीपूर्वक उनके हमलों का सामना करना जारी रखा और वे बुरी तरह से घायल हो गए। अपनी जान को जोखिम में डाल कर भी पुलिस गांव वालों को सुरक्षित बचाने में कामयाब हुई। लेकिन उपचार के लिए अस्पताल पहुंचने से पूर्व ही, घायल होने की वजह से श्री सप्रे की मृत्यु हो गई। इस प्रकार श्री सप्रे ने मध्य प्रदेश पुलिस की अति प्रशंसनीय परंपरा के अनुरूप कर्तव्य के दौरान सर्वोच्च बलिदान दिया।

यह घटना मध्य प्रदेश में पुलिस कार्मिकों द्वारा प्रदर्शित अत्यंत बहादुरी के आचरण का एक जीवंत उदाहरण है, जिसमें अपने जीवन को अत्यधिक जोखिम में डालते हुए भी अत्यंत उन्नत एवं हिंसक भीड़ के हाथों निर्दोष नागरिकों के जीवन की आसन क्षति को रोक गया। श्री वीर सिंह सप्रे ने इस महान कार्य तथा निर्दोष ग्रामीणों के जीवन की रक्षा के लिए अपने जीवन को न्योछावर कर दिया। अतः उनके इस सर्वोच्च बलिदान की सराहना सर्वथा उपयुक्त है।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री वीर सिंह सप्रे, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 10.09.2006 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 62-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

श्री डी.पी. गुप्ता,
उप निरीक्षक

(मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22 अप्रैल, 2011 को लगभग 11 बजे पूर्वाह्न कोतवाली दतिया के उप निरीक्षक, डी.पी. गुप्ता एक आपराधिक मामले पर बातचीत करने के लिए डीएसपी, ए.जे. के, श्री राजेश शर्मा के निवास पर गए। जब उप निरीक्षक डी.पी. गुप्ता कोतवाली लौट रहे थे, तो डीएसपी, ए.जे. के, श्री राजेश शर्मा भी अपने निवास से बाहर निकले और उन्होंने अपने निवास से नीचे स्थित पुलिस स्टेशन, ए.जे.के के निकट एक लाल रंग की ऑल्टो कार देखी। उस कार से पुलिस स्टेशन ए.जे.के, दतिया के एच सी हरि सिंह जादेन, कांस्टेबल दिलीप सिंह खरे, कांस्टेबल (ड्राईवर) नरेन्द्र सिंह उर्फ टिंकू, एच.सी. हरि सिंह जादेन के दामाद राजवीर सिंह तोमर, निवासी—गांव भोदई बुजुर्ग, पुलिस स्टेशन थरेट, वर्तमान में उन्नाव रोड दतिया (एक अनजान व्यक्ति के साथ) अपनी लाइसेंसी .315 बोर की राइफल से लैस हो कर पुलिस स्टेशन, ए.जे.के पर नीचे उतरे और ये सभी व्यक्ति उस समय नशे में थे। यह सब देख कर डीएसपी, ए.जे.के, श्री शर्मा ने पुलिस स्टेशन के स्टाफ से यह पूछा कि हथियारों से लैस हो कर ये बाहरी लोग इतनी रात में पुलिस स्टेशन में क्यों आए हुए हैं। इस बात पर राजवीर सिंह तोमर को गुस्सा आ गया और वे डीएसपी, ए.जे.के, श्री शर्मा के साथ बहस करने लगा। राजवीर सिंह तोमर के साथ आए पुलिस कर्मचारियों ने भी उसके अशोभनीय व्यवहार का समर्थन किया और अत्यधिक अनुशासनहीनता का प्रदर्शन किया। उप निरीक्षक, डी.पी. गुप्ता ने जो कि उस स्थान पर मौजूद थे, डीएसपी, ए.जे.के, श्री शर्मा का बचाव किया और उन लोगों को पुलिस स्टेशन से बाहर भेजा। हालांकि, उप निरीक्षक, डी.पी. गुप्ता ने उन्हें यह समझाया कि वरिष्ठ अधिकारियों से कैसे बात की जाती है, तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि उन लोगों ने इस बात को अन्यथा लिया, जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि जब उप निरीक्षक, डी.पी. गुप्ता, कल्याण गुप्ता और पपन गुप्ता की मोटर साइकिल से ड्यूटी के लिए कोतवाली वापस आ रहे थे, तब उन लोगों ने पुलिस नियंत्रण कक्ष के निकट अपनी आल्टो कार मोटर साइकिल के आगे कर दी, जिससे मोटर साइकिल भी रुक गई। उन लोगों ने उप निरीक्षक, श्री गुप्ता के साथ, उनके दखल देने के कारण, गाली—गलौच किया। उप निरीक्षक श्री गुप्ता ने झगड़ा समाप्त करने के लिए तार्किक बातें सामने रखीं, परंतु उन्हें समझ नहीं आई क्योंकि वे लोग नशे में थे।

इसी बीच पुलिस स्टेशन, ए.जे.के, दतिया के एच सी, हरि सिंह, कांस्टेबल, दिलीप कुमार खरे, कांस्टेबल (ड्राइवर), नरेन्द्र सिंह उर्फ टिंकू और एक अनजान व्यक्ति ने आपस में बात की और राजवीर को उप निरीक्षक, श्री गुप्ता के ऊपर गोली चलाने के लिए कहा। राजवीर द्वारा चलाई गई गोली (.0315 बोर राइफल) उप निरीक्षक, श्री गुप्ता के पेट में लगी और उनकी उसी स्थान पर मृत्यु हो गई। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना

के विषय में सुनकर सी/आर ग्वालियर के डी आई जी, पुलिस ने मुख्य अभियुक्त राजवीर सिंह तोमर के सिर पर 10,000/- रु. के इनाम की घोषणा की।

उपर्युक्त आरोपी के विरुद्ध आईपीसी की धारा 147, 148, 149, 302 के अंतर्गत सी आर सं. 121/11 के तहत मामला दर्ज किया गया है और उसे गिरफ्तार किया जा चुका है जबकि एक अन्य (अनजान व्यक्ति) फरार है। इस मामले की जांच चल रही है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि उप निरीक्षक, श्री गुप्ता की सूझ-बूझ से डीएसपी, ए.जे.के, श्री राजेश शर्मा के साथ गंभीर परिणाम बाली एक अशोभनीय घटना टल गई, जिसके लिए अभियुक्त व्यक्ति आमादा थे। तथापि, उप निरीक्षक, डी.पी. गुप्ता को अपनी जान गंवा कर इसकी कीमत चुकानी पड़ी। इसमें .315 बोर की एक राफल बरामद की गई है।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री डी.पी. गुप्ता, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यप्रायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 22.04.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 63-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. शिव प्रताप सिंह, कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
2. जितेन्द्र कुमार पांचाल, कांस्टेबल	

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

अपने देश के भीतर तैयार हुए आतंकवादी संगठन, इंडियन मुजाहिदीन (आईएम) और स्टूडेंट इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) देश के विभिन्न हिस्सों में अनेक बम धमाकों सहित अपनी आतंकवादी गतिविधियों के लिए जाने जाते हैं। अब्दुल सुभान तौकीर की अगुवाई वाले इन आतंकवादी संगठनों का एक माड्यूल राज्य में और संपूर्ण देश में निरंतर चोरी-छिपे अपनी गतिविधियां संचालित कर रहा है। इस माड्यूल की वृण्णित योजनाओं को विफल करने के लिए एटीएस, मध्य प्रदेश द्वारा एक लक्षित अभियान शुरू किया गया था।

दुर्भाग्यवश, ए.टी.एस कर्मियों को हतोत्साहित करने और आम लोगों के मन में भय पैदा करने के लिए दिनांक 28 नवम्बर, 2009 को इस माड्यूल के कुछ आतंकवादियों द्वारा खंडवा में दिन-दहाड़े में दो नागरिकों

के साथ एटीएस कांस्टेबल सीताराम यादव की गोली मार कर हत्या कर दी गई।

इस आंतकी घटना में जाकिर, पुत्र-बदरुल हुसैन, उम्र-28 वर्ष, निवासी-गणेश तलाई खंडवा, मध्य प्रदेश नामक इस माड्यूल के एक आतंकवादी का नाम प्रमुखता से सामने आया। अभियान को हुए इस गंभीर आघात से घबराए और हतोत्साहित हुए बगैर, इस माड्यूल के आतंकवादियों को पकड़ने के प्रति एटीएस की इच्छाशक्ति और मजबूत दुई।

अभियान के दौरान आसूचना की गतिविधियां, रत्नाम में किसी जाकिर नामक शख्स की मौजूदगी का संकेत दे रही थीं। अतः एटीएस इकाई, रत्नाम के उप निरीक्षक, मनीष दूबे, कांस्टेबल, जितेन्द्र कुमार और कांस्टेबल शिव प्रताप सिंह को शामिल करके एक छोटी समर्पित टीम गठित की गई और उन्हें आतंकवादी ज़ाकिर की तलाश करके उसे गिरफ्तार करने का कार्य सौंपा गया।

दिनांक 3 जून, 2011 को इस टीम को सूचना मिली कि आतंकवादी जाकिर को अपने सहयोगी के साथ मोचीपुरा, रत्नाम में देखा गया है और वह वहां से भागने वाला है। चूंकि यह एक महत्वपूर्ण सूचना थी, इसलिए यह टीम जाकिर को पकड़ने के लिए फौरन ऑटो स्टैंड के लिए रवाना हो गई। टीम ने यह नोट किया कि जाकिर के साथ एक अन्य व्यक्ति फरहत था। उन्हें ऑटो स्टैंड पर दोनों को पकड़ने का मौका नहीं मिल सका। टीम ने दो मोटर साइकिलों पर उनका पीछा किया।

रत्नाम रेलवे स्टेशन पहुंचने पर आतंकवादी जाकिर और उसका सहयोगी टैंपो से नीचे उतरे। टीम लीडर से संकेत मिलने पर कांस्टेबल जितेन्द्र कुमार और कांस्टेबल शिव प्रताप सिंह ने तुरंत निर्णय लिया और आतंकवादी जाकिर को पकड़ लिया। लेकिन दुर्भाग्यवश जाकिर स्वयं को छुड़ाने में सफल हो गया और उसने अपना हथियार निकाल कर पुलिस दल पर अंधारुध गोली चलानी शुरू कर दी। उसी समय उसके दूसरे सहयोगी ने भी पुलिस दल पर गोली चलानी शुरू कर दी। उप निरीक्षक मनीष दूबे ने आत्मरक्षा में जबाबी गोली चलाई और उन्हें पकड़ लिया। लेकिन टीम को घातक आतंकवादियों की ओर से गोलियों की बौछार का सामना करना पड़ा। कांस्टेबल जितेन्द्र को बांह में चोट लगी और जाकिर के ऊपर उसकी पकड़ ढीली हो गई। यह देखकर कांस्टेबल शिव प्रताप ने अनुकरणीय साहस, बहादुरी, कर्तव्य के प्रति उच्च कोटि के समर्पण का प्रदर्शन करते हुए अपने साथी पुलिसकर्मी को बचाने के लिए झपट कर जाकिर को पकड़ने का निर्णय लिया। लेकिन जाकिर को पकड़ने के दौरान उन्हें गोली लग गई। वह उसे लंबे समय तक पकड़ कर नहीं रख सके क्योंकि स्वयं घायल होने के कारण उप निरीक्षक मनीष भी उसे पकड़ने के लिए आगे नहीं आ पाए। हालांकि, उन्होंने जाकिर को अपनी कस्टडी में रखने की भरपूर कोशिश की, फिर भी वह भाग निकला, क्योंकि पुलिस दल के सभी सदस्य गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। दोनों ओर से हो रही गोलीबारी के कारण स्थानीय पुलिस सक्रिय हो गई। इस समय तक आतंकवादियों के पास गोलाबारूद भी खत्म हो गया था। बाद में नागरिकों और स्थानीय पुलिस की सहायता से एटीएस टीम की कस्टडी से निकल कर भागने की कोशिश कर रहे दोनों आतंकवादियों, अर्थात् जाकिर और फरहत को पकड़ लिया गया। टीम के सभी तीनों सदस्यों, अर्थात् उप निरीक्षक मनीष, कांस्टेबल शिव प्रताप और कांस्टेबल जितेन्द्र

कुमार ने उच्च कोटि के अनुकरणीय साहस एवं बहादुरी का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डालकर इयूटी के प्रति उच्च कोटि के समर्पण का प्रदर्शन किया।

यह एक ऐसा अभियान था जिसके परिणामस्वरूप दिनांक 03 जून, 2011 को प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों, इंडियन मुजाहिदीन और सिमी के दो घातक आतंकवादियों, जाकिर और फरहत को गिरफ्तार किया गया। हालांकि, इसे बड़ी कीमत चुका कर हासिल किया गया, क्योंकि इसमें गोलियों से घायल होने के बाद कांस्टेबल शिव प्रताप की जान चली गई। इस अभियान में एटीएस, मध्य प्रदेश ने अपने एक युवा, समर्पित और अत्यंत बहादुर सदस्य को खो दिया और आतंकवादियों की ओर से अंधार्युध गोलीबारी से दो अन्य सदस्य गंभीर रूप से घायल हो गए। इस संबंध में दिनांक 03.06.2011 को जिला रत्नाम, मध्य प्रदेश के पीएसजीआरपी में आईपीसी की धारा 307, 302, 34 तथा यूएपी एक्ट 1967 की धारा 10, 13, 15 एवं आर्म्स एक्ट की धारा 25, 27 के अंतर्गत प्राथमिकी सं. 35/11 के तहत एक मामला दर्ज किया गया था और मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, जिला रत्नाम, मध्य प्रदेश के न्यायालय में इस मामले में आरोप पत्र दाखिल किया गया था।

इस घटना में निम्नलिखित सामग्री जब्त की गई:—

1. दो पिस्टौल
2. सिमकार्ड के साथ एक मोबाइल फोन
3. काले रंग की लेदर वालेट
4. 20,020/- रु. नकद
5. उपयोग किया गया एक राउंड
6. उपयोग किए गए छह कारतूसों का खोखा
7. एक जिंदा कारतूस
8. एक क्षतिग्रस्त बुलेट
9. 9 एम के उपयोग किए गए तीन कारतूसों के खोखे

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री शिव प्रताप सिंह, कांस्टेबल एवं श्री जितेन्द्र कुमार पांचाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 03.06.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 64-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. धनंजय पंधारी मस्के, (मरणोपरांत)
पुलिस कांस्टेबल

2. शंकर नारू पुंगती,
पुलिस कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08.04.2011 को गढ़चिरौली जिले का एक पुलिस दल नक्सल गश्त के लिए निकला और 10.00 बजे से 15.30 बजे के बीच गांव कंडोली के लगभग 2 कि.मी. दक्षिण की ओर पहुंचा। तभी पायलट सुनील तोरे और धनंजय मस्के ने हरे रंग की नक्सली पोशाक में 3 से 4 व्यक्तियों को कवर के पीछे संदेहास्पद तरीके से घूमते हुए देखा। तोरे और मस्के ने पहले चिल्ला कर उन्हें रुकने के लिए कहा। मस्के ने फौरन अपने दल के कमांडर रामा कुडियामी को सूचित किया, ताकि, वे सभी पुलिस दलों को सावधान कर सकें। उसी समय अप्रत्याशित रूप से अचानक हरे रंग की पोशाक पहने 80--100 अज्ञात नक्सलियों ने मस्के एवं अन्य पुलिस दलों पर गोलीबारी शुरू कर दी। एक सयानी चाल के रूप में नक्सलियों ने पीछे हटकर पुलिस दलों को घेर लिया और भारी गोलीबारी के साथ हमला बोल दिया। ठीक उसी समय नक्सलियों की ओर बहादुरी से आगे बढ़ते हुए मस्के ने उनके ऊपर गोली चलाना जारी रखा। इसके परिणामस्वरूप एक नक्सली को गोली लगी और वह गिर गया इस कदम से नक्सलियों को पीछे हटना पड़ा। तथापि, इस बहादुर पुलिस कर्मी को एक गोली लग गई। हालांकि वे नीचे गिर गये लेकिन उन्होंने गोली चलाते हुए अपने सहकर्मियों को सुरक्षा देना जारी रखा।

शंकर पुंगती ने भी, जो कि धनंजय मस्के को कवर फायर प्रदान कर रहे थे, धनंजय मस्के को सहायता प्रदान करने और उनकी जान बचाने के लिए नक्सलियों की ओर आगे बढ़ना शुरू किया। पुलिस कांस्टेबल, मस्के और पुंगती तथा नक्सलियों के बीच हुई गोलीबारी में लगभग 2-3 नक्सली गंभीर रूप से घायल हो गए थे। इस कार्रवाई में शंकर पुंगती के भी बाएं पैर में गोली लगी और वे घायल हो गये। लेकिन घायल होने के बावजूद धनंजय और शंकर ने बहादुरीपूर्वक नक्सलियों पर भारी हमला शुरू कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप नक्सली पीछे हट गए और उनके द्वारा की जा रही गोलीबारी अस्थायी रूप से रुक गई। पुलिस दल और नक्सलियों के बीच गोलीबारी एक से डेढ़ घंटे तक चली। नजदीकी गोलीबारी के दौरान बहादुर धनंजय मस्के की गोली लगने से घायल होने के कारण मृत्यु हो गई। शंकर पुंगती अपने बाएं पैर में गोली लगने के कारण गंभीर रूप से घायल हो गए थे। पुलिस दल तत्काल शंकर पुंगती को वहाँ से बचाकर गढ़चिरौली ले गया और उन्हें चिकित्सा उपचार प्रदान किया गया जिससे उनकी बेशकीमती जान बच गई। पुलिस कांस्टेबल धनंजय पंधारी मस्के और शंकर पुंगती बहादुरीपूर्वक लड़े और मौत का सामना करते हुए भी वे पीछे नहीं हटे। इस प्रकार, पुलिस कांस्टेबल धनंजय पंधारी मस्के ने कर्तव्य की वेदी पर अपनी जान कुर्बान कर दी।

इस मुठभेड़ में श्री स्वर्गीय धनंजय पंधारी मस्के, पुलिस कांस्टेबल और श्री शंकर नारू पुंगती, पुलिस कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की वीरता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 08.04.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 65-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक	सर्वश्री	(मरणोपरांत)
1. चिन्ना गिल्ला वेंटा, पुलिस नायक		
2. कोको धीसू नरोटे, पुलिस नायक		
3. चंद्रैय्या मदनैय्या गोदारी, पुलिस हेड कांस्टेबल		
4. सदाशिव लखमा मदावी, पुलिस नायक		
5. मलैय्या समैय्या पेंडम, पुलिस नायक		
6. गणपत पोट्टी सोयम, पुलिस नायक		

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19 मई, 2011 को जिला गढ़चिरौली के भमरागड सबडिवीजन में सड़क को खोलने का एक अभियान था। नक्सल-रोधी अभियान संचालित करने के लिए जाम्भवा गट्टा से चिन्ना वेंटा, कोको नरोटे, चंद्रैय्या गोदारी और सदाशिव मदावी की चार सी-60 पार्टियां नारगुंडा पहुंची।

जब वे सड़क को खोलते हुए और गश्त लगाते हुए नारगुंडा से लगभग 3 किमी. की दूरी तक पहुंचे, तो लगभग 07.30 बजे पूर्वाह्न में हथियारों से लैस 150-200 अज्ञात नक्सलियों के एक समूह ने झाल के बांध की आड़ लेते हुए पुलिस दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस दल ने तत्काल पोजीशन लेते हुए उनके ऊपर जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी। उसी समय अपने दल के अन्य जवानों की सहायता से दल के कमांडर चिन्ना वेंटा ने पहाड़ी की ओर छिपे हुए और उनके ऊपर भारी गोलीबारी के साथ हमला कर रहे नक्सलियों की ओर आगे बढ़ना शुरू किया। नक्सलियों की ओर से हो रही भारी गोलीबारी के बावजूद चिन्ना वेंटा घायल पुलिस कर्मियों की मदद के लिए उस स्थान पर प्राकृतिक आड़ का सहारा लेते हुए उनकी ओर आगे बढ़े। उन्होंने भी नक्सलियों के ऊपर भारी गोलीबारी की जिसके कारण घायल पुलिस कर्मियों की ओर से उनका ध्यान हट गया। नक्सलियों ने चिन्ना वेंटा के दल पर गोलीबारी जारी रखी, जिसमें उन्हें एक गोली लग गई। घायल होने के बावजूद वेंटा अन्य पुलिस कर्मियों को कवर फायर प्रदान करते हुए घायल पुलिस कर्मियों की ओर बढ़ते रहे।

इसी बीच सदाशिव मदावी को पता चला कि वेंटा सहित 3 पुलिस कर्मी बुरी तरह से घायल हैं और वे उस हालत में भी नक्सलियों से लड़ रहे हैं। सदाशिव ने तत्काल स्थिति को अपने नियंत्रण में लिया उसी समय चंद्रैय्या गोदारी भी वहां अपने दल के साथ पहुंचे और उन्होंने मलैय्या

पेंडम, गणपत सोयम तथा कुछ अन्य लोगों को अपने साथ लेकर कोको नरोटे के दल की ओर बढ़ना शुरू किया जो पहले ही वेंटा की मदद के लिए पहुंच चुके थे। उन्होंने छिपे हुए नक्सलियों के ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। यह हमला इतना निर्भीक और घायल होने के जेखिम से भरा था कि नक्सलियों का हैसला पस्त हो गया और वे तितर-बितर होने लगे। कोको, चंद्रैय्या और सदाशिव के दल की ओर से भारी हमले के कारण बहुत से नक्सली गोली लगने से घातक रूप से घायल हो गए।

गोलीबारी लगभग एक घंटे तक जारी रही। गोलीबारी रुकने के बाद, शेष पुलिस कर्मी घायल चिन्ना वेंटा की ओर भाग कर गए और उन्हें पानी पिलाने की कोशिश की, लेकिन उनकी ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। उन्होंने मारे गए दो नक्सलियों के शव, दो कमांडो कैप, गोलाबारूद की एक पाउच, एक्शन कंपनी के दो जोड़ी जूते, प्लास्टिक की एक ग्राउंडशीट, प्लास्टिक की एक केन और स्टील के टिफिन में 2 किग्रा. वजन की एक क्लेमोर माइन को अपने कब्जे में ले लिया। इस कार्यवाई में लगभग 7-8 नक्सली मारे गए। सभी पुलिस कर्मी, विशेष रूप से चिन्ना वेंटा, कोको नरोटे, चंद्रैय्या गोदारी, सदाशिव मदावी, मलैय्या पेंडम और गणपत सोयम बहादुरी पूर्वक लड़े और वे निश्चित मौत का सामना करने से पीछे नहीं हटे। उन्होंने निश्चित पराजय को असंभव जीत में बदल दिया। हालांकि, इस प्रक्रिया में चिन्ना वेंटा ने अपने कर्तव्य की बेदी पर स्वयं अपना बलिदान दे दिया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री स्वर्गीय चिन्ना गिल्ला वेंटा, पुलिस नायक, कोको धीसू नरोटे, पुलिस नायक, चंद्रैय्या मदनैय्या गोदारी, पुलिस हेड कांस्टेबल, सदाशिव लखमा मदावी, पुलिस नायक, मलैय्या समैय्या पेंडम, पुलिस नायक और गणपत पोट्टी सोयम, पुलिस नायक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमाबली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 19.05.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 66-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक	सर्वश्री
1. हनमंत रामचन्द्र शिंदे, पुलिस उप निरीक्षक	
2. नेताजी दिनकर गायकवाड़, सहायक पुलिस उप निरीक्षक	
3. बलवंत दादू चव्हाण, पुलिस हेड कांस्टेबल	

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया।

दिनांक 15 जनवरी, 2009 को जिला-सतारा के कराड सिटी पुलिस स्टेशन में सलीम मोहम्मद शेख उर्फ साल्या चेप्पा एवं अन्य अज्ञात अपराधियों के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 302, 201, 212(ख), 34 बीपी अधिनियम की धारा 142 और भारतीय आयुद्ध अधिनियम की अन्य धाराओं के अंतर्गत भी सी.आर.सं. 19/2012 के तहत एक आपराधिक मामला दर्ज किया गया था।

दिनांक 29.10.2009 को श्री एच.आर. शिंदे, पी एस आई, श्री एन. डी. गायकवाड़, एएसआई और श्री बलवंत चव्हाण, एचसी उक्त मामले की सुनवाई के लिए अभियुक्त सलीम मोहम्मद शेख को अतिरिक्त जिला न्यायालय, काराड के समक्ष पेशी के लिए ले कर गए।

न्यायालय परिसर में ही एक अज्ञात व्यक्ति अभियुक्त की ओर आया और अचानक उसने अपने कपड़े में छिपा कर रखी भरी हुई रिवाल्वर निकाली और अभियुक्त एवं पुलिस दल के ऊपर तान दिया। पुलिस दल तत्काल उसकी ओर लपका। इसी बीच उसने एक राउंड गोली चला दी जिससे एएसआई, गायकवाड़ गंभीर रूप से घायल हो गए। अदम्य साहस और बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए पीएसआई, शिंदे और दो अन्य पुलिस कार्मियों ने हमलावर को पकड़ कर काबू में कर लिया और उसे निष्क्रिय कर दिया।

बाद में पूछताछ से पता चला कि हमलावर का नाम दीपक भीमराव पाटील, निवासी-मंगलवारपेठ, कराड था और वह कराड सिटी पुलिस स्टेशन एवं सतारा सिटी पुलिस स्टेशन में दर्ज हत्या के दो अन्य मामलों में भी संलिप्त था।

श्री एच.आर. शिंदे, पीएसआई, श्री एन.डी. गायकवाड़, एएसआई और श्री बलवंत चव्हाण, एचसी के पुलिस दल द्वारा किए गए सामयिक एवं बहादुरीपूर्ण कार्य से न्यायालय परिसर में एक दुर्भाग्यपूर्ण एवं जघन्य अपराध को घटित होने से रोका गया। यह जानते हुए भी कि उनकी अपनी जान गंभीर खतरे में है, ऐसे अदम्य साहस और सूझ-बूझ का प्रदर्शन अत्यंत प्रशंसनीय है।

बरामदगी:-

एक विदेशी रिवाल्वर (वॉली स्कॉट ली बर्निंग हेम कंपनी)

और 9 जिंदा कारतूस कुल कीमत 5,00,000/- रु.

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री हनमंत रामचन्द्र शिंदे, पुलिस उप निरीक्षक, नेताजी दिनकर गायकवाड़, सहायक पुलिस उप निरीक्षक, और बलवंत दादू चव्हाण, पुलिस हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 29.10.2009 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 67-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

श्री संजय चन्द्रकांत चौगले,	(मरणोपरांत)
पुलिस उप निरीक्षक	

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया।

पुलिस उप निरीक्षक संजय चन्द्रकांत चौगले वर्ष 2005 बैच के सीधी भर्ती द्वारा नियुक्त अधिकारी थे। आयुद्ध अधिनियम की धारा 3,25 के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की धारा 307, 34 के तहत खोलापुरी गेट पुलिस स्टेशन की सीआर सं. 05/2011 में दर्ज एक आपराधिक कृत्य की जांच के दौरान पीएसआई, संजय चौगले बुरहानपुर (मध्य प्रदेश) गए थे, जहां उन्होंने अनुकरणीय बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए उक्त अपराध में वांछित खतरनाक अभियुक्त को गिरफ्तार किया और दोषी व्यक्तियों के पास से एक पिस्तौल बरामद की।

दिनांक 15.01.2011 को अपराध शाखा के एक दल के साथ पीएसआई, चौगले उक्त अपराध में शामिल दूसरे फरार अभियुक्त को पकड़ने मलकापुर के लिए रवाना हुए। उन्होंने अनुकरणीय प्रयास किए और अत्यंत वैज्ञानिक एवं पेशेवर तरीके से जांच के आधार पर वे बुलढाणा जिले के मलकापुर में अभियुक्त की अवस्थिति का पता लगाने में सफल हुए। अभियुक्त को गिरफ्तार करने का प्रयास करते समय पीएसआई चौगले और पुलिस दल पर अभियुक्त व्यक्तियों की ओर से गोली चलाई गई। पीएसआई चौगले ने अत्यंत साहस और बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए गोलीबारी का जवाब दिया तथा अभियुक्तों को पकड़ने का प्रयास किया। लेकिन इस कार्रवाई के दौरान वे गोली लगाने से घायल हो गए। तथापि, गोली लगाने से घायल होने के बाद भी उन्होंने लड़ाई जारी रखी उन्हें चिकित्सा उपचार के लिए मलकापुर अस्पताल ले जाया गया जहां उन्होंने दिनांक 16.01.2011 को 02.45 बजे पूर्वाह्न में अंतिम सांस ली।

पीएसआई चौगले ने अदम्य वीरता, बहादुरी, साहस एवं अपने कार्य के प्रति समर्पण का प्रदर्शन करते हुए 15 एवं 16 जनवरी, 2011 की मध्यरात्रि में दुर्दात अपराधियों से मुकबला करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री संजय चन्द्रकांत चौगले, पुलिस उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 16.01.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 68-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. पोत्सांगबम तरुणकुमार सिंह, उप निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. राधाकिशोर तोंगब्राम, हवलदार	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. एम. रोशन सिंह, हवलदार	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

मणिपुर विधान सभा के 10 वें आम चुनाव के समय राज्य में विभिन्न भूमिगत गुरुओं की गुप्त एवं दुष्टपूर्ण गतिविधियों के कारण घाटी एवं पहाड़ी क्षेत्रों, दोनों में कानून एवं व्यवस्था की अस्थिर स्थिति बनी हुई थी, जो घाटी में स्थित सात आतंकवादी संगठनों के एक संयुक्त मोर्चे द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्याशियों एवं कार्यकर्ताओं पर हमला करने के लिए कॉर्कॉम की घोषणा से और जटिल हो गई थी। कॉर्कॉम में कांग्रेस के प्रत्याशियों के लिए चुनाव प्रचार करने, कांग्रेस का झंडा लगाने और चुनाव के उद्देश्य से परिवहन संघों से कांग्रेस के प्रत्याशियों द्वारा वाहन लेने और उसको उपयोग करने, आदि पर प्रतिबंध लगाया गया था। गोलीबारी की निरंतर घटनाओं, रिमोट कांग्रेल वाले आईडी बमों को प्लांट करने और हथगोले फेंकने से घाटी के जिलों का संपूर्ण क्षेत्र हिल गया और इसका स्वयं चुनाव प्रक्रिया पर विपरीत प्रभाव पड़ा।

कानून एवं व्यवस्था की अस्थिर स्थिति से निपटने के लिए राज्य पुलिस ने राज्य में तैनात अर्धसैनिक एवं सुरक्षा बलों के साथ नजदीकी समन्वय बनाते हुए कमांडो कार्मिकों को तैनात कर सुरक्षा उपायों को और सुदृढ़ किया। अपनी सुरक्षा उपायों के हिस्से के रूप में कठोर कार्रवाई करने योग्य सूचना इकट्ठा करने के लिए निजी स्रोतों को बढ़ावा दिया गया।

दिनांक 15.01.2012 को इम्फाल पश्चिम की जिला पुलिस को लगभग 1900 बजे एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि गैर-कानूनी संगठन कांगलेर्इ याओल कन्ना लूप (केवाईकेएल) के सशस्त्र काडर अपने सशस्त्र मिलिट्री डिफेंस फ्रंट (एमडीएफ) के साथ उपर्युक्त उद्देश्य के लिए विस्फोटक सामग्री सहित हथियारों एवं गोलाबारूद की दुलाई/संग्रह के लिए लामसांग क्षेत्र में धूम रहे हैं। इस विश्वसनीय सूचना के आधार पर श्री थ. क्रिसटोम्बी सिंह, उप पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में इम्फाल पश्चिम जिले के कमांडो कार्मिकों के एक दल ने आतंकवाद-विरोधी अभियान के लिए कथित क्षेत्र, अर्थात् लामसांग गांव की ओर कूच किया। श्री इशाक शाह, एमपीएस, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स), इम्फाल पश्चिम जिला भी कार्रवाई के पर्यवेक्षण के लिए दल के साथ गए इस प्रकार, जब दिनांक 15.01.2012 की रात में कमांडो कार्मिक लांगोल और कामेंग गांव के पहाड़ी रेंज के साथ-साथ चार वाहनों में जा रहे थे, तभी लगभग 50 मीटर की दूरी से पहाड़ की ओर से एक यार्च लाईट सिंगल दिखाई दिया। जैसे ही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक,

श्री इशाक शाह ने चिल्लाकर कहा कि कौन है और रुक जाओ, तभी उन लोगों पर मुख्य रूप से दो अलग हिस्सों, उत्तरी और दक्षिणी तलहटी से भारी गोलीबारी होने लगी। जैसे ही कमांडो कार्मिकों ने आतंकवादियों का जवाब देने के लिए अपनी-अपनी गाड़ियों से कूद कर पोजीशन ली, तभी गोलीयों की बौछार के बीच श्री कृष्णटोंबी सिंह और श्री इशाक शाह की पार्टी के बीच एक हथगोला फट गया। जबकि, दो दिशाओं से भारी गोलीबारी और अंधेरे में आगे बढ़ने में आ रही बाधा के कारण शुरू में कमांडो कार्मिक विषम स्थिति में फंस गए थे, श्री थ. कृष्णटोंबी सिंह अपनी मजबूत इच्छाशक्ति के साथ सामने निकल कर आ गए और लगातार गोली चलाते हुए आतंकवादियों से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ने लगे। वास्तव में उनके अदम्य साहस और निर्भीक कार्रवाई ने उनकी टीम को और अधिक साहस, जोश और उत्साह के साथ आतंकवादियों से लड़ने के लिए प्रेरित किया। उप निरीक्षक पी. तरुणकुमार सिंह को भी यह समझ में आ गया कि भारी गोलीबारी के बीच फंस चुके श्री थ. कृष्णटोंबी सिंह खतरनाक स्थिति का सामना कर रहे हैं। दक्षिणी हिस्से में आतंकवादियों से मुकाबला करने में हवलदार रोशन और दो सिपाहियों को साथ लेते हुए उप निरीक्षक पी. तरुण कुमार सिंह ने कमांडो कार्मिकों के एक दूसरे दल की अगुवाई की, जिससे श्री कृष्णटोंबी सिंह आतंकवादियों से मुकाबला करते हुए पहाड़ के उत्तरी हिस्से में आगे बढ़ सकें इशाक शाह, एमपीएस, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सूझ-बूझ से आगे बढ़े और वे श्री कृष्णटोंबी सिंह के नजदीक पहुंच गए इशाक शाह और हवलदार राधाकिशोर सिंह से कवर फायर का लाभ उठाते हुए श्री कृष्णटोंबी सिंह तेजी से आगे बढ़े और निर्दरता से आतंकवादियों पर हमला कर दिया और अपना रास्ता साफ किया। इस प्रकार उत्तरी हिस्से में जमा आतंकवादी श्री कृष्णटोंबी के घर हमले का सामना नहीं कर पाए और वे अलग-अलग दिशाओं में भागने लगे।

पहाड़ के दक्षिण की ओर भी अंधेरे, ऊंची-नीची जमीन और घनी झाड़ियों से पैदा हुई हुई विषम परिस्थिति में उप निरीक्षक पी. तरुणकुमार सिंह, हवलदार रोशन एवं अन्य कमांडो कार्मिकों का आतंकवादियों के साथ भारी मुकाबला हुआ। अंततः उपनिरीक्षक पी. तरुणकुमार सिंह एवं हवलदार रोशन की अगुवाई वाले कमांडो कार्मिकों के बहादुरीपूर्ण कार्यों के आगे आतंकवादी टिकने में सक्षम नहीं हो पाए और वे पीछे हटते हुए अलग-अलग दिशाओं में भाग गए।

जब दूसरी ओर से गोलीबारी के रुक जाने पर खमोशी छा गई, तब कमांडो कार्मिकों ने तलाशी अभियान चलाया और उन्हें गोलीयों से छलनी तीन शब मिले, दो पहाड़ के उत्तरी हिस्से में और एक दक्षिणी हिस्से में मिली। बाद में मारे गए आतंकवादियों की पहचान कांगलेर्इ याओल कन्ना लूप (केवाईकेएल) नामक प्रतिबंधित भूमिगत संगठन के दुर्दत आतंकवादियों के रूप में हुई जिनके नाम थे: 1. थाकचोम बेनता सिंह (41) पुत्र-इबोहल सिंह, निवासी-हेरोक काबो कैकई 2. मोहम्मद अब्दुल हक (24), पुत्र-मोहम्मद अशरफ अली, निवासी-लीलांग लीहाओखोंग माकोक और 3. मोरीरांगथेम इबूगो सिंह (28), पुत्र-एम चाओबा सिंह, निवासी-हेरोक तौरांगबम लेइकई।

मुठभेड़ स्थल से अभिशंसी वस्तुओं सहित निम्नलिखित हथियार, गोलाबारूद एवं विस्फोटक प्राप्त हुए :--

1. 071208 की संख्या वाली एक एके-47 राईफल
2. एक जिंदा राउंड के साथ एक मैगजीन

3. एके-47 राईफल के चैंबर के भीतर भरा हुआ एक जिंदा राउंड
4. कवर के साथ एक मोबाइल फोन
5. काले रंग की एक मास्क
6. छह खाली कारतूस
7. 410874 की संख्या वाली 9 एमएम की एक पिस्तौल
8. दो जिंदा राउंड के साथ 9 एमएम की एक मैगजीन
9. पिस्तौल में भरा हुआ 9 एमएम का एक जिंदा राउंड
10. नोकिया मोबाइल का एक हैंडसेट
11. मेजर डिप्टी कमांडेंट, एड्ज्यूटेंट 15ए आर द्वारा मो. अब्दुल हक के नाम जारी 15 दिनों के अवकाश का एक सर्टिफिकेट
12. एक प्रोजेक्टाइल
13. आईईडी की सामग्री के साथ एक पोलीथीन बैग
14. आईईडी वाले प्लास्टिक के बोतल को लपेटने के लिए मटपैले रंग की कपड़े की एक लंबी पट्टी।
15. स्टील के रंग वाली हथगोले की दो पिन
16. शव के निकट पाए गए चार खाली कारतूस और
17. दो हथगोले जो फट नहीं सके

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री पोत्सांगबम तरुण कुमार सिंह, उप निरीक्षक, राधाकिशोर तोंगब्राम, हवलदार और एम रोशन सिंह, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 15.01.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 69-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक	
सर्वश्री	
1. मैबाम उत्तम सिंह,	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
उप निरीक्षक	
2. एन. नंगशीबाबू सिंह,	(वीरता के लिए पुलिस पदक
हवलदार	का प्रथम बार)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया।

दिनांक 29 दिसम्बर, 2011 को अपराह्न लगभग 6:00 बजे एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि पोर्पम्पट पुलिस स्टेशन के अंतर्गत लीमा

चिंगजिल की पर्वतीय तलहटी में स्थित वाखा नामक गांव के इर्द-गिर्द घाटी-आधारित भूमिगत संगठन के कुछ आतंकवादी आगामी आम चुनाव के दौरान गड़बड़ी पैदा करने और किसी सही मौके पर सुरक्षा बलों पर घात लगाकर हमला करने के इरादे से घूम रहे हैं। इस सूचना के आधार पर इम्फाल पूर्वी जिला एवं 28 असम राईफल्स के कमांडो कार्मिकों के एक संयुक्त दल को आतंकवाद-विरोधी कार्रवाई के लिए उक्त क्षेत्र के लिए रखाना किया गया।

इस प्रकार, जब संयुक्त दल नहरुप वाखा के अंदरुनी ग्रामीण मार्ग से वाखा गांव की ओर बढ़ रहा था और लीमा चिंगजिल की पर्वतीय तलहटी क्षेत्र में पहुंचने ही वाला था, तभी संयुक्त दल में आगे चल रहे उप निरीक्षक, मैबाम उत्तम सिंह के नेतृत्व वाले कमांडो दल ने यह देखा कि तलहटी के दक्षिणी हिस्से में लगभग 100 मीटर की दूरी पर लगभग 3-4 युवक इधर-उधर भाग रहे हैं। अचानक भूमिगत आतंकवादियों की ओर से अत्याधुनिक हथियारों से संयुक्त दल पर गोलीबारी होने लगी। वाहनों से कूदकर तुरन्त कमांडो कार्मिक हरकत में आ गए और भूमिगत आतंकवादियों की ओर जवाबी गोलीबारी शुरू की और वहां कुछ समय के लिए मुठभेड़ चली।

इस असामान्य परिस्थिति में उप निरीक्षक एम उत्तम सिंह और हवलदार एन. नंगशीबाबू सिंह ने अपनी निजी सुरक्षा को नजरअंदाज करते हुए और अपनी प्रतिबद्धता एवं फौलादी इरादे के साथ असम राईफल्स के 28 कार्मिकों की सहायता से भूमिगत आतंकवादियों की ओर लगातार गोली चलाते हुए तलहटी के उत्तरी हिस्से की ओर, जहां से गोलीबारी हुई थी, सूझ-बूझ के साथ आगे बढ़ना शुरू किया। इस बीच शेष कमांडो बल सङ्कट की ओर से मुठभेड़ में लगे हुए थे।

इस प्रकार, वहां एक भयंकर मुठभेड़ हुई जो लगभग आधा घंटे तक चली। जब दूसरी ओर से गोलीबारी रुक गई, तब संयुक्त दल ने तलाशी अभियान चलाया और उन्हें उस क्षेत्र में एक आतंकवादी का शव मिला, जिस ओर भूमिगत आतंकवादियों की गोलीबारी का जवाब देने के लिए उप निरीक्षक एम. उत्तम सिंह एवं हवलदार एन. नंगशीबाबू सिंह दोनों आगे बढ़ रहे थे। तलाशी के दौरान कमांडो कार्मिकों द्वारा एके के पांच खाली कारतूसों के अतिरिक्त मारे गए आतंकवादी के शव से लगभग 100 मीटर की दूरी पर पहाड़ी की तलहटी में 9 एम एम की एक पिस्तौल, जिस पर सी-जेड75 अंकित था, चेक गणराज्य में निर्मित कॉम्पैक्ट कैल. 9 लुगर जिस पर संख्या सी 9950 अंकित था और उसके चैंबर में भेर हुए 5 जिंदा कारतूस, जांगिंग शर्ट की जेब में एक मोबाइल फोन, पैंट की जेब में 50 रु. के साथ एक वॉलेट और 3 (तीन) जिंदा कारतूस भरा हुआ 1 (एक) एके मैगजीन बरामद किया गया। इस संदर्भ में पोर्पम्पट पुलिस स्टेशन में भारतीय दंड संहिता की धारा 307/34, 25 (1-सी) आयुध अधिनियम एवं 16(1)(बी)/ 20 यू.ए (पी)ए अधिनियम के तहत प्राथमिकी संख्या 398(12) 2011 दर्ज है।

मृतक की पहचान आर. के. सोमाकांता उर्फ नओचा (28), पुत्र-(स्व.) आर. के. सनतोम्बा सिंह, निवासी-बांगनू नंगसाइबाम लेइकई के रूप में हुई, जो केवाइकोएल के 21वीं बैच में लांस कॉर्पसरल, संख्या-257 के रैंक में एक दुर्दात सदस्य था। वह वर्ष 2008 के बाद से ही राज्य की सुरक्षा को खतरा पैदा करने वाली गैर-कानूनी गतिविधियों में संलिप्त था।

उपर्युक्त से यह पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि उप निरीक्षक मैबाम उत्तम सिंह ने अपनी जान की परवाह किए बगैर शुरूआत में दो दिशाओं से हो रही अपने ऊपर गोलीबारी की दशा में भी आतंकवादियों के विरुद्ध जोरदार कार्रवाई करने में बहादुरी के दुर्लभ कृत्य का प्रदर्शन किया। उसी समय स्वयं सबसे आगे रहकर आतंकवादियों से मुकाबला करने के साथ-साथ उन्होंने उपर्युक्त एवं प्रभावी कमान के साथ बल की रणनीतिक गतिविधि सुनिश्चित की। हवलदार एन. नंगशीबाबू भी अपने जान की परवाह किए बगैर अटल प्रतिबद्धता के साथ इस मुठभेड़ के अति महत्वपूर्ण समय पर अपने कमांडर उप निरीक्षक एम. उत्तम सिंह के साथ नजदीक से आतंकवादियों से लड़े।

यदि ये दोनों कमांडो कार्मिक अपनी जान की कीमत पर सामने आकर इस प्रकार की निजी भागीदारी के साथ स्वयं मुठभेड़ में शामिल नहीं होते, तो संयुक्त दल में काफी लोग हताहत हो जाते।

इस मुठभेड़ में सर्व श्री मैबाम उत्तम सिंह, उप निरीक्षक और एन. नंगशीबाबू सिंह, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 29.12.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 70-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. मो. राजीब खान,
उप निरीक्षक
2. ओइनाम संजीतकुमार सिंह,
राइफलमैन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

मणिपुर विधान सभा के 10वें आम चुनाव और 26 जनवरी, 2012 के भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह से ठीक पहले विभिन्न भूमिगत संगठनों की गुप्त एवं नापाक गतिविधियों के कारण राज्य में घाटी तथा पहाड़ी क्षेत्रों, दोनों में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति चिंताजनक बनी हुई थी और यह घाटी-आधारित सात आतंकवादी संगठनों के संयुक्त मोर्चे द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्याशियों एवं कार्यकर्ताओं पर हमला करने और प्रत्येक वर्ष भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह का बहिष्कार करने संबंधी कॉरकॉम की घोषणा के बाद और जटिल हो गई थी। कॉरकॉम में कांग्रेस प्रत्याशियों द्वारा चुनाव प्रचार करने, भारत का एवं कांग्रेस का झंडा फहराने, चुनाव की प्रक्रिया में परिवहन संघों से कांग्रेस के प्रत्याशियों द्वारा

किराए पर वाहन लेकर उसका उपयोग करने तथा 26 जनवरी, 2012 के भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह से संबंधित जट्ठों को लाने व छोड़ने आदि पर प्रतिबंध लगाया गया था। चुनाव प्रक्रिया एवं 26 जनवरी, 2012 के भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह को प्रभावित करने के लिए गोलीबारी की निरंतर घटनाओं, रिमोट कंट्रोल वाले आईईडी बमों को प्लांट करने, हथगोले फेंकने, घाटी के जिलों के संपूर्ण क्षेत्र के सड़कों को बाधित करने जैसी हरकतें की गई हैं।

निरंतर बिगड़ रही कानून एवं व्यवस्था की स्थिति को दुरुस्त करने के लिए राज्य पुलिस ने राज्य की आसूचना एजेंसियों में कार्यरत अर्द्धसैनिक एवं सुरक्षा बलों के साथ समन्वय बनाकर कमांडो कार्मिकों की तैनाती करते हुए सुरक्षा उपायों को दुरुस्त किया और साथ-साथ ही अपने सुरक्षा उपायों के हिस्से के रूप में कठोर एवं कार्रवाई योग्य सूचना एकत्र करने के लिए निजी स्रोतों को भी बढ़ावा दिया गया।

मौजूदा कानून एवं व्यवस्था की स्थिति के बीच दिनांक 26.01.2012 को 5 बजे अपराह्न में यारालपट, तिनसिड रोड के सार्वजनिक क्षेत्र में कुछेक सशस्त्र काड़ों की मौजूदगी एवं गतिविधि की विश्वसनीय जानकारी प्राप्त हुई, जिन पर कॉरकॉम के कार्यकर्ता होने का संदेह था और जिनका कांग्रेस के प्रत्याशियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ-साथ 26 जनवरी, 2012 के भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह आदि के जट्ठों पर गोलीबारी करने एवं विस्फोटकों का इस्तेमाल करने जैसे जघन्य एवं असामाजिक गतिविधियों को अंजाम देने का इरादा था। कथित स्रोत से जानकारी मिलने पर इम्फाल-पूर्व और इम्फाल-पश्चिम जिले से कमांडो कार्मिकों का एक संयुक्त दल तैयार कर उसे आतंकवाद-विरोधी अभियान के लिए उक्त क्षेत्र में फौरन रवाना किया गया।

कथित क्षेत्र पहाड़ी, सुदूर एवं आबादी से कटा हुआ है और साथ ही विद्रोही गतिविधियों से भरपूर है। जब संयुक्त दल लगभग 7:40 बजे (अपराह्न) दल उस क्षेत्र में पहुंचा, तो काफी अंधेरा हो चुका था। अतः संयुक्त दल को दो हिस्सों में बांटा गया और वे आपस में रणनीतिक दूरी रखते हुए अत्यंत सावधानी के साथ संदिग्ध क्षेत्र में आगे बढ़े।

इस प्रकार, जब अपराह्न लगभग 7:40 बजे संयुक्त दल यारालपट के तलहटी वाले क्षेत्र में पहुंचा, तभी पहाड़ की ओर से 3-4 युवकों के एक समूह ने अत्याधुनिक हथियारों से कमांडो दल पर गोलीबारी शुरू कर दी और गोलियां उप निरीक्षक मो. राजीब खान द्वारा उपयोग किए जा रहे पहले वाहन, जिसकी पंजीकरण संख्या एम एन 01 के 5500 थी (मणिपुर सरकार द्वारा मणिपुर पुलिस को दी गई जिस्पी), पर जाकर लगी। वे ऐसी कठिन परिस्थिति में थे कि वे न तो आगे बढ़ पा रहे थे न ही जवाबी कार्रवाई कर पा रहे थे। तथापि वे प्रतिबद्धता के साथ आतंकवादियों पर हमला करने में सक्षम हुए। इस महत्वपूर्ण मोड़ पर राइफलमैन ओ. संजीतकुमार सिंह गाड़ी से कूदकर बाहर आ गए और आगे बढ़ते हुए उप निरीक्षक मो. राजीब खान के नजदीक पहुंच गए और उन्होंने आतंकवादियों के विरुद्ध बहादुरी से कार्रवाई की। दूसरे वाहनों के कमांडो मुठभेड़ में शामिल हो गए क्योंकि भारी मुठभेड़ के कारण पहले वाहन के कमांडो कार्मिक कुछ क्षण के लिए घिर गए थे। अंततः कमांडो कार्मिकों के जोरदार प्रहर के सामने घुटने टेकते हुए आतंकवादी अलग-अलग दिशाओं में भागने लगे। कमांडो कार्मिक लगातार गोलीबारी करते हुए भाग रहे युवकों का पीछा करते रहे। उप निरीक्षक मो. राजीब खान एवं राइफलमैन ओ. संजीतकुमार सिंह की गतिविधि इतनी तेज थी कि भागने के अपने

असफल प्रयास में आतंकवादी इधर से उधर दौड़ते रहे। जब दूसरी तरफ से गोलीबारी रुक गई, तो कमांडो ने तलाशी अभियान चलाया। इसमें उन्हें एक आतंकवादी का शव मिला। आतंकवादी की पहचान सगोलसेम जितेन सिंह उर्फ मिकोय (उम्र 31 वर्ष), पुत्र-एस. मंगलेमजाओ सिंह, निवासी-कोंगाबा नॉगथोंगबम लेइकई, इम्फाल के रूप में हुई, जो कॉरकॉम के एक बड़े घटक, भूमिगत संगठन कांगलेई याओल कामा लूप (केवाईकेएल) का एक कट्टर काड़ था। शव के नजदीक से निम्नलिखित हथियार एवं गोलाबारूद बरामद किए गए :—

- (क) 9 एम एम की एक पिस्टौल
- (ख) 9 एम एम के तीन जिंदा कारतूस
- (ग) 9 एम एम के कारतूस के 3 खाली खोखे एवं एके-47 के कारतूस के 3 खाली खोखे
- (घ) चीन में निर्मित एक हथगोला

इस मुठभेड़ में मो. राजीब खान, उप निरीक्षक एवं श्री ओइनाम संजीतकुमार सिंह, राइफलमैन ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 26.1.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 71-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

नाम और रैंक	
सर्वश्री	
1. सागापम इबोटोम्बी सिंह, उप-निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. खंगेमबाम हेरोजीत सिंह, राइफलमैन	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26.02.2012 को शाम के लगभग 4:15 बजे कांग्रेस आई के उम्मीदवारों और कार्यकर्ताओं पर हमला करने के लिए कांचीपुर और लेंगथाबल के सामान क्षेत्र में समन्वय समिति (सीओआर सीओएम) के एक भाग, घाटी में अवस्थित यूजी समूह की गतिविधि के बारे में विशिष्ट सूचना के आधार पर इम्फाल पश्चिम के सी डी ओ दल के साथ उप-निरीक्षक एस. इबोटोम्बी सिंह ने उक्त कैडरों को पकड़ने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग-2 पर स्टैंडर्ड रॉबर्ट हायर सेकेन्डरी स्कूल के पास जामातलाशी बिन्दु स्थापित किया।

शाम के लगभग 5:00 बजे जांचदल ने स्लेटी रंग की हॉंडा एक्टिवा, जिसकी पिछली सीट पर एक व्यक्ति था, को योका और उन्हें रुकने के

लिए कहा। लेकिन रुकने के बजाए वे पश्चिम की ओर भाग गए। कमांडो टीम ने भी उनका पीछा किया और रुकने के लिए चिल्लाए। रुकने के बदले पीछे बैठे व्यक्ति ने ऑटोमैटिक हथियार से पीछा करने वाली पार्टी पर फायरिंग की, गोली कमांडो के नजदीक से निकल गई, उन्हें पकड़ने के संकल्प के साथ पुलिस पार्टी ने कुशलतापूर्वक उनका पीछा किया और उजाला रेस्टोरेंट के पास राष्ट्रीय राजमार्ग-2 के पश्चिम की ओर उन्हें घेरा, जो लेंगथाबल की ओर स्टैन्डर्ड रॉबर्ट हायर सेकेन्डरी स्कूल के दक्षिण में लगभग 100 मीटर की दूरी पर स्थित था। पीछे बैठे व्यक्ति ने कमांडो पर फायरिंग जारी रखी। उन्हें रोकने के लिए उप निरीक्षक एस. इबोटोम्बी सिंह ने दो अनजान व्यक्तियों के वाहन पर गोलीबारी की ओर कुछ गोलियां वाहन पर लगीं। कोई विकल्प न होने पर दोनों अनजान व्यक्तियों ने वाहन को नालों में छोड़ दिया और अलग-अलग दिशाओं में भाग गए। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए उप-निरीक्षक एस. इबोटोम्बी सिंह ने राइफलमैन के एच. हेरोजीत सिंह के साथ तुरंत भागने का प्रयास कर रहे एक यूजी के पीछे भागे और भाग रहे यूजी पर फायरिंग करके उसे वहाँ गिरा दिया तथा आम-समर्पण करने के लिए कहा लेकिन उसने पीछा कर रहे दल पर फायरिंग कर दी। सतर्कता और त्वरित सूझ-बूझ तथा साहस जो अनुभव से ही आता है, का प्रदर्शन करते हुए उप-निरीक्षक एस. इबोटोम्बी सिंह और राइफलमैन के एच. हेरोजीत सिंह ने कोई विकल्प न होने के कारण उसे तुरंत घटनास्थल पर ही मार गिराया। दूसरा संदिग्ध भीड़ और घरों का सहारा लेकर भाग निकला।

मुठभेड़ के बाद पूरी तलाशी की गई जो लगभग 15 मिनट तक चली। मृतक के पास माउजर मार्क की एक 9 एम एम पिस्टल, एक मोबाइल हैंडसेट, चीन में बने दो हैंड ग्रेनेड और एके-47 राइफल के कुछ खाली कारतूस बरामद हुए और उजाला रेस्टोरेंट के दक्षिण की ओर एक स्लेटी रंग की हॉंडा एक्टिवा, जिसका रजिस्ट्रेशन सं. एम एन-01 एन-3965 था, पड़ा हुआ मिला। यह स्थान पुलिस कार्मिकों के संरक्षण में था।

बाद में उसकी पहचान प्रतिबंधित गुट पीपल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) की 253 फाइटिंग मोबाइल बटालियन (आर्मी संख्या 2990) के तथाकथित सार्जेंट चिंगामाखा किंबुंग मोबाम लेइकाई के समन्द्रम नोबिन उर्फ नओचा सिंह (28) पुत्र एस. गिगोन सिंह के रूप में हुई।

पुलिस रिकार्ड से पता चलता है कि वह दिनांक 12.09.2009 को लगभग 12:30 बजे मिथिमाखोंग के निकट नगांगखसी हिल पर 4(चार) आईआरबी कार्मिकों की घाट लगाकर हत्या करने और 5(पांच) को घायल करने तथा मैगजीन सहित 4(चार) एसएलआर राइफलें छीनने में भी प्रत्यक्ष रूप से शामिल था।

उपर्युक्त मुठभेड़ में, कमांडो यूनिट, इम्फाल पश्चिम जिला के अधिकारी और जवानों ने गोलीबारी के बीच पूर्ण साहस, दृढ़संकल्प और अत्यधिक साहसिक प्रदर्शन किया जिसके परिणामस्वरूप प्रतिबंधित पीपल्स लिबरेशन आर्मी के एक कट्टर हथियारबंद आतंकवादी को मार गिराया गया और हथियार/गोलाबारूद बरामद किया गया। यदि पुलिस अधिकारियों और जवानों ने तत्परता, पेशेवर तरीके से और कुशलतापूर्वक कार्यवाई नहीं की होती, तो आतंकवादियों के अपनी जघन्य योजना को अंजाम देने में सफल हो जाने पर बहुत से सुरक्षा कार्मिकों की जान खतरे में पड़ गई होती।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सागापम इबोयोम्बी सिंह, उप-निरीक्षक और खंगेमबाम हेरोजीत सिंह, राइफलमैन ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 26.02.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 72-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:--

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. बृजेश कुमार राय,
सहायक पुलिस अधीक्षक
2. तपन कुमार नायक,
उप-निरीक्षक
3. रेशम बहादुर हमल ठाकुरी,
हवलदार (मरणोपरांत)
4. रंजन कुमार नायक,
उप-निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02.05.2011 को लगभग प्रातः 11:30 बजे सहायक पुलिस अधीक्षक (एएसपी) (यूटी) बृजेश कुमार राय, हवलदार आरबीएच ठाकुरी सहित उप-निरीक्षक तपन कुमार नायक, कांस्टेबल/सुनील भेरा, कांस्टेबल राजीव लोचन कंहार, 14 आई आर बटालियन के साथ हथियारों के साथ वारंट का पालन करने और पुलिस तथा जनता के बीच आपसी बातचीत को बढ़ावा देने के लिए नौ मोटरसाइकिलों पर दरिंगाबाड़ी पुलिस स्टेशन से केरुबाड़ी की ओर निकले। वे अपराह्न 12:15 पर केरुबाड़ी पहुंचे और डेढ़ घंटे तक गांव वालों के साथ बातचीत की।

पूरी टीम ने समस्त रणनीति का अनुसरण करते हुए अपराह्न 1:45 बजे दरिंगाबाड़ी की ओर अपनी वापसी की यात्रा आरंभ की। सी पी आई (माओवादी) कैंडर डम्पली/कलिंगबाड़ी गांव के निकट घात लगाकर हमला करने की तलाश में बैठे थे और उन्होंने पुलिस दल के सदस्यों को मारने तथा उनके हथियार भी लूटने के इरादे से पहाड़ी पर बैठे पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। पूरा पुलिस दल घातक क्षेत्र में था और उनके द्वारा चलाई गई गोलियाँ दूसरी, तीसरी एवं पांचवीं मोटरसाइकिलों को लगीं। ए एस पी बृजेश के व्यक्तिगत सुरक्षा अधिकारी कांस्टेबल/राजीव लोचन कंहार के दाएं पैर की उंगली पर गोली लगी और बृजेश कुमार राय को एक रिकोचैट लगा तथा उनकी दांयी जांघ के पीछे

चोट लगी। 5वीं मोटरसाइकिल के पीछे बैठे हवलदार आरबीएच ठाकुरी ने गंभीर जोखिम की परवाह न करते हुए स्थिति संभाली और गोली चलाई तथा सी पी आई (माओवादी) कैंडरों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले का जवाब दिया, लेकिन उनकी गरदन पर गोली लगी और वहीं पर गिर गए। पुलिस दल के अन्य सदस्यों ने आड़ लेते हुए अपनी रक्षा करने तथा माओवादियों को हताहत करने के लिए नियंत्रित गोलीबारी की। तपन कुमार नायक, उप-निरीक्षक एवं रेशम बहादुर हमल ठाकुरी, हवलदार जो आगे की तरफ थे, ने नेतृत्व संभाला और कार्मिकों को विश्वास के साथ लड़ने के लिए प्रेरित किया तथा नियंत्रित गोलीबारी जारी रखी और माओवादियों के अलग-अलग दलों को उलझाए रखा। तपन कुमार नायक, उप-निरीक्षक एवं रेशम बहादुर हमल ठाकुरी, हवलदार ने तब घायल कांस्टेबल राजीव लोचन कंहार को सुरक्षित हटाने और सी पी आई (माओवादी) से लड़ने के लिए अतिरिक्त सैन्य बल प्राप्त करने का भी निर्णय लिया। अपनी जान के जोखिम की परवाह न करते हुए वे कुछ दूरी तक रेंग कर चले और घातक क्षेत्र से बाहर आ गए तथा दरिंगाबाड़ी की ओर गए। रास्ते में उन्होंने उप-निरीक्षक रंजन नायक नेतृत्व वाली दरिंगाबाड़ी में स्थापित एस ओ जी यूनिट को सावधान किया, ए एस पी (यूटी) बृजेश कुमार राय ने वहां फंसे हुए पुलिसकर्मियों को बचाने के साथ-साथ माओवादियों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले को जवाब देने के लिए कार्रवाई की योजना बनाई, बल को योजना समझाई और असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हुए उप-निरीक्षक तपन नायक और उप-निरीक्षक रंजन नायक के नेतृत्व वाली एस ओ जी यूनिट संख्या 19 के साथ सभी सावधानियां बरतते हुए घटनास्थल पर गए। सम्पूर्ण एसओजी दल के साथ एएसपी बृजेश, उप-निरीक्षक तपन नायक और उप-निरीक्षक रंजन नायक ने पीछे की ओर से पहाड़ी को घेर लिया उप-निरीक्षक रंजन नायक, जो एसओजी का नेतृत्व कर रहे थे, ने अपनी जान की परवाह न करते हुए असीम साहस का प्रदर्शन किया और आगे बढ़कर घातक जवाबी हमला किया। स्थिति संभालने के बाद पुलिस दल ने यूजीबीएल गोलियाँ चलाई। अतिरिक्त सैन्य बल और रणनीतिक जवाबी हमले को देखते हुए माओवादी हार के डर से जंगल की आड़ लेकर भाग गए। दल ने क्षेत्र की तलाशी की और आईआर बटालियन के सभी सिपाहियों को सुरक्षित बचाया तथा मृतक हवलदार आरबीएच ठाकुरी के शव को प्राप्त किया। दल ने घातक क्षेत्र के चारों ओर भी क्षेत्र की तलाशी की और दो आईईडी (टिफिन बम) बरामद किए। आगे और हमले का पूर्वानुमान लगाते हुए पूरा दल युक्तिपूर्वक वापस चल पड़ा और सुरक्षित तरीके से दरिंगाबाड़ी पुलिस स्टेशन पहुंच गया।

सम्पूर्ण कार्रवाई में अपनी जान को गंभीर जोखिम की परवाह न करते हुए आगे रहकर इस कार्रवाई का नेतृत्व करके बृजेश कुमार राय, सहायक पुलिस अधीक्षक, तपन कुमार नायक, उप-निरीक्षक, रेशम बहादुर हमल ठाकुरी, हवलदार और रंजन कुमार नायक, उप-निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 02.05.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 73-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

नाम और रैंक

श्री रंजन खोरा,
कांस्टेबल (मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 29.06.2008 को सुबह जब एपी ग्रेहाउन्ड के 66 कार्मिक (जिसमें 55 ग्रेहाउन्ड्स, 02 सिविल सिस और 4 होमगार्ड तथा चित्रकोन्डा पुलिस स्टेशन 1 के 2 कांस्टेबल, कांस्टेबल रंजन खोरा, कांस्टेबल तपन कुमार मोहन्ती और 3 बोट स्टाफ शामिल थे) तलाशी/छानबीन की कार्रवाई करने के पश्चात् गुनुपुर (अलाम्पका) के निकट चित्रकोन्डा की ओर जनवाई से लौट रहे थे, तब सी पी आई (माओवादी) ने अचानक उन पर गोलीबारी आरंभ कर दी और मोटरबोट पानी में उलट गई। इस दुर्घटना में ए पी 23 ग्रेहाउन्ड के एक उप-निरीक्षक, एक एपी होमगार्ड, चित्रकोन्डा पुलिस स्टेशन के कांस्टेबल तपन कुमार मोहन्ती और दो बोट ड्राइवर जलाशय के पार तैरकर चित्रकोन्डा पहुंचे। बचाव कार्रवाई दल द्वारा चित्रकोन्डा पुलिस स्टेशन के कांस्टेबल रंजन खोरा के शव सहित 38 शवों को निकाला गया। इस संबंध में चित्रकोन्डा पुलिस स्टेशन में आई पी सी की धारा 302/307/120-क/121/124-ख/147/148/149 और आयुध अधिनियम की धारा 25/27 के तहत दिनांक 29.06.2008 का मामला संख्या 10 दर्ज है।

मोटर लांच में लौटे समय कांस्टेबल रंजन खोरा को अचानक माओवादी की गोलीबारी का सामना करना पड़ा। इससे लांच का संतुलन बिगड़ गया, उसमें गोलियों से छेद हो गया और डूबने लगी। अपने सिर में गोली लगने पर भी, उन्होंने सुरक्षा हेतु दूसरों की मदद की और शहीद हो गए।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय रंजन खोरा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायनता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 29.06.2008 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 74-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

नाम और रैंक
श्री चमकौर सिंह,
हैंड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री चमकौर सिंह ने पुलिस स्टेशन-बाजाखाना, जिला फरीदकोट में आई पी सी की धारा 392/397/307/342/332/353/186/34 तथा आयुध अधिनियम की धारा 25/27 के तहत दिनांक 06.05.2011 की एफआईआर संख्या 25 के मामले में उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया, जिसमें उनके साहस और विशेषज्ञता से एक अत्यधिक संवेदनशील और बड़ी डकैती का पता लगाया गया था। 28,61,770/- रु. की लूटी गई पूरी राशि घटनास्थल से बरामद कर ली गई थी।

इस मामले के संक्षिप्त तथ्य ये हैं कि दिनांक 06.05.2011 को अपराह्न 4:20 बजे हथियारों से लैस लुटेरों का एक गैंग स्टेट बैंक ऑफ पटियाला, बरगारी शाखा में घुसा और एक कोने वाले कमरे में ग्राहकों सहित पूरे बैंक स्टाफ को इकट्ठा किया। एक चाय विक्रेता, जो उस समय चाय देने के लिए बैंक के अंदर ही था, ने अपने सेल फोन से बरगारी पुलिस चौकी को इसकी सूचना दी। पंजाब होमगार्ड के दो जवानों के साथ हैंड कांस्टेबल (ई) चमकौर सिंह घटनास्थल की ओर दौड़े। बैंक में उनके पहुंचने से पहले, लुटेरों ने बैंक के कर्मचारियों की कनपटी पर अपनी रिवालवरें रख दीं, मुख्य चाबियां अपने कब्जे में लीं और उन सभी के सेल फोन छीन लिए। उन्होंने 28,61,770/- रु. की नगदी को एक बोरे में भरा और इसे बैंक से बाहर जाने वाले दरवाजे की ओर घसीया।

जैसे ही लुटेरों ने पुलिस पार्टी को देखा, वे डर गए और बैंक परिसर के अंदर भगदड़ मच गई। हिम्मत और सूझ-बूझ के साथ हैंड कांस्टेबल (ई) चमकौर सिंह ने तेज आवाज में उन्हें अपने हाथ ऊपर उठाने और रुपयों के बैग सहित हथियार सौंपने के लिए चेतावनी दी। तथापि, उन्होंने इस चेतावनी की परवाह नहीं की बल्कि ज्यादा उग्र हो गए। हैंड कांस्टेबल (ई) चमकौर सिंह ने खुद एक अनुकूल स्थान पर घुटनों के बल बैठकर स्थिति संभाली और अपने अधीनस्थ कार्मिकों को और सतर्क रहने का आदेश दिया। एक लुटेरे के पास अद्भुत मैकैनिकल उपकरण था, जिसमें से तेज चिंगारी और आग के टुकड़े निकल रहे थे। जब एक लुटेरे ने नजदीक से हैंड कांस्टेबल (ई) चमकौर सिंह पर गोली चलाई, तो बेहद हिम्मत के साथ आगे कूद गए। गोली हैंड कांस्टेबल (ई) चमकौर सिंह के सिर के पीछे से निकल गई और खिड़की के कांच में लगी जिससे कांच के टुकड़े फर्श पर बिखर गए। दूसरे डाकू ने ऊपर से एक गोली चलाई और वह भी चमकौर सिंह को नहीं लगी। साथ ही पीएचजी हरदेव पर भी गोली चलाई गई पर सौभाग्य से वे भी बच गए। हैंड कांस्टेबल (ई) चमकौर सिंह ने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक लुटेरे को पकड़ लिया और उससे भिड़ गए। अंत में हैंड कांस्टेबल (ई) चमकौर सिंह ने अपने साथियों की मदद से सभी लुटेरों को पकड़ लिया और 28,61,770/- रु. की लूटी गई राशि को भी बरामद कर लिया।

इस डकैती-रोधी कार्रवाई के दौरान हैंड कांस्टेबल (ई) चमकौर सिंह को गंभीर चोटें आई और कुछ घाव हो गए। यह जानते हुए भी कि लुटेरों

के पास आधुनिक हथियार हैं और बात करने के लिए वाकी-याकी सेट हैं, हैड कॉस्टेबल (ई) चमकौर सिंह हताश नहीं हुए। इस मुठभेड़ के चरम के दौरान निरीक्षक गुरजीत सिंह की कमान में पुलिस की एक टुकड़ी भी वहां पहुंच गई और उनके अत्यधिक सफल कार्य के लिए हैड कॉस्टेबल (ई) चमकौर सिंह की पीठ थपथपाई। इन दुस्साहसियों की तलाशी लेने पर उनसे 60 जिंदा कारतूसों के साथ दो पिस्टल, चिंगारी और आग के गोले निकालने वाला एक अत्यधुनिक मैकेनिकल उपकरण और खाली कारतूस बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में श्री चमकौर सिंह, हैड कॉस्टेबल, ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 06.05.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 75-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

- नाम और रैंक
- सर्वश्री
- 1. प्रवीण कुमार त्रिपाठी,
पुलिस अधीक्षक
- 2. सुमित कुमार,
उप प्रभागीय पुलिस अधिकारी
- 3. तपस घोष,
कॉस्टेबल
- 4. बापी सिन्हा,
कॉस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 24.11.2011 को श्री प्रवीण कुमार त्रिपाठी, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, पश्चिम मिदनापुर और श्री आलोक राजोरिया, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक (आपरेशन), झारग्राम को जामबानी पुलिस स्टेशन के अंतर्गत खुशाबानी जंगल क्षेत्र में और इसके आस-पास सीपीआई (माओवादी) के शीर्ष पोलित व्यूगों के सदस्य और उसके हथियारबंद दल की सूचना मिलने पर उन्होंने उनके छिपने के स्थान की टोह ली। टोह के दौरान, उन्होंने अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालते हुए, भारी मात्रा में बिछाई सुरंगों वाले जंगल क्षेत्र को पार किया जिस पर पूर्ण रूप से हथियारबंद माओवादी समूहों का कब्जा था।

क्षेत्र की टोह लेने के बाद, उन्होंने श्री सुमित कुमार आईपीएस, एसडीपीओ, झारग्राम और 207 कोबरा बटालियन के अधिकारियों के साथ श्री विनीत कुमार गोयल, आईपीएस, डीआईजी मिदनापुर रेंज के नेतृत्व में सावधानीपूर्वक

एक तुरंत कार्रवाई की योजना बनाई। योजना बनाने के बाद, विनीत कुमार गोयल, आईपीएस ने क्षेत्र, जोखिम और हथियारबंद कैडरों के पास हथियार और गोला-बारूद आदि के संबंध में संयुक्त बलों को संक्षेप में बताया।

योजना के अनुसार, विनीत कुमार गोयल, आईपीएस और प्रवीण कुमार त्रिपाठी, आईपीएस ने पूरा नियंत्रण स्थापित करके दलों के साथ बुरिशोल जंगल के पास लक्षित छिपने के स्थान की ओर युक्तिपूर्वक बढ़े। अपने संबंधित बिन्दुओं पर पहुंचने के बाद दलों ने क्षेत्र को घेर लिया।

अपराह्न लगभग 16:30 बजे जब आलोक राजोरिया, आईपीएस के नेतृत्व वाला हमला दल लक्षित छिपने के स्थान के समीप था, तब 12-15 हथियारबंद कैडरों ने अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी और ग्रेनेड फेंके। इस पर कॉस्टेबल तपस घोष, डीएपी झारग्राम, एसी नागेन्द्र सिंह, एसी बिरेन्द्र कुमार सिंह, कॉस्टेबल/जीडी दीपक कुमार और आलोक राजोरिया, आईपीएस के नेतृत्व वाली पूरी 207 कोबरा बटालियन ने अपनी जान को जोखिम में डालकर विशिष्ट साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए और गोलीबारी करके आगे बढ़ने के तरीकों को अपनाते हुए आगे बढ़े और सशस्त्र कैडरों द्वारा चलाई गई गोलियों और उनके द्वारा फेंके गए ग्रेनेड स्पिलिंटरों के बीच गोली चलाई।

इस बीच कुछ सशस्त्र कैडरों ने जंगल क्षेत्र के अन्य भागों में तैनात दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। गोलीबारी के बीच, विनीत कुमार गोयल और प्रवीण कुमार असीम साहस का प्रदर्शन करते हुए जंगल की सीमा में घुटनों के बल चले और सशस्त्र कैडरों को पकड़ने के उद्देश्य से उनकी ओर आगे बढ़े। उन्होंने साहसिक नेतृत्व और सर्वोच्च पेशेवर दक्षता प्रदर्शित करते हुए न केवल सशस्त्र कैडरों का तेजी से पीछा किया जो पास के बुरिशोला गांव में जाने के लिए विवश हो गए, बल्कि पुलिस की ओर से किसी क्षति/हताहत को रोकने के लिए सम्पूर्ण कार्रवाई के दौरान अन्य दलों से समन्वयन, बातचीत और मार्गदर्शन भी करते रहे। इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप कुछ हथियारबंद कैडरों को पकड़ा गया।

दूसरी ओर, सुमित कुमार आईपीएस और कॉस्टेबल बापी सिन्हा ने हथियारबंद कैडरों की भारी गोलीबारी का सामना करते हुए, अनुकरणीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए दल के सदस्यों की जान बचाने और हथियारबंद कैडरों को पकड़ने के उद्देश्य से हथियारबंद कैडरों पर गोलियां चलाई जिससे हथियारबंद कैडरों को पीछे हटना पड़ा।

गोलीबारी, जो आधा घंटा तक चली, के बाद क्षेत्र की तलाशी के दौरान हाथ में एके-47 के साथ जमीन पर पड़ा हुआ एक शव मिला [बाद में इसकी पहचान सीपीआई (माओवादी) के शीर्ष पोलित व्यूगों के सदस्य के रूप में हुई] और तलाशी करने के दौरान पास में ही एक एक्सीम राइफल, नगदी वाला एक बैग, माओवादी साहित्य, हार्ड डिस्क और अन्य सामग्रियां भी पाई गई।

सम्पूर्ण कार्रवाई में, कट्टर माओवादीयों की भारी गोलीबारी और अपनी जान को खतरा होने के बावजूद उपर्युक्त अधिकारियों और कार्मिकों ने अत्यधिक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अनुकरणीय साहस और उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता, वीरता, कर्तव्यनिष्ठा, जोखिमभरी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में धैर्य पर नियंत्रण का प्रदर्शन किया और वामपंथी उग्रवाद के विरुद्ध लड़ाई में प्रेरणादायक सफलता प्राप्त की। उपर्युक्त कार्मिकों की साहसिक कार्रवाई

के परिणामस्वरूप पश्चिम बंगाल में वामपंथी उग्रवाद को बड़ा झटका लगा है जिससे व्यवस्था और शांति का माहौल आरंभ हुआ है।

बरामदगी:—

1.	एके-47 राइफल जिसकी आयुधशाला संख्या केटी-435182 है	01
2.	छदमावरण रंग का सूती गोला-बारूद थैली	01
3.	छोटा काले रंग का कई जेबों वाला चैन लगा रेक्सिन का बैग (जिसमें हार्ड डिस्क, पेनड्राईव और माओवादी साहित्य है)	
4.	मोटोरोला वायरलेस हैंड सेट	01
5.	क्षतिग्रस्त स्थिति में 500 जीबी का हार्ड डिस्क स्टोर जेट	01
6.	क्षतिग्रस्त स्थिति में 320 जीबी का हार्ड डिस्क सीगेट	01
7.	टूटी हुई सी.डी.	01
8.	पैसिल टार्च लाइट (काले रंग की)	01
9.	सैमसंग मोबाइल फोन (काले रंग का)	01
10.	नोकिया मोबाइल फोन (काले रंग का)	01
11.	प्लास्टिक के पैकेट में यू एस बी कार्ड	01
12.	डाटा कार्ड	04
13.	मोबाइल चिप्स	14
14.	रिलायन्स मोबाइल सिमकार्ड	01
15.	बी.एस.एन.एल. मोबाइल सिम कार्ड	01
16.	4 जी.बी. की डाटा ट्रैवेलर पेन ड्राइव	01
17.	कार्ड रीडर जेम्बोनिक	01
18.	पैकेट डायरी	01
19.	पुलथू, ऑयल बोतल, रुई के टुकड़ों वाली एक प्लास्टिक की पैकेट	01
20.	सुनहरे रंग के कवर वाला चश्मा	01
21.	05 नैथ्रालिन गोलियों वाला प्लास्टिक का पैकेट	01
22.	इयूरोसेल बैटरी (छोटी)	01
23.	बाल पेन	04
24.	थर्मोमीटर	01
25.	जिलेट ब्लेड	04
26.	जिलेट रेजर	01
27.	कैंची (छोटी)	01
28.	लोटस मीडिया निर्मित सीडी	01
29.	विभिन्न मूल्य वर्ग की कुल 84,535/- रु. की नगदी	

30. स्थिर बट संख्या एस एपी/8-31 की एके-47 राइफल, आयुधशाला संख्या बीई-445317 स्लिंग लगी हुई, चेम्बर में 7.62 एम एम की एक राउंड जिंदा गोली एक राउंड और मैगजीन में 7.62 एम एम की एक राउंड जिंदा गोली भरी हुई

31. 7.62 एम एम की खाली गोली 02

32. सफेद रंग की जरिकन 01

33. एक्सटेंशन कार्ड के साथ नोबैक्स कंपनी की हियरिंग-एड मशीन 01

34. चमड़े की चप्पल 01

35. खून के धब्बे लगी हुई एक सैमसंग की मोबाइल बैटरी जिसका नम्बर एबी-553446 बीयू है 01

इस मुठभेड़ में सर्वश्री प्रवीण कुमार त्रिपाठी, पुलिस अधीक्षक, सुमित कुमार, उप प्रभागीय पुलिस अधिकारी, तपस घोष, कांस्टेबल और बापा सिन्हा, कांस्टेबल ने वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपारायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 24.11.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 76-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

श्री जेवीयर किन्डो
कांस्टेबल (मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

28 बटालियन बी एस एफ का सामरिक मुख्यालय लक्ष्मीपुर, जिला-कोरापुट (ओडिशा) में स्थित है, जो एक अति संवेदनशील वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र है।

दिनांक 01 सितम्बर, 2012 को प्रातः लगभग 8:00 बजे कंपनी ऑपरेटिंग बेस (सीओबी), पल्लुर, एक्स-28 बटालियन, बीएसएफ नारायणपट्टना, कोरापुट के कांस्टेबल धीरेन कुमार साहू और कांस्टेबल जेवीयर किन्डो, कंपनी कमांडर श्री पी. के. भुटका, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व वाली 40 सदस्यों वाली सशक्त इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) जांच दल का हिस्सा थे, जिसे सामान्य क्षेत्र पतमपुन्डा, पुलिस स्टेशन-नारायणपट्टना में दबे हुए आईईडी की तलाश करने, पता लगाने और उसे नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था।

कांस्टेबल जेवीयर किन्डो को फ्रन्ट स्काउट के रूप में तैनात किया गया था, जो एक महत्वपूर्ण पोजीशन है, जिसे सामान्यतया दल के सबसे सक्रिय, सतर्क और सच्चे सदस्य को सौंपी जाती है और इस कार्य की अपेक्षा काफी उत्तरदायित्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण है। कांस्टेबल जेवीयर किन्डो हमेशा इस

पोजीशन के लिए इच्छुक रहे हैं। वे डीप सर्च मेटल डिटेक्टर (डीएसएमडी) से जमीन में दबी बारूदी सुरंग का पता लगाने के लिए सावधानीपूर्वक सड़क के तंग गंडे रास्ते के ऊपरी भाग की स्कैनिंग कर रहे थे। गंडे रास्ते के एक और 20 फुट ऊंची ढलान वाली खड़ी पहाड़ी थी और दूसरी ओर गहरा नाला था। आगे बढ़ना बड़ा कठिन था।

प्रातः: लगभग 09.10 बजे कांस्टेबल जेवीयर किन्डो ने अपने मेटल डिटेक्टर पर एक हल्का सिग्नल देखा। उहोंने तुरंत संदिग्ध आईईडी के बारे में गश्ती दल को सूचित किया। क्षेत्र की स्कैनिंग करते समय सतर्क कांस्टेबल जेवीयर किन्डो ने पहाड़ी पर हथियारों के साथ पोजीशन संभाले कुछ आतंकवादियों को देखा, जो शायद बीएसएफ के गश्ती दल पर घात लगाकर हमला करने का इंतजार कर रहे थे। कांस्टेबल जेवीयर किन्डो ने विशुद्ध साहस का प्रदर्शन किया और शीघ्र कार्रवाई करते हुए आतंकवादियों की ओर एक ग्रेनेट फेंका तथा इसके साथ ही उन पर गोलियाँ चलाई, जो कांस्टेबल जेवीयर किन्डो की आक्रामक कार्रवाई से पूरी तरह अचंभित हो गए। साथ ही, वे अपने दल को सतर्क करने के लिए जोर से चिल्लाये भी “घाट है”। कांस्टेबल धीरेन कुमार साहू ने देखा कि कांस्टेबल जेवीयर किन्डो द्वारा चलाई गई गोली से एक उग्रवादी घायल हो गया है। उग्रवादियों ने इस अचानक हमले और बीएसएफ के गश्ती दल द्वारा मारे जाने के डर से सड़क के गंडे रास्ते पर लगाए गए 20 किलोग्राम के भारी आईईडी का विस्फोट कर दिया।

विस्फोट के प्रभाव के सबसे निकट होने के कारण कांस्टेबल जेवीयर किन्डो ने बड़ी बहादुरी के साथ कर्तव्य का पालन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। विस्फोट इतना प्रभावशाली था कि कांस्टेबल धीरेन कुमार साहू, जो उनके साथी थे, विस्फोट से बने ज्ञालामुखी के चपेट में आ गए और वे मलबे में दब गये, जिससे वे आगे कार्रवाई नहीं कर सके। उग्रवादी हया दिए गए थे और भागने पर मजबूर हो गए थे क्योंकि वे बहादुर और सतर्क स्काउट जेवीयर किन्डो के हाथों हताहत हो गए थे। पहाड़ी की तलाशी के दौरान जहां आतंकवादियों ने स्थिति संभाली हुई थी, विस्फोट स्विच तथा कामचलाऊ कैमरा फ्लैश के साथ-साथ खून के धब्बों की घसीटने की स्पष्ट लकीरें मिलीं।

कांस्टेबल जेवीयर किन्डो ने आईईडी की जांच करने वाले कम से कम 40 अन्य सदस्यों की जान बचाते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। वे सभी कार्रवाइयों में फ्रेंट गाइड वाली पोजीशन के लिए हमेशा स्वेच्छा से आगे आते थे। वे अपनी सामान्य अवधि पूरी करने के बाद भी उग्रवादियों से प्रभावित क्षेत्र में रहने के लिए स्वेच्छा से आगे आते थे। कांस्टेबल जेवीयर किन्डो ने बल की उत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप उच्च कोटि के निःस्वार्थ जोश, अनुकरणीय साहस और वीरता का प्रदर्शन किया। घटनास्थल से 200 मीटर (लगभग) लचीला (फ्लोक्सिबल) तार, 01 कैमरा फ्लैश और 04 पैसिल सेल बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री जेवीयर किन्डो, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 01.09.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 77-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक

(सर्वश्री)

- अवीजो अंगामी, सहायक कमांडेंट
- अनिल कुमार, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 17.10.2011 को पूर्वी गारो हिल्स के विलियम नगर पुलिस स्टेशन के अंतर्गत नांगमंडलगरे के क्षेत्र में 15-20 खूंखार जीएनएलए कैडरों की उपस्थिति के बारे में पूर्वी गारो हिल्स, मेघालय के पुलिस अधीक्षक से प्राप्त सूचना के आधार पर उक्त उग्रवादियों को निष्क्रिय करने की योजना बनाने के लिए पुलिस अधीक्षक, पूर्वी गारो हिल्स के मुख्यालय में एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में 120 बटालियन, 210 कोबरा और स्थानीय पुलिस के स्वात (एसडब्ल्यूएटी) दल के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। योजना पर विचार करने के बाद विभिन्न दल, दो गई जिम्मेदारी के अपने निर्दिष्ट क्षेत्र की ओर बढ़े।

स्थानीय पुलिस के स्वात दल के साथ-साथ श्री अवीजो अंगामी, सहायक कमांडेंट की कमान में 120 बटालियन का क्यूएटी दल भी लक्ष्य क्षेत्र की ओर बढ़ा। लक्ष्य क्षेत्र में पहुंचने पर 210 कोबरा दल ने योजना के अनुसार, क्षेत्र में अवरोध (कटऑफ) लगा दिए। 120 बटालियन क्यूएटी दल और स्थानीय पुलिस का स्वात दल नांगमंडलगरे क्षेत्र की ओर बढ़ा और क्षेत्र की तलाशी आरम्भ कर दी। दिनांक 18.10.2011 को लगभग 11:00 बजे तलाशी के दौरान 120 बटालियन के क्यूएटी दल को जीएनएलए उग्रवादियों की भारी गोलीबारी का सामना करना पड़ा।

दल ने तुरंत स्थिति संभाली और गोलीबारी का जवाब दिया। चूंकि उग्रवादी ऊपरी क्षेत्र से गोलीबारी कर रहे थे, इसलिए श्री अवीजो अंगामी ने उग्रवादियों को धेरे से बाहर निकलने से रोकने के लिए क्यूएटी और स्वात दलों को पुनः व्यवस्थित किया और स्वयं कांस्टेबल/जीडी अनिल कुमार के साथ रेंगकर उग्रवादियों के पीछे की ओर गए। लगभग 30 से 32 मीटर रेंगने के बाद श्री अवीजो अंगामी, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी अनिल कुमार काफी नजदीक से भारी हथियारबंद खूंखार आतंकवादी को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। आतंकवादी ने उनकी उपस्थिति को देखकर श्री अवीजो अंगामी और कांस्टेबल/जीडी अनिल कुमार पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, उग्रवादी की भारी गोलीबारी से हतोत्साहित न होकर, असाधरण धैर्य और सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए श्री अवीजो अंगामी और कांस्टेबल/जीडी अनिल कुमार, दोनों ने जवाबी गोलीबारी की जिससे हमला करने वाला हथियारबंद आतंकवादी घटनास्थल पर ही मारा गया। बाद में मारे गए आतंकवादी की पहचान बारसिस आर. मारक उर्फ दिलसांग, डिटी कमांडर, विलियम नगर के रूप में हुई।

इस कार्रवाई में, श्री अवीजो अंगामी, सहायक कमांडेंट, 120 बटालियन ने असाधारण नेतृत्व क्षमता और योजना का प्रदर्शन किया और अपनी जान को गंभीर जोखिम के बावजूद आगे बढ़कर कार्रवाई का नेतृत्व किया। इसके

साथ-साथ, कांस्टेबल/जीडी अनिल कुमार ने महान साहस और सूझबूझ का प्रदर्शन किया और अपनी जान को जोखिम में डालकर अपने कर्तव्यों का पालन किया।

इस मुठभेड़ में निम्नलिखित हथियार/गोला-बारूद बरामद हुए :—

(क) एके-56 राइफल 7.62 एम एम .39 एम एम	01
(ख) मैगजीन एके-56 सीरीज	03
(ग) चीन में निर्मित 9 एम एम पिस्टल	01
(घ) चीन में निर्मित 9 एम एम पिस्टल की मैगजीन	01
(ङ) 7.62 एम एम x .39 एम एम की गोली	122
(च) 9 एम एम की गोली	09
(छ) बैटरी लगा हुआ जापान निर्मित वाकी-टाकी सेट	01
(ज) कवर के साथ जापान निर्मित वाकी-टाकी सेट	01
(झ) संगीन	01
(ञ) कलाई घड़ी	01
(ट) मारे गए जीएनएलए कैडर का पहचान पत्र	01

इस मुठभेड़ में सर्वश्री अवीजो अंगामी, सहायक कमांडेंट और अनिल कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च दोषित की कर्तव्यप्राप्तयता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 18.10.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 78—प्रेज/2013, राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

- नाम और रैंक
- सर्वश्री
- 1. नौशाद अली,
निरीक्षक
- 2. भगवाना राम थोरी,
निरीक्षक
- 3. एम. सी. रायलू,
हेड कांस्टेबल
- 4. टी. रामास्वामी,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13.03.2011 को 14:00 बजे गांव-डरमाहा, पुलिस स्टेशन-केशरिया में माओवादियों के इकट्ठा होने की सूचना प्राप्त होने पर निरीक्षक/

जीडी भगवान राम थोरी की कमान में दो पलाटूँवाला सी/153 बटालियन, सीआरपीएफ का एक दल पुलिस स्टेशन के केशरिया की ओर गया जहां एसटीएफ के उप-पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार ने गांव-डरमाहा में छापा मारने और तलाशी की कार्रवाई करने के लिए सीआरपीएफ, सिविल पुलिस, एसएपी, बीएमपी और एसटीएफ के जवानों को बताया जहां 30-35 हथियारबंद माओवादी कथित रूप से छिपे हुए थे। टुकड़ियां डरमाहा गांव में डूबी के लिए चलीं और वाहनों से कस्बा टोली पहुंची, जहां से वे पैदल गांव-डरमाहा की ओर बढ़ीं। निरीक्षक भगवाना राम थोरी की कमान के तहत सी/153 बटालियन द्वारा दल का नेतृत्व किया गया। जब निरीक्षक भगवाना राम थोरी की कमान में दल गांव की धेरा-बंदी कर रहा था, तब नक्सलवादियों, जिन्होंने गांव के बीच में शरण ले रखी थी, ने यह अहसास होने पर कि उन्हें धेरा जा रहा है, टुकड़ियों पर अंधाधुंध गोलीबारी आरम्भ कर दी। सभी दल पारस्परिक सहायता समूह में कुशलतापूर्वक चलते हुए और वायरलेस पर एक दूसरे के सम्पर्क में रहते हुए 15:00 बजे गांव-डरमाहा पहुंचे। सीआरपीएफ/पुलिस ने तुरंत जमीन पर पोजीशन ले ली और गोली न चलाने तथा आत्मसमर्पण करने हेतु जोर से चिल्लाए। तथापि, नक्सलवादियों ने सुरक्षा कार्मिकों को मारने और उनके हथियार लूटने के इरादे से टुकड़ियों की ओर गोलीबारी जारी रखी जिससे टुकड़ियां आत्मरक्षा में नक्सलवादियों की ओर गोलीबारी करने के लिए मजबूर हो गई। पुलिस कार्मिकों के साथ-साथ निरीक्षक/जीडी भगवाना राम थोरी की कमान में सीआरपीएफ दल ने धेरों को और मजबूत करना जारी रखा। निरीक्षक/जीडी भगवाना राम थोरी द्वारा मोबाइल फोन पर अदयतन सूचना दिए जाने पर 153 बटालियन, सीआरपीएफ के श्री वी. पी. सिंह द्वितीय कमान अधिकारी क्यूएटी के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। हालांकि नक्सलियों ने टुकड़ियों की ओर गोलीबारी जारी रखी जिसके एसएपी जवान कांस्टेबल शिवसरन सिंह घायल हो गए। हेड कांस्टेबल/जीडी एस. सी. रायलू, हेड कांस्टेबल/जीडी टी. रामास्वामी, कांस्टेबल/जीडी धर्मेन्द्र कुमार और कांस्टेबल/ड्राइवर मनोज कुमार के दल ने तुरंत कवर गोलीबारी की ओर घायल एसएपी जवान को बचाया जिसे उपचार के लिए पीएचसी, चकिया भेज दिया गया। गंभीर स्थिति और लगातार गोलीबारी से भयभीत न होकर निरीक्षक/जीडी भगवाना राम थोरी की कमान में सीआरपीएफ दल ने अधिक व्यक्तिगत जोखिम उठाया जिसमें निरीक्षक/जीडी ने अनुवरणीय नेतृत्व गुण का प्रदर्शन किया। पूर्ण समर्पण और बलिदान की शानदार भावना का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने आगे बढ़कर दल का नेतृत्व किया और धेराबंदी को कसा जिसके बाद नक्सलियों की ओर भारी गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप नक्सलियों को घटना स्थल से भागने का मौका नहीं मिला।

इसी बीच, पुलिस अधीक्षक, मोजिहारी घटनास्थल पर पहुंचे और नक्सलियों के यथा संभव नजदीक जाने के लिए बीपी वाहनों में दो दल बनाने का निर्णय लिया। एक जिप्सी में पुलिस अधीक्षक, मोतिहारी के साथ हेड कांस्टेबल/जीडी एमसी रायलू, हेड कांस्टेबल/जीडी टी. रामास्वामी, कांस्टेबल/जीडी धर्मेन्द्र कुमार और कांस्टेबल/ड्राइवर मनोज कुमार सवार हुए और दूसरी जिप्सी में सिविल पुलिस/एसटीएफ कार्मिक अपनी संबंधित पोजीशन लेने के लिए नक्सलियों की ओर बढ़े, स्थिति का जायजा लिया और नक्सलियों की पोजीशन का पता लगाया तथा, नक्सलियों ने बी. पी. जिप्सियों की पोजीशन की ओर भारी गोलीबारी जारी रखी जिससे उपयुक्त कवर लेने में कठिनाई आई। उस समय हेड कांस्टेबल/जीडी टी. रामास्वामी ने नक्सलियों की संभावित पोजीशन की ओर एक हथगोला फेंका जिसके परिणामस्वरूप एक या इससे अधिक नक्सली मारे गये जिसके कारण

नक्सलियों ने कुछ देर के लिए गोलीबारी बंद कर दी। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए हेड कांस्टेबल/जीडी एम. सी. रायलू हेड कांस्टेबल/जीडी टी. रामास्वामी और कांस्टेबल/जीडी धर्मेन्द्र कुमार भी उनके साथ आ गए और अतिरिक्त परिश्रम करते हुए और अपनी जान को जोखिम में डालकर वे गोलीबारी की दिशा की ओर रेंगकर आगे बढ़े ताकि नक्सलियों की पोजीशन का ठीक-ठीक पता लगाया जा सके। गोलियों के पूर्ण बराज का सामना करते हुए उन्होंने असाधारण साहस का प्रदर्शन किया और उनकी वीरतापूर्ण कार्रवाई की वजह से ही स्थिति सुरक्षा बलों के अनुकूल हो गई जिससे दो और नक्सली मारे गए। सम्पूर्ण कार्रवाई के दौरान माओवादियों की ओर से भारी गोलीबारी के बावजूद दबाव के तहत उन्होंने सार्थक महान साहस, उत्कृष्ट बहादुरीपूर्ण कार्य और दृढ़ता का प्रदर्शन किया।

इतने में, श्री के. के. शर्मा, डीआईजी (आपरेशन) मुजफ्फरपुर बी/153 बटालियन, सीआरपीएफ के साथ और श्री बी. पी. सिंह, द्वितीय कमान अधिकारी, यूनिट क्यूएटी के साथ घटनास्थल पर पहुंचे, स्थिति व कमान को संभाला और घेराबंदी को सुदृढ़ किया। वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते श्री के. के. शर्मा, डीआईजी ने तुरंत सारी स्थिति का मूल्यांकन किया और उसी समय एक दक्ष और प्रभावी कार्ययोजना तैयार की तथा उन स्थानों पर अतिरिक्त सतर्कता और चौकसी बरतने के लिए पुलिस दलों को तैनात किया, जिसका नक्सलवादी घेराबंदी से निकलने के लिए उपयोग कर सकते थे। श्री के. के. शर्मा, डीआईजी (आपरेशन) मुजफ्फरपुर ने व्यक्तिगत रूप से सभी स्थानों का दौरा किया और स्थिति का मूल्यांकन/विचार विमर्श किया और समय-समय पर जवानों को जरूरी निर्देश जारी किए जिसमें इस बात पर बल दिया गया कि माओवादी महाजाल से भागने नहीं चाहिए। उन्होंने पुलिस दलों और माओवादियों के बीच निरंतर भारी दुतरफा गोलीबारी के सामने रहकर कई बार अपनी जान को खतरे में डाला। लगभग पूरे घटनाक्रम के दौरान, श्री के. के. शर्मा, डीआईजी (आपरेशन) मुजफ्फरपुर ने भारी गोलीबारी के बीच अपनी जान की परवाह न करते हुए कई बार झुककर और रेंगकर चले और अपने साथियों तथा उनके विभिन्न ठिकानों तक पहुंचकर उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित किया। उनकी अनुकरणीय नेतृत्व क्षमता ने निःसंदेह मुद्दे का समाधान किया।

लगभग 00:15 बजे श्री के. के. शर्मा, डीआईजी (आपरेशन) मुजफ्फरपुर ने सीआरपीएफ कार्मिकों को क्षेत्र में रोशनी करने के लिए दो पैरा बम चलाने का आदेश दिया ताकि नक्सलियों की पोजीशन का पता लग सके। निरीक्षक/जीडी नौशाद अली, हेड कांस्टेबल/जीडी ओ. एन. शुक्ता ने एक एक पैरा बम फेंका और कांस्टेबल/जीडी के बाबू ने नक्सलियों की संदिग्ध पोजीशन की ओर एक हैंड ग्रेनेड फेंका। इसी बीच सीआरपीएफ के अधिकारी घेराबंदी की परिधि में बीपी जिप्सी/बंकर में गश्त लगाते रहे और टुकड़ियों को सावधान और सतर्क रहने के लिए लगातार प्रोत्साहित करते रहे। इसी बीच, लगभग 0300 बजे नक्सलियों ने पूर्वी ओर से घेराबंदी तोड़ने का साहसिक प्रयास किया। तथापि, निरीक्षक/जीडी नौशाद अली, जिन्होंने इस गतिविधि को देखा, आगे बढ़े और नक्सलवादियों को चुनौती दी तथा आग में अपनी जान को जोखिम में डालकर नक्सलवादियों की ओर गोलीबारी की। उनमें से एक नक्सली गोलीबारी में मारा गया और शेष नक्सली तुरंत पीछे हट गए।

एक बार फिर, सुबह 0530 बजे तलाशी आरंभ होने से पहले श्री के. के. शर्मा, डी आई जी (आपरेशन) ने टुकड़ियों को, जहां तक संभव हो, नक्सलियों को जिन्दा पकड़ने/गिरफ्तार करने के लिए अधिक सावधान रहने के बारे में

संक्षेप में बताया। एक घर में छिपे नक्सलियों की ओर अंधाधुंध गोलीबारी की। प्रभावी रूप से जवाबी कार्रवाई करते हुए, टुकड़िया अनुकरणीय साहस का शानदार प्रदर्शन करके और अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालकर नक्सलियों की ओर आगे बढ़ी जिससे वे अपने हथियारों के साथ आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर हो गए।

निरीक्षक/जीडी नौशाल अली, निरीक्षक/जीडी भगवाना राम थोरी, हेड कांस्टेबल/जीडी एम. सी. रायलू और हेड कांस्टेबल टी. रामास्वामी द्वारा किए गए अनुकरणीय समर्पण का विशेष उल्लेख करना आवश्यक है क्योंकि उन्होंने, उन्हें दिए गए आदेश का पालन करने के लिए अपने दिमाग, प्रशिक्षण और अनुभव का योग्यतापूर्वक उपयोग किया तथा अपनी जान की परवाह न करते हुए और अपनी जान को जोखिम में डालकर नक्सलवादियों को निष्क्रिय करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम किया और अत्यधिक जोखिम उठाया। उन्होंने असाधारण वीरता और महान साहस का प्रदर्शन किया जिसे कुशलतापूर्वक की गई कार्रवाई के दौरान टुकड़ियों का मनोबल बढ़ाने और एक उदाहरण स्थापित करने के लिए याद किया जाएगा।

की गई बरामदगी:

1. मारे गए नक्सलियों के शव	06
2. पकड़े गए नक्सलवादी	10
3. 7.60 एम एम, एस एल आर राइफल	05
4. .303 बोल्ट एक्शन राइफल	09
5. देशी पिस्टल	01
6. 7.62 एम एम, एसएलआर की खाली मैगजीन	11
7. .303 एम एम बोल्ट एक्शन की खाली मैगजीन	11
8. 7.62 एम एम की उपयोग न की गई गोली	695 गोली
9. .303 एम एम के उपयोग न की गई गोली	733 गोली
10. 7.62 एम एम का खाली खोखा	56
11. .303 एम एम का खाली खोखा	03
12. 7.60 एम एम x 39 एम एम के खाली खोखे	02
13. .303 एम एए गोला बारूद का चार्जर किलप	06
14. वाकी-टाकी सेट	02
15. 03 बैटरी वाली टार्च	01
16. इलेक्ट्रोनिक डिटोनेटर	01
17. इलेक्ट्रोनिक चार्जर	01
18. लेजर माइन हेतु फ्लैश	01
19. नगदी के साथ पर्स	2,000/- रु.
20. चिन्दी कपड़ा	25 ग्राम
21. नोट बुक	02
22. पाकेट डायरी	02
23. कम्प्यूटर बुक	01

24. सिविल ड्रेस	19 जोड़ी
25. काली यूनिफार्म	10 जोड़ी
26. काली बैल्ट	04
27. रेडियो	03
28. फुलथू	02
29. विसल के साथ लाइन यार्ड	02
30. आई स्केच	04
31. मोबाइल फोन	07
32. सिम कार्ड	03
33. बड़ी संख्या में दैनिक उपयोग वाले सामान	

इस मुठभेड़ में सर्वश्री नौशाद अली, निरीक्षक, भगवाना राम थोरी, निरीक्षक, एम. सी. रायलू, हेड कांस्टेबल और टी. रामास्वामी, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भूता भी दिनांक 14.03.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 79-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैक

सर्व/श्री

1. राणा नवीन,
सहायक कमांडेट
2. बृजेश कुमार,
कांस्टेबल
3. अशोक कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 27.08.2010 को उमाकांत महतो के नेतृत्व में 10 से 15 भारी हथियारबंद माओवादियों के एक दल की उपस्थिति के संबंध में एक खुफिया जानकारी प्राप्त हुई जो सुरक्षा बलों की सैन्य टुकड़ियों/स्थापनाओं पर हमला करने की योजना बना रहा था, इसलिए, माओवादियों की योजनाओं को विफल करने के लिए जिला पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल के पुलिस स्टेशन झारग्राम के अंतर्गत पतासिमुल और जोरानंद गांवों के निकट घने जंगल वाले क्षेत्रों में 205 कोबरा के चार दलों द्वारा विशेष कार्रवाई आरम्भ की गई।

अपनी व्यापक कार्रवाई संबंधी योजना के भाग के रूप में, दलों ने लक्ष्य क्षेत्रों में विशिष्ट बिन्दुओं पर रणनीतिक घात लगाकर हमले की तैयारी की। दिनांक 27.08.2010 को लगभग 01.30 बजे ऊपर उल्लिखित कोबरा की सैन्य टुकड़ी संख्या 12 के स्काउट ने आसपास माओवादियों के एक समूह की हलचल देखी। आगे आने वाले माओवादियों का सामना करने के लिए दल के कमांडर श्री राणा नवीन, सहायक कमांडेट ने आस-पास की अन्य कोबरा सैन्य टुकड़ियों को सूचित करने के अलावा अपने दल को तुरन्त सबसे सुरक्षित सामरिक स्थल पर पुनः तैनात किया।

तथापि रणनीतिक पुनः तैनाती माओवादियों को उनकी उपस्थिति का पता लगाने से नहीं रोक सकी और उन्होंने तुरन्त अलग-अलग दिशाओं से कोबरा दल पर भारी गोलीबारी आरम्भ कर दी। पहले से ही कठिन परिस्थिति को और जटिल बनाने के लिए माओवादियों ने कोबरा की सैन्य टुकड़ियों की बीच डर की भावना पैदा करने लिए चिल्लाकर नरेबाजी आरम्भ कर दी।

तेजी से बदलती हुई परिस्थिति में अब दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता थी। दोनों ओर से होने वाली लंबी गोलीबारी में फंसने के बदले, दल के कमांडर ने अधिक अनुकूल दृष्टिकोण अपनाने का निर्णय लिया। दल की वर्तमान स्थिति की सावेक्ष सुरक्षा को छोड़ते हुए श्री राणा नवीन ने आगे बढ़ने और माओवादी पोजीशनों पर किनारे से हमला करने का निर्णय लिया। अपने शेष दल को उनकी संस्थापित पोजीशन में रखकर श्री राणा नवीन, कांस्टेबल/जीडी बृजेश कुमार और अशोक कुमार के साथ माओवादियों की ओर आगे बढ़े। दूश्यता की कमी और क्षेत्र के अवरोध का सामना करते हुए हमला करने वाला समूह बहादुरी से माओवादियों की ओर बढ़ा।

रणनीति में अचानक हुए परिवर्तन से माओवादी पूरी तरह आश्चर्यचकित रह गए। तथापि, अचानक कोबरा हमले की अधिकता को समझने में नाकामयाब माओवादियों ने अपनी लड़ाई को जारी रखा और कोबरा को आगे बढ़ने से रोकना जारी रखा। यद्यपि माओवादियों का आरम्भिक मुकाबला लगभग एक घंटे तक काफी दूढ़ लग रहा था तथापि, वह शीघ्र ही विफल हो गया। फिर भी माओवादी और दो घंटे तक रुक-रुक कर गोलीबारी करते रहे।

तथापि, श्री राणा नवीन, सहायक कमांडेट का दृढ़ हमला जमे हुए माओवादियों के लिए काफी अधिक था। तेजी से सवेरा होने के साथ उन्होंने पीछे हटने का निर्णय लिया। जबकि अधिकांश माओवादी घटनास्थल से भागने में सफल हो गए, तथापि बाद में की गई तलाशी में हथियार के साथ एक मृतक माओवादी का शव बरामद हुआ। बाद में मृतक माओवादी की पहचान उमाकांत महतो के रूप में हुई जो ज्ञानेश्वरी एक्सप्रेस के पटरी से उत्तरने (डिरेलमेंट) के मामले में मुख्य आरोपी था और सीबीआई द्वारा उसके नाम पर एक लाख रुपये के इनाम की घोषणा की गई थी।

बरामदगी : एक रिवाल्वर, तीन जिन्दा गोला-बारूद, एक चलाई गई खाली गोली, एक मोटर साइकिल, विभिन्न प्रकार के हथियारों के चालीस खाली कारतूस और माओवादी पोस्टर।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राणा नवीन, सहायक कमांडेट, बृजेश कुमार, कांस्टेबल और अशोक कुमार कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 27.08.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 80-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

नाम और रैंक	
सर्व/स्त्री	
1. प्रताप सिंह, उप-निरीक्षक	(मरणोपरांत)
2. सत्यबीर सिंह, हेड कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
3. देवानंद सिंह, हेड कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
4. गजेन्द्र सिंह, कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
5. दीपक चंद डेका, हेड कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
6. राधा किशन, कांस्टेबल	(मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 03.05.2011 को हरमर और गणेशपुर की पहाड़ियों में एक नक्सली दस्ते की उपस्थिति के संबंध में खुफिया जानकारी के आधार पर एफ/133 बटालियन के श्री आर. के. सिंह, सहायक कमांडेंट और ओसी पुलिस स्टेशन सेन्हा के नेतृत्व में सिविल पुलिस घटक के साथ एफ/133 बटालियन और जी/94 बटालियन का एक संयुक्त दल लोहार दगा से 04.30 बजे कार्रवाई के लिए चला। संयुक्त दल को सेन्हा पुलिस स्टेशन पर संक्षेप में बताया गया और वहीं पर प्रवेश करने के मार्ग और कार्रवाई की कार्य प्रणाली पर विचार-विमर्श किया गया और उसके बारे में निर्णय लिया गया। दल लगभग 09.00 बजे गणेशपुर गांव पहुंचा और बरास्ता छोटा गणेशपुर गांव कुछ पहाड़ियों की तलाशी करना और उसे पार करना आरम्भ किया। दल लगभग 10:55 बजे हरमर के जंगल क्षेत्र में पहुंचा। छोटा गणेशपुर गांव पार करने के बाद दल ने घने पेड़-पौधों वाले क्षेत्र में प्रवेश किया। तिराहे पर, जहां गांव चटकपुर की ओर से और गांव हरमर की ओर से रास्ते सेक की ओर जाने वाले रास्ते से मिलते हैं, दल का सामना एक दम्पति से हुआ जो लकड़ियां काट रहा था। उनकी उपस्थिति के बारे में पूछताछ करने के बाद और कुछ भी संदिग्ध न पाकर दल रास्ते पर सेक की ओर आगे बढ़ा। जैसे ही दल गांव हरमर के दक्षिण पूर्व में लंबे रास्ते पर गांव सेक की ओर बढ़ रहा था, जिसके दोनों ओर पहाड़ी क्षेत्र और इसके एकदम दाईं ओर झरना था, एक बड़े धमाके की

आवाज आई जिसके बाद दोनों दिशाओं, अर्थात् दक्षिण-पूर्व दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिम की ओर से दलों पर भारी गोलीबारी हुई। पूरा क्षेत्र धूल से ढक गया और कुछ समय पश्चात् जब धूल हटी तो सभी को रास्ते पर तथा रास्ते के निकट घायल अवस्था में पड़ा हुआ देखा गया। इन श्रृंखलाबद्ध धमाकों में अधिकांश कार्मिक उसके संघात में आ गए थे और गंभीर रूप से घायल हो गए थे। अग्रणी टुकड़ी के श्री आर. के. सिंह, सहायक कमांडेंट, बीच की टुकड़ी के हेड कांस्टेबल/जीडी सत्यबीर सिंह, हेड कांस्टेबल/जीडी डी. एन. सिंह और कांस्टेबल जीडी गजेन्द्र सिंह और पीछे की टुकड़ी के उप-निरीक्षक/जीडी प्रताप सिंह के अंग गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त थे क्योंकि उन्होंने आईडी के संघात पर पैर रख दिए थे। गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी संयुक्त दलों ने बहादुरी से नक्सलियों की गोलीबारी का जवाब दिया। गोलीबारी के दौरान बीच-बीच के माओवादियों ने जवानों को हथियार डालने का निर्देश देने के लिए सार्वजनिक सम्बोधन प्रणाली पर घोषणा आरम्भ कर दी। माओवादियों की योजना सभी दलों को मारने और उनके हथियार लूटने की थी। गोलीबारी के दौरान उप-निरीक्षक प्रताप सिंह, हेड कांस्टेबल/जीडी सत्यबीर सिंह, हेड कांस्टेबल/जीडी डी. एन. सिंह और कांस्टेबल/जीडी गजेन्द्र सिंह, हेड कांस्टेबल/जीडी डी. सी. डेका और कांस्टेबल/बीयूजी राधाकृष्णन ने अपनी पोजीशन को निरन्तर बदलते हुए रेंगकर नक्सली हमले का जवाब दिया और मुठभेड़ जारी रहने तक सहयोगियों को प्रेरित किया। उप-निरीक्षक/जीडी प्रताप सिंह, हेड कांस्टेबल/जीडी सत्यबीर सिंह, हेड कांस्टेबल/जीडी डी. सी. डेका, कांस्टेबल/बीयूजी राधाकृष्णन मुठभेड़ के जारी रहने तक नक्सलियों से लड़े और धमाके तथा गोली लगने से घायल होने की वजह से बहुत अधिक खून बह जाने के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया।

गंभीर रूप से घायल होने और अत्यधिक खून बह जाने और मौत का जोखिम होने के बावजूद संयुक्त दलों ने धैर्य नहीं खोया। वे एक दूसरे से बात करते रहे और नक्सलियों से लड़े और उन्हें परास्त कर दिया। अतिरिक्त सैन्य बल को पहाड़ी पर उस एकान्त स्थान पर पहुंचने में कुछ समय लगना था। दोनों ओर से गोलीबारी की प्रतिध्वनित होने वाली गूँज लड़ाई लड़ने वाले दलों को भी भयभीत करने के लिए पर्याप्त थी। नक्सली अपने सभी प्रयासों और अधिक अनुकूल पोजीशन में होने के बावजूद दलों के घायल होने पर भी उनके हथियार छिनने की अपनी घृणित योजना में सफल नहीं हो सके जैसा कि उन्होंने चिन्तननार (दांतेवाड़ा) में किया था। दलों ने ऐसी परिस्थिति में अतुल्य बहादुरी का प्रदर्शन किया और वीरता से लड़े तथा नक्सलियों को दूर रखा। आसूचना के बाद के ब्लौरों से पता चलता है कि नक्सलियों की यह कार्रवाई अभूतपूर्व थी और उन्होंने पहली बार एक साथ इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक युक्तियों का विस्फोट करने के लिए कोरडैक्स तार का उपयोग किया था। यद्यपि उन्होंने एक अत्यंत सतर्क योजना तैयार की थी लेकिन सैन्य टुकड़ियों की वीरतापूर्ण कार्रवाई से यह विफल कर दी गई।

घटनास्थल से निम्नलिखित सामान बरामद किए गए थे :

एसएलआर राइफल का खाली खोखा -- 01

एके-47 राइफल का खाली खोखे -- 14 और एक
जिंदा राउंड

इनसास राइफल का खाली खोखे -- 08

.303 राइफल के खाली खोखे	-- 28 और 05 मिस-
	फायर राउंड
.315 राइफल के खाली खोखे	-- 20
स्टील का टूट हुआ केन	-- 01
लोहे का केन	-- टूट हुआ टुकड़ा
लोहे की छड़	-- टूट हुआ टुकड़ा
आयरन बोल्ट	-- 03
100 मीटर के कवर तार के साथ भूरे रंग की केन	
लाल रंग का तार	-- 2.5 मीटर

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय प्रताप सिंह, उप-निरीक्षक, स्वर्गीय सत्यबीर सिंह, हेड कांस्टेबल, स्वर्गीय देवानंद सिंह, हेड कांस्टेबल, स्वर्गीय गजेन्द्र सिंह, कांस्टेबल, स्वर्गीय दीपक चंद डेका, हैड कांस्टेबल और स्वर्गीय राधा किशन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 03.05.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 81-प्रेज/2013, राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

नाम और रैंक	
सर्व/श्री	
1. राम सिंह सलाथिया,	(मरणोपरांत)
कांस्टेबल	
2. परवीण कुमार,	(मरणोपरांत)
कांस्टेबल	
3. बप्पादित्य मंडल,	
कांस्टेबल	
4. अनीश एम. वी.,	
कांस्टेबल	

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26.09.2011 से 30.09.2011 तक पुलिस स्टेशन महुआटांड, जिला-बोकारो के अंदर गांव बेंदी, अमन, बेलथेबा और झुमरा पहाड़ी के आस-पास जंगल के क्षेत्र में ढूँढने, नष्ट करने और तलाशी अभियान चलाने के लिए ऑपरेशन 'शिखर' अभियान चलाने की योजना बनाई गई। यह 207 कोबरा और झारखंड जगुआर के दो दलों का एक संयुक्त कार्रवाई अभियान था। इसी के अनुसार सैन्य टुकड़ी (बी/207 के दो

दलों) को गूगल के नक्शे पर योजना, क्षेत्र, भूभाग, विगत की घटनाओं, आसूचना संबंधी जानकारियों, लॉजिस्टिक्स सहायता और आकस्मिता के विषय में ब्रॉफ किया गया। योजना के अनुसार दिनांक 26.09.2011 को लगभग 20.00 बजे श्री पुनीत कुमार भारद्वाज, एसी के साथ श्री राजेश यादव, 2-आई/सी के कमान के अधीन बी/207 की दो टीमें, अर्थात् टीम संख्या 04 और 06 बोकारो के कम्पनी लोकेशन से सड़क मार्ग द्वारा आई। ई.एल. पुलिस स्टेशन, गोमिया के लिए रवाना हुई और वहां पहुंचकर उन्होंने झारखंड जगुआर के एक असाल्ट ग्रुप और सिविल पुलिस के प्रतिनिधि को साथ लिया।

वहां से संयुक्त दल सड़क मार्ग से रवाना हुआ और कोनार बांध होते हुए लगभग 23.30 बजे गांव चिलगू से 1 कि.मी. पहले डी.पी. पहुंचा। योजना के अनुसार, वहां से सैन्य टुकड़ी पैदल गांव बेंदी के लिए रवाना हुई और दिनांक 27.09.2011 को सुबह लगभग 03.30 बजे वहां पहुंची। बी/207 कोबरा की टीमों ने बेंदी गांव में घेराबंदी की, रास्ते बंद किए और झारखंड जगुआर के असाल्ट ग्रुप ने बेंदी गांव की ओर उससे लगे जंगल के क्षेत्रों में तलाशी अभियान चलाया। लगभग 07.30 बजे संपूर्ण पार्टी गांव अमन की ओर बढ़ गई। गांव बेलथेबा/सिमराबेड़ा को सूझ-बूझ से बाइपास करते हुए पार्टी गांव अमन की ओर निकल गई सैन्य टुकड़ी लगभग 14.00 बजे गांव अमन पहुंची और उन्होंने संदिग्ध घरों में तलाशी ली और उसके पश्चात् गांव अमन के निकट अत्यधिक ऊंचाई पर लूप लिया। कुछ समय बाद लगभग 14.20 बजे सैन्य टुकड़ी को लगभग 200-250 मीटर की दूरी पर कुछ संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दिए। ऑपरेशनल कमांडर श्री राजेश यादव, 2-आई/सी और उनके साथ-साथ श्री पुनीत कुमार भारद्वाज/एसी, इंस्पेक्टर/जीडी हुबमराम यादव और कांस्टेबल/जीडी राम सिंह सलाथिया, कांस्टेबल/जीडी परवीण कुमार, कांस्टेबल/जीडी अनीश एम. वी., कांस्टेबल/जीडी पी. के, बारिक, कांस्टेबल/जीडी असित मलिक, उप-निरीक्षक/जीडी अनिल कुमार, कांस्टेबल/जीडी बप्पादित्य मंडल और उप-निरीक्षक/जीडी गायवात मंगेश जी. की संपूर्ण टीम सूझ-बूझ के साथ नागरिकों से पूछताछ करने और वहां की स्थलाकृति को देखने के लिए आगे बढ़ी। जब संदिग्ध व्यक्तियों ने सैन्य टुकड़ी को अपनी ओर आते देखा तो वे वहां से भाग कर वहां की भौगोलिक विशिष्टताओं का लाभ उठाते हुए घने जंगल, झाड़ियों एवं शिलाखंडों के बीच गायब हो गए। तथापि, सैन्य टुकड़ी ने वहां की स्थलाकृति की विशिष्टताओं के अनुसार युक्तिपूर्वक उनकी ओर बढ़ना जारी रखा। जैसे ही पार्टी उस स्थल के निकट पहुंची, नक्सलियों ने बड़े पथरों की आड़ लेकर अत्याधुनिक हथियारों से उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। फौरन सैन्य टुकड़ी ने पोजीशन ले ली और जवाबी गोलीबारी करते हुए सूझ-बूझ से आगे बढ़ना जारी रखा।

रक्षात्मक स्थिति में शिलाखंडों के पीछे छिपे नक्सलियों और पुलिस टीम के कार्मिकों के बीच, जो कि सूझ-बूझ से नक्सलियों की ओर बढ़ते रहे, भारी गोलीबारी हुई। नक्सलियों की ओर से हो रही भारी गोलीगारी के बावजूद यह पार्टी अपनी रक्षा की परवाह किए बगैर और अपने जीवन को अत्यंत जोखिम में डालते हुए शिलाखंडों के निकट पहुंचने में सफल रही। नक्सलियों और पुलिस टीम के कार्मिकों के बीच मुठभेड़ के दौरान कांस्टेबल/जीडी राम सिंह सलाथिया पार्टी के बिल्कुल दाहिनी तरफ थे। जब कांस्टेबल/जीडी राम सिंह ने अपने से कुछ मीटर की दूरी पर एक नक्सली को मारने की कोशिश की तो शिलाखंडों के पीछे छिपे एक

नक्सली ने उनके ऊपर गोली चला दी और इसके परिणामस्वरूप उनका गला गोली से जख्मी हो गया। लेकिन कांस्टेबल/जीडी राम सिंह सलाथिया ने नक्सलियों पर गोली चलाना जारी रखा और उन्हें मार गिराया और उसके बाद उनके जीवन को बचाने के लिए किए सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद घायल होने की वजह से उनकी मृत्यु हो गई। बांधी ओर से हमले की अगुवाई करते समय कांस्टेबल/जीडी परवीण कुमार के भी सिर में गोली लगी और उनकी वहाँ मृत्यु हो गई। जबकि उनके दल के अन्य साथियों ने हमला जारी रखा और नक्सलियों को एक दूरी पर रोके रखा। दोनों ओर से भारी गोलीबारी के दौरान अन्य चार कार्मिकों, अर्थात् कांस्टेबल/जीडी असित मलिक को कंधे में गोली लगी, कांस्टेबल/जीडी बप्पादित्य मंडल को पैर में गोली लगी और कांस्टेबल/जीडी पी. के बारकि को बांधी बांह में गोली लगी। सभी घायलों को वहाँ से निकालकर हेलीकॉप्टर से अपोलो अस्पताल, रांची ले जाया गया। दिनांक 27.09.11 को पुलिस स्टेशन-महुआटांड, जिला-बोकारो (झारखण्ड) में इस घटना की प्राथमिकी दर्ज की गई थी और दिनांक 30.09.11 को पुलिस स्टेशन-महुआटांड में भारतीय दंड संहिता की धारा 147, 148, 149, 121 (ए), 332, 307, 353, 27 आयुद्ध अधिनियम, 3/4 विस्फोटक अधिनियम और 10.13 यू ए पी अधिनियम की तहत मामला संख्या 063/11 दर्ज किया गया है।

इस अभियान के दौरान श्री राजेश यादव, 2-आई/सी ने अच्छी सूझ-बूझ एवं साहसिक प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया और बहादुरीपूर्ण कार्य किया। तनावपूर्ण, जोखिमपूर्ण स्थिति में एवं नक्सलियों के अत्यधिक नजदीक होने पर भी उन्होंने स्थिति को नियंत्रण में रखा और अच्छे नेतृत्व एवं साहस का प्रदर्शन किया जिससे नक्सली मुठभेड़ से भागने के लिए विवश हो गए। गोलीबारी में उलझे होने के बावजूद उन्होंने योजना बनाकर हेलीकॉप्टर की सुरक्षित लैंडिंग एवं घायलों को तत्काल वहाँ से भिजाने का कार्य सुनिश्चित किया। पुनः दिनांक 29.09.11 को जब पार्टी के ऊपर घात लगाकर हमला किया गया, तो उन्होंने अच्छी सूझ-बूझ एवं साहस का परिचय दिया। उन्होंने योजना बनाकर तीव्र जवाबी हमला किया और साथ ही सैन्य टुकड़ी का मनोबल ऊंचा रखा। इसी प्रकार श्री पुनीत कुमार भारद्वाज एसी ने भी उच्च स्तर की जिम्मेदारी के अहसास का प्रदर्शन करते हुए बहादुरीपूर्ण कार्य किया और अभियान के कमांडर को पूर्ण समर्थन/सहायता प्रदान की। उन्होंने नक्सलियों से काफी नजदीक से मुकाबला किया। दिनांक 29.09.11 को जवाबी हमले के दौरान उन्होंने स्वयं सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर स्वयं पावर स्नोत से आई डी को अलग किया। उन दोनों ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह नहीं की और अपने दल के कार्मिकों की जान की रक्षा के लिए अत्यधिक जोखिम उठाया।

संपूर्ण अभियान में कट्टर नक्सलियों की ओर से भारी गोलाबारी और अपनी जान को जोखिम की अत्यधिक संभावना के बावजूद उपर्युक्त कार्मिकों ने सौंपे गए कर्तव्य के निर्वहन में अनुकरणीय साहस एवं समर्पण का प्रदर्शन किया। नक्सलियों की ओर से भारी गोलीबारी के सामने जीवन को जोखिम में डालने वाले हालातों के अंदर उनका अपने ऊपर नियंत्रण का प्रदर्शन न केवल अनुकरणीय है, बल्कि उनके उच्च कौटि के साहस, बहादुरी, कर्तव्य के प्रति समर्पण एवं प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। नक्सलियों से काफी कम दूरी होने और भारी गोलीबारी के कारण मौत हमेशा सामने मंडरा रही थी।

बरामदगी:

आई ई डी बैनर-02 इलैक्ट्रिक डेटोनेटर-10, बिजली के तार, कैमरा फ्लैश, बैटरी और बड़ी मात्रा में नक्सल पोस्टर।

इस मुठभेड़ में सर्वश्री स्वर्गीय राम सिंह सलाथिया, कांस्टेबल, स्वर्गीय परवीण कुमार, कांस्टेबल, बप्पादित्य मंडल, कांस्टेबल एवं अनीश एम. वी., कांस्टेबल ने अद्यता, साहस और उच्च कौटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 27.09.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य-अधिकारी

नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. संदीप,
सहायक कमांडेट
2. मनोज कुमार,
कांस्टेबल
3. गौर चंद्र दास,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

नन्हे मोची उर्फ प्रभात (कोयल शंख जोन का सैक्रेटरी), अर्जुन यादव उर्फ नकुल जोनल कमांडर, उमेश यादव उर्फ दिनेश (कोयल शंख जोन के संपूर्ण प्रभारी), बी आर सी और बड़ा विकास के सिल्वेस्टर सदस्य, कुमारी/बोरहा गांवों की पहाड़ियों में जोनल कमांडर के नेतृत्व में एक नक्सल कंपनी और कुछ नक्सल प्लाटूनों वाले माओवादी दस्ते के जमावड़े और उनके प्रशिक्षण कैंप के चाल के संबंध में आसूचना ब्लूरो, विशेष शाखा एवं सी.आर.पी.एफ के स्रोत से प्राप्त जानकारी के आधार पर श्री डी. के. पांडे, आई जी द्वारा डीआईजी, रांची, श्रीमती संपत मीणा, डीआईजी, पलामू रेंज, श्री लक्ष्मण प्रसाद सिंह, कमांडेट 133 बटालियन, श्री शील निधि ज्ञा, कमांडेट 11 बटालियन, श्री डी. एन. लाल, पुलिस अधीक्षक, गुमला, श्री एन. के. सिंह, पुलिस अधीक्षक, लातेहार, श्री कुलदीप द्विवेदी और 2-आई/सी 203 कोबरा, श्री मुन्ना कुमार सिंह के साथ एवं तत्कालीन आई जी पी (ऑपरेशन्स) केरिपु बल ज्ञारखण्ड, श्री आलोक राज और जोनल आई जी पी, रांची, श्री रेजी डुंगडुंग के समग्र पर्यवेक्षण में 'तूफान' नामक एक विशेष अभियान की योजना बनाई गई।

योजना के अनुसार इस अभियान के लिए दो प्रहार दल बनाए गए। प्रहार दलों को दिनांक 17.11.2010 को लगभग 15.00 बजे गांव कर्चा एवं कुमारी के वन क्षेत्र में विशेष तलाशी अभियान के कार्य के लिए तैनात किया गया था। प्रहार दल-I गारु होते हुए रुड तक वाहन द्वारा अभियान के लिए

पहुंचा और उसके बाद आगे वह लक्ष्य क्षेत्र तक पैदल निकला और सूझ-बूझ के साथ अभियान क्षेत्र की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ा।

प्रहार दल-II ने भी अनुमानित मार्ग को बाईपास किया और अत्यंत अचरज पैदा करते हुए देहात को पार कर नक्सल कैप की ओर आगे बढ़ा। तथापि, नक्सलियों को देर रात में प्रहार दल-II की गतिविधि का पता चल गया और उन्होंने पहाड़ी के किनारे से, जहां तक उनका कैप स्थित था, प्रहार दल-II पर तीव्र गति से घात लगाकर हमला करने की योजना बनाई, लेकिन उन्हें प्रहार दल-I की गतिविधि की भनक नहीं लग पाई थी, जो कि डाल्टनगंज की तरफ से चला था और वह देहात को पार कर पहाड़ी की खड़ी चट्टानों की चढ़ाई करते हुए नक्सल कैप तक पहुंचने के लिए निकला था। ब्रीफिंग के अनुसार प्रहार दल-II ने श्री संदीप, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में डी/133 की दो प्लाटूनों को और श्री एस. ए. टिगा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में झारखंड जगुआर के एक असॉल्ट ग्रुप को गांव बोड़ा में छोड़ दिया और वह एसओजी के साथ गांव कुमारी की ओर आगे बढ़ गया। लगभग 1330 बजे प्रहार दल-I ने नक्सलियों के कमांड पोस्ट के ऊपर धावा बोला। दोनों ओर से गोलीबारी के बाद नक्सल कमांडों ने पीछे हटना शुरू किया और वो पहाड़ी से भाग गए और कुमारी की तरफ बढ़ रही सैन्य टुकड़ी के निकट से निकलने के दौरान वहां एक अल्पकालिक मुठभेड़ भी हुई इस मुठभेड़ में श्री पवन कुमार सिंह, उप कमांडेंट और इंस्पेक्टर संजय कुमार सिंह तथा उनके अन्य साथियों ने नक्सलियों से बहादुरीपूर्वक मुकाबला किया जिसके परिणामस्वरूप लगभग 1430 बजे नक्सली गांव जामती की तरफ भाग गए।

इसी बीच लगभग 100–125 काड़ वाले एक प्लाटून एवं कुछेक स्थानीय दस्ते के साथ माओवादियों की एक ईआरबी कंपनी वहां से निकल कर भागने में सफल हो गई और उन्होंने डी/133 के प्लाटूनों के ऊपर हमला कर दिया। उन्होंने पेड़-पौधों, नाले और घरों की आड़ का लाभ उठाते हुए सैन्य टुकड़ी पर हावी होने की कोशिश की। वहां मौजूद कमांडर, सहायक/कमांडेंट संदीप ने हेड कांस्टेबल/जीडी जी. सी. दास, कांस्टेबल/जीडी मनोज कुमार और कांस्टेबल/जीडी शिवराम के साथ मिलकर नक्सलियों से बहुत ही अच्छे से एवं बहादुरी के साथ मुकाबला किया। इस स्थिति को देखते हुए दल ने सूझ-बूझ वाले कौशल का प्रदर्शन करते हुए एक बेहतरीन निर्णय लिया और बोरहा में तंगहाल सैन्य टुकड़ी की सहायता के लिए वे वापस लौट गए। यद्यपि, वहां की स्थलाकृति और पेड़-पौधे समस्या पैदा कर रहे थे और दिन की रोशनी के घटने एवं मार्ग में घात लगाकर बैठे माओवादियों के कारण यह कार्य कठिन होता जा रहा था, तथापि दल ने कभी भी अपना धैर्य नहीं खोया और मुठभेड़ स्थल की दिशा में वे आगे बढ़ते रहे। रास्ते में दल के कमांडर, गोलीबारी के अनुशासन को बनाए रखने के लिए श्री संदीप, ओसी-डी/133 को वायरलेस सेट से निर्देश देते रहे जिसका श्री संदीप द्वारा प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित किया गया। जब यह दल मुख्य मुठभेड़ स्थल से कुछ दर्जन मीटर की दूरी पर रह गया, तो उप कमांडेंट, श्री पवन कुमार सिंह और इंस्पेक्टर संजय कुमार सिंह को अपनी टुकड़ी के साथ माओवादियों को दार्यी ओर से घेरने और उन्हें कवर फायर देने का आदेश दिया गया। यहां तक कि भारी गोलीबारी के सामने भी इंस्पेक्टर संजय कुमार ने इससे बगैर विचलित हुए नक्सलियों की पोजीशन की ओर बढ़ने में बेहतरीन सूझ-बूझ के साथ अत्यधिक साहस का प्रदर्शन किया। इस समय तक नक्सलियों को अपने घेरे होने का आभास हो चुका था और जैसे ही उनमें से कुछेक को गोली लगी वे इन्सास राइफल के साथ अपने एक कमांडर के शव को पीछे

छोड़ते हुए और कुछ शवों को घसीटते हुए पहाड़ी की ओर वापस भागने को विवरण हो गए। इस प्रकार, श्री पवन कुमार सिंह, उप कमांडेंट, इंस्पेक्टर संजय और के.रि.पु. बल/झारखंड जगुआर/डीएपी के कार्मिकों ने डी/133 एवं जेजे के जवानों/अधिकारियों के जीवन की रक्षा की और काफी नक्सलियों को भी हताहत किया। इसी प्रकार, श्री संदीप, सहायक कमांडेंट और उनकी टीम ने अपनी पोजीशन दुरुस्त रखी और सैन्य टुकड़ी को नुकसान पहुंचाने की नक्सलियों की योजना को विफल किया तथा शानदार मुकाबला किया। जैसे ही अंधेरा हुआ, श्री पवन कुमार सिंह, डी सी (ऑपरेशन्स) एवं अन्य के कमान में प्रहार दल-II बोरहा के जंगल में ही रुका और अपनी सूझ-बूझ से उस स्थान को सुरक्षित बनाए रखा। इस अभियान में कथित टीम के सदस्य कांस्टेबल/जीडी मनोज कुमार नक्सलियों के साथ बहादुरी से मुकाबला करते हुए घायल हो गए। उन्हें फौरन प्राथमिक उपचार मुहैया कराया गया और उन्हें दिनांक 19.11.10 की सुबह में श्री आलोक राज, आईजीपी, जे. के. डी, के.रि.पु. बल द्वारा हेलीकॉप्टर के माध्यम से मुठभेड़ स्थल से बाहर निकाला गया। मुठभेड़ में 02 नक्सली मारे गए और अनेक नक्सली गंभीर रूप से घायल हो गए।

प्रहार दल-II के द्वारा निष्पादित यह एक सर्वाधिक सफल अभियान है जिसे पूर्णता, बहादुरी एवं प्रतिबद्धता के साथ अंजाम दिया गया, जिसमें उन्होंने एक बड़े और अच्छी तरह जमे हुए माओवादी समूह पर धावा बोला, उनकी मीटिंग को तोड़ा और एक दुर्गम, कठिन एवं अंदरुनी भू-भाग में उन्हें निष्क्रिय किया।

बरामदगी:--

1. 5.56 एमएम इन्सास राइफल	01
2. 5.56 एमएम इन्सास जिंदा कारतूस	26 राउंड
3. 7.62 एमएम, एस एल आर मिस फायर कारतूस	01
4. 5.56 इन्सास मैगजीन	04
5. आई ई डी लगभग	20 किग्रा.
6. नकद 265/- रुपए	
7. 7.62 एमएम के फायर किए हुए खोखे	83
8. 5.56 एमएम के फायर किये इन्सास राइफल के खोखे	28
9. .303 राइफल के फायर किए हुए खोखे	02
10. .315 के फायर किए हुए खोखे	02
11. 7.62 x 39 एमएम एके 47-फायर किये खोखे	01
12. लैपटॉप	01
13. मोटोरोला वाकी टाकी सेट	08
14. कंप्यूटर की बोर्ड	01
15. नकद 3,34,000/- रु.	

इस मुठभेड़ में सर्वश्री संदीप, सहायक कमांडेंट, मनोज कुमार, कांस्टेबल और गौर चंद्र दास, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 18.11.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 83-प्रेज/2013—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

नाम और रैंक

श्री नरेश कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 17 मई, 2011 को दांतेवाड़ा जिला के नक्सली प्रभावित गढ़ में कमाण्डेन्ट दिवतीय बटालियन, सीआरपीएफ और एसडीपीओ, सुकमा श्री तारकेश्वर पाटिल, ने एक अभियान की योजना तैयार की जिसमें उन्हें सुकमा से लगभग 18 किमी, दूर केरलापाल का दोरा करना था और उस आवास व्यवस्था की प्रगति को देखना था जो ए/दिवतीय बटालियन, सीआरपीएफ की आवासीय व्यवस्था हेतु तैयार की जा रही थीं। योजना के अनुसार, कमाण्डेन्ट एवं एस डी पी ओ ने साथ चल रही सैन्य टुकड़ी को विस्तृत रूप से ब्रीफ करने के पश्चात लगभग 1745 बजे, सुकमा स्थित अपने बटालियन मुख्यालय से ए/दिवतीय बटालियन, सी आर पी एफ, केरलापाल के लिए सिविल मेक और पैर्टन (02 स्कर्पियो और 01 तवेरा) के 03 वाहनों के एक काफिले के साथ रवाना हो गए।

केरलापाल में निर्माण की प्रगति की जानकारी लेने और ए/दिवतीय बटालियन, सी आर पी एफ की सैन्य टुकड़ी को ब्रीफ करने के पश्चात, कमाण्डेन्ट और एस डी पी ओ ने 1930 बजे के पश्चात, कमाण्डेन्ट और एस डी पी ओ ने 1930 बजे के लगभग मुख्यालय वापस लौटने का निर्णय लिया। यह योजना अंधेरे का लाभ लेने और नक्सली भेदियों/सहानुभूति रखने वाले लोगों द्वारा इसका पता लगा लिए जाने के बचने के लिए बनायी गयी थी। कमाण्डेन्ट दिवतीय बटालियन, सी आर पी एफ और एस डी पी ओ ने वाहनों के लौटने समय वाहनों के काफिले का नेतृत्व किया। सी आर पी एफ सैन्य टुकड़ी वाली तवेरा को पिछले वाहन के रूप में रखा गया। नक्सलियों को और धोखा देने के लिए सी आर पी एफ तवेरा ने योजना के अनुसार काफिले के बीच में चल रहे पुलिस वाहन की जगह ले ली। लगभग 2000 बजे, सुकमा से करीब 6 किमी, पहले नक्सलियों द्वारा ईआईडी से विस्फोट किया गया जिसमें तवेरा (बीच में चल रहे वाहन) पंजीकरण संख्या सीजी 10 एएफ-8060 को बोरगुड़ा गांव के निकट उड़ा दिया गया था।

इस विस्फोट का प्रभाव इतना जबरदस्त था कि इसकी वजह से वाहन में सवार 8 कर्मियों में से 7 की तत्काल मृत्यु हो गई। विस्फोट से हुए गढ़े को बाद में मापने पर उसका व्यास 13 फीट और गहराई 4.5 फीट पायी गयी।

इस दौरान एक मात्र जीवित बचे कांस्टेबल/जीडी नरेश कुमार, ने गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद, कुछ ही मिनटों में अपनी चेतना को संभाला और घायल होने की वजह से हो रही पीड़ा और अधिगत को बहादुरी के साथ झेलते हुए, अपने उस हथियार को उठाने की कोशिश की जो विस्फोट के

दौरान उड़ा दिया गया था। अत्यधिक तनाव और पीड़ा के साथ कांस्टेबल/जीडी नरेश कुमार ने अपना हथियार उठा लिया। उसने कुछेक नक्सलियों को देख लिया जो उसकी ओर भी इस साजिश के साथ गोलीबारी कर रहे थे ताकि सभी हथियारों को लूट लिया जा सके। उसे उनको रोकना था, किन्तु अपनी इस पूर्ण व्याकुलता के साथ उसने महसूस किया कि उसके किसी भी हाथ में राइफल को चला पाने की ताकत नहीं थी। बड़ी सूझबूझ का परिचय देते हुए और विषम परिस्थितियों में प्रशिक्षण की सर्वोत्तम प्रणालियों को काम में लाते हुए, कांस्टेबल/जीडी नरेश कुमार ने राइफल चलाने के लिए अपने बूट का इस्तेमाल किया और फिर नक्सलियों की ओर निशाना लगाकर 5 राउन्ड गोलियों की बौछार की।

इस अप्रत्याशित जवाबी गोलीबारी से नक्सली सकते में आ गए और वे रुक गए एवं हथियार लूटने के लिए आगे नहीं बढ़ पाए तथा किसी अन्य तरह का नुकसान नहीं कर पाए। वह घावों की वजह से अशक्त अपने शरीर के बावजूद, अपने साथियों की ओर यह देखने के लिए घुटनों के बल बढ़े कि यदि उन्हें किसी तरीके से बचाया जा सकता हो अथवा सहायता की जा सकती है। गोली-बारी के बीच उन्हें अपने एक साथी के सेलफोन पर एक कॉल आने का आभास हुआ। उन्होंने इस कॉल को सुना और अपने बटालियन मुख्यालय को तत्काल सहायता बल भेजने के संबंध में सूचित किया। इसके पश्चात, वह घटनास्थल पर सैन्य टुकड़ी के पहुंचने तक अपना मोर्चा फिर से संभालने लगे।

उनकी सहायता के लिए पहली टुकड़ी के आने में लगभग 10 मिनट का समय लगा। इन टुकड़ियों की पहचान से अनभिज्ञ कांस्टेबल नरेश कुमार ने पार्टी को चुनौती दी और उन्हें आगे न बढ़ने का आदेश दिया। सी आर पी एफ सैन्य टुकड़ी द्वारा अपनी पहचान साबित करने के पश्चात ही, कांस्टेबल/जीडी नरेश कुमार द्वारा उन्हें घटना स्थल में प्रवेश करने की अनुमति दी गई।

कांस्टेबल/जीडी नरेश कुमार की निःस्वार्थ सेवा प्रतिबद्धता और उनकी बहादुरी एस वीरतापूर्वक एवं बहादुरी का कृत्य है जिसकी बगाबरी में सी आर पी एफ के ऐतिहासिक अभिलेख में कुछेक लोग ही हैं। बल की सर्वोत्तम परम्परा को कायम रखते हुए, उन्होंने अपने दुश्मनों की साजिश को ध्वस्त करने में अनुकरणीय बुद्धिमत्ता और बहादुरी का परिचय दिया है। उन्होंने महान सूझबूझ का परिचय दिया तथा गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने लगातार गोलीबारी करके न केवल नक्सलियों को पीछे खदेड़ दिया बल्कि एके-47-3, इन्सास 02, एक्स-95, राइफल-01, एलएमजी-01, ऑटो फॉल राइफल-01 (राउण्ड्स-1040 ग्रेनेड-08, राइफल ग्रेनेड-06) को भी लूटने से रोका।

इस मुठभेड़ में श्री नरेश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 17.05.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 84-प्रेज/2013—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

नाम और रैंक

सर्वश्री

1. एस. श्रीनु, कांस्टेबल
2. बीरेन्द्र कुमार सिंह, कांस्टेबल
3. दीपक कुमार एक्सा, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया।

दिनांक 24.11.2011 को पुलिस अधीक्षक, मिदनापुर श्री प्रवीण त्रिपाठी से झारग्राम से लगभग 13 किमी। दूर पुलिस स्टेशन जमबोनी के अन्तर्गत ग्राम बुरिसोल के पूर्वोत्तर जंगली क्षेत्र में 5-7 सशस्त्र माओवादियों के घूमने के संबंध में सूचना प्राप्त हुई थी। सूचना के आधार पर, एक संयुक्त अभियान की योजना तैयार की गई।

योजना के अनुसार, टीमों को जंगल से होकर जाने वाली सड़क पर अलग-अलग स्थानों पर उतारा गया। 207 कोबरा की दोनों टीमें अपनी गति, शान्ति और छुपाव को बरकरार रखते हुए लक्षित क्षेत्र की ओर आगे बढ़ीं और करीब 1600 बजे अपने आर वी पर पहुंच गईं। इस दुराव-छुपाव को किसी प्रकार की क्षति से बचाने के लिए, लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ने के लिए एक बहुत ही छोटी खोजी टीम का गठन करने का निर्णय लिया गया। इस टीम में श्री नरेन्द्र सिंह, एसी, श्री विनोज पी. जोसेफ, एसी, कांस्टेबल/जीडी एस. श्रीनु कांस्टेबल/जीडी एस. मुथुवेल, कांस्टेबल/जीडी बीरेन्द्र कुमार सिंह और कांस्टेबल/जीडी दीपक कुमार एक्सा शामिल थे।

जब यह खोजी टीम लगभग 1630 बजे लक्षित क्षेत्र के निकट पहुंच गई तो माओवादियों की ओर से इस पर गोलियों की भारी बौछार शुरू कर दी गई। इस गोलियों की बौछार ने खोजी दल के सदस्यों को उछलकर जमीन पर लौट जाने के लिए विवश कर दिया और श्री नरेन्द्र सिंह, एसी एक ग्रेनेट के फटने से घायल भी हो गए। बढ़ते हुए अंधेरे के साथ भू-भागीय क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण कवरेज नहीं मिल पा रहा था, यह अत्यधिक जोखिमपूर्ण स्थिति बन गई थी। क्या यह उन माओवादियों की चिंतालनार जैसी दूसरी सफलता होगी? क्या सामरिक दृष्टि से वापस लौटना, स्वयं की ओर लगभग 70 कोबरा कार्मियों की जानों को बचाना और अगले दिन संघर्ष छेड़ना बेहतर होगा? नहीं-सी आर पी एफ माओवादियों को उपहास उड़ाने और जशन मनाने के लिए छोड़ने वाली नहीं थी बल्कि उन्हें इसकी कीमत चुकानी होगी।

बहुत वर्षों के कठोर प्रशिक्षण और फौलादी दृढ़निश्चय युक्त संग्रामी अनुभव वाले जांबाजों ने इस निहित खतरे का सामना करने का मन बनाया और चार जीडी कांस्टेबलों नामतः- एस. श्रीनु, एस. मुथुवेल, बीरेन्द्र कुमार सिंह और दीपक कुमार एक्सा ने अपने दो नेतृत्व अधिकारियों के मोर्चा संभालकर हमला करने के निर्णय का विनम्रतापूर्ण प्रतित्युत्तर दिया क्योंकि उस समय यही एक मात्र उपलब्ध विकल्प था यदि सी आर पी एफ को सफलता हासिल करनी थी।

कोबरा 207 के चार जीडी कांस्टेबल गोलीबारी और कवर रणनीति का इस्तेमाल करते हुए दो कमाण्डरों के अगल बगल वर्धित 'वी' फारमेशन में साथ-साथ जोड़े के रूप में आगे बढ़े। 15-30 गज के फासले में 30 मिनट से भी अधिक समय तक चले आमने सामने की इस मुठभेड़ में ये कांस्टेबल एक भी क्षण के लिए पीछे नहीं डिगे। कांस्टेबल एस. मुथुवेल, जो आगे बढ़ रही पार्टी के बिल्कुल बायाँ ओर थे, शत्रुओं की अन्धाधुंध एवं भयंकर रूप से हो रही गोलियों की बौछार के बीच सही जगह पर पहुंचने में कामयाब हुए और फिर उन्होंने चार राइफल ग्रेनेट दागे जिनसे माओवादियों का किसी भी प्रकार से आगे बढ़ना रुक गया। लोगों के कोलाहल, झाड़ियों एवं पेड़ों के बीच कांस्टेबल/जीडी एस. श्रीनु और कांस्टेबल/जीडी बीरेन्द्र कुमार सिंह अपने-अपने स्वचालित हथियारों से गोलीबारी करते हुए और लक्ष्य पर एक एक एच ई. ग्रेनेट दागते हुए आगे बढ़ने में सफल हुए। कांस्टेबल/जीडी दीपक कुमार एक्सा ने अपने सर्विस हथियार से गोली-बारी करते हुए पार्टी के हर क्षण में साथ रहकर यह सुनिश्चित करने के लिए अचूक बार किए कि वह सी आर पी एफ ही होगी जो उस दिन अजेय रहेगी। इस अप्रत्याशित और साहसिक कार्रवाई ने माओवादियों की पूर्ण मोर्चाबन्द और बेहतर पोजीशन में होने की उस स्थिति को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया जो वे अभियान के प्रारम्भ में सुरक्षा बलों के विषय स्थिति पर होने का मजा ले रहे थे।

इस मुठभेड़ में, बाद में पता चला कि कोटेश्वर राव उर्फ किशेनजी, एक पोलित ब्यूरो और सी पी आई (माओवादी) की केन्द्रीय समिति के सदस्य को मार गिराया गया था। लालगढ़ प्रयोग का षडयंत्रकारी, अनेक हमलों का मुखिया और सुरक्षा बलों की हत्याओं का जिम्मेदार एक समरदुर्दान्त किशन जी को धूल चटाने का श्रेय इस अभियान को जाता है जिसमें इन चार कांस्टेबलों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर अत्यधिक दृढ़ता, असाधारण वीरता और बुद्धिमत्तापूर्ण बहादुरी के साथ युद्ध किया।

मुठभेड़ के दौरान, सैन्यदल द्वारा एक नक्सली को मारा गया/मार गिराया गया और उसका शव बरामद किया गया। मारे गए नक्सली के शव की पहचान बाद में कोटेश्वर राव, उर्फ किशेनजी, एक पोलित ब्यूरो और सीपीआई (माओवादी) की एक केन्द्रीय समिति के सदस्य और एक प्रमुख नक्सली मुखिया के रूप में की गई। मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित सामान भी बरामद किए गए:-

1. ए के-47 राइफल जिसकी आयुधशाला संख्या केटी-435182 है	01
2. छद्वारण रंग की सूती गोला-बारूद थैली	01
3. छोटा काले रंग का कई जेबों वाला चैन लगा रैम्सिन का बैग (जिसमें हार्ड डिस्क, पेनड्राइव और माओवादी साहित्य है)	01
4. मोटेरेला वायलरेस हैंड सेट	01
5. क्षतिग्रस्त स्थिति में 500 जीबी का हार्ड डिस्क स्टोर जेट	01
6. क्षतिग्रस्त स्थिति में 320 जीबी का हार्ड डिस्क सीगेट	01
7. दुटी हुई सी. डी.	01
8. पैसिल टार्च लाइट (काले रंग की)	01
9. सैमसंग मोबाइल फोन (काले रंग का)	01

10. नोकिया मोबाइल फोन (काले रंग का)	01	ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 24.11.2011 से दिया जाएगा।
11. प्लास्टिक के पाकेट में यू एस बी कार्ड	01	
12. डाया कार्ड	04	
13. मोबाइल चिप्स	14	
14. रिलायन्स मोबाइल सिमकार्ड	01	
15. बी. एस. एन. एल मोबाइल सिम कार्ड	01	
16. 4 जी. बी. का डाया ट्रेवेलर पेन ड्राइव	01	सं. 85-प्रेज/2013--राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:--
17. कार्ड रीडर जेम्बोनिक	01	नाम और रैंक
18. पाकेट डायरी	01	सर्व/श्री
19. पुलश्यु, आयल बोतल, रुई के टुकड़ों वाली एक प्लास्टिक की पाकेट	01	1. एन. मनोरंजन सिंह, (मरणोपरांत) सहायक कमांडेंट
20. सुनहरे रंग के कवर वाला चश्मा	01	2. राकेश कुमार चौरसिया, (मरणोपरांत) सहायक कमांडेंट
21. 05 नैथालिक गोलियों वाला एक प्लास्टिक का पाकेट	01	3. सुशील कुमार वर्मा, (मरणोपरांत) उप-निरीक्षक
22. ड्यूरोसेल बैटरी (छोटी)	01	4. ललित कुमार, (मरणोपरांत) हेड कांस्टेबल
23. बाल पेन	04	5. उदय कुमार यादव, (मरणोपरांत) कांस्टेबल
24. थर्मोमीटर	01	6. मनोहर लाल चन्द्रा, (मरणोपरांत) कांस्टेबल
25. जिलेट ब्लेड	04	
26. जिलेट रेजर	01	उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया
27. कैंची (छोटी)	01	दिनांक 16 सितम्बर 2009 को बी/201 को छत्तीसगढ़ राज्य के दांतेवाड़ा जिले में पुलिस स्टेशन किस्ताराम के अंतर्गत सिंघनमडगु गांव में नक्सलवादियों के विरुद्ध कार्रवाई करने का कार्य सौंपा गया था। बी/201 कोबरा, सीआरपीएफ की सैन्य टुकड़ियों के साथ अधिकारियों और कार्मिकों द्वारा कार्रवाई करते समय एक नक्सलवादी मारा गया और उससे एक देशी बंदूक बरामद की गई। छानबीन (कॉम्बिंग) की कार्रवाई के दौरान एक कामचलाऊ हथियार बनाने की यूनिट का पता चला जहां 13 बैरल और 2 ग्रेनेड के साथ-साथ 07 देशी हथियार बरामद किए गए और सैन्य टुकड़ियों द्वारा फैक्टरी को नष्ट कर दिया गया। दिनांक 17 सितम्बर 2009 की शाम को कार्रवाई पूरी करने के बाद, अपने कैम्प में वापस लौटे समय भारी हथियारबंद नक्सलवादियों ने सैन्य टुकड़ियों पर घात लगाकर हमला कर दिया। श्री एन. मनोरंजन सिंह, सहायक कमांडेंट, जो दल का नेतृत्व कर रहे थे, ने घात वाले क्षेत्र से सुरक्षित रूप से बाहर निकालने में अपने दल के सदस्यों की मदद की। इसके अलावा, जब उन्होंने देखा की उनके पीछे के अन्य दलों को नक्सलवादियों ने घेर लिया है, तो वे अपनी जान की परवाह न करते हुए पीछे वाली सैन्य टुकड़ियों को सहायता उपलब्ध कराने के लिए पीछे गए। उन्होंने अपने व्यक्तिगत हथियार से नक्सलवादियों पर प्रभावी रूप से गोलाबारी की। उन्होंने नक्सलवादियों पर एक हैंड ग्रेनेड फैंका और उन्हें भारी क्षति पहुंचाई। कवर लेते समय नक्सलवादियों द्वारा उन पर की गई गोलियों की बौछार उनके पेट के निचले हिस्से में लगी और वे तत्काल शहीद हो गए। इस प्रकार राकेश कुमार चौरसिया, सहायक कमांडेंट और उप-निरीक्षक/जीडी
28. लोटस मीडिया निर्मित कम्पैक्ट डिस्क	01	
29. विभिन्न मूल्य वर्ग की कुल 84,535/- रु. की नगदी		
30. स्थिर बट संख्या एसएपी/8-31 की एके-47 राइफल, आयुधशाला संख्या बीई-445317 स्लिंग लगी हुई, चेम्बर में भरी 7.62 एमएम की एक जिंदा गोली और मैगजीन में 7.62 एम एम की एक जिंदा गोली		
31. 7.62 एमएम के खाली कारतूस	02	
32. सफेद रंग की जरिकन	01	
33. एक्स्टेंशन कार्ड के साथ नोबैक्स कंपनी की हियरिंग एड मशीन	01	
34. चमड़े की चप्पल	01	
35. खून के धब्बे लगी हुई एक सैमसंग की मोबाइल बैटरी जिसका नम्बर एबी-553	0	

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री एस. श्रीनु, कांस्टेबल, बीरेन्द्र कुमार सिंह, कांस्टेबल और दीपक कुमार एक्सा कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सुशील कुमार वर्मा अपने दल का नेतृत्व कर रहे थे और अपने दल के साथियों को घात वाले क्षेत्र से सुरक्षित रूप से बाहर निकाला। लेकिन नक्सलवादियों के साथ मुठभेड़ के दौरान उन्हें गोली लगी और वे शहीद हो गए। उपर्युक्त अधिकारियों/कार्मिकों के साथ-साथ हेड कांस्टेबल/जीडी ललित कुमार, कांस्टेबल/जीडी मनोहर लाल चन्द्रा और कांस्टेबल/जीडी उदय कुमार यादव ने प्रभावी सहायक गोलीबारी की और सैन्य टुकड़ियों को सुरक्षित रूप से बाहर निकाला।

श्री मनोरंजन सिंह, श्री राकेश कुमार चौरसिया, उप-निरीक्षक (जीडी) सुशील कुमार वर्मा, हेड कांस्टेबल (जीडी) ललित कुमार, कांस्टेबल (जीडी), उदय कुमार यादव और कांस्टेबल (जीडी) मनोहर लाल चन्द्रा बिना किसी डर के अंतिम सांस तक नक्सलवादियों से लड़े, महान साहस, जिम्मेदारी की भावना नेतृत्व के गुण का प्रदर्शन किया और हमारी मातृभूमि के लिए अपनी कीमती जानों का बलिदान कर दिया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री स्व. एन. मनोरंजन सिंह, सहायक कमांडेंट, स्वर्गीय राकेश कुमार चौरसिया, सहायक कमांडेंट, स्वर्गीय सुशील कुमार वर्मा, उप-निरीक्षक, स्वर्गीय ललित कुमार, हेड कांस्टेबल, स्वर्गीय उदय कुमार यादव, कांस्टेबल और स्वर्गीय मनोहर लाल चन्द्रा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत विशेष भत्ता भी दिनांक 17.09.2009 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य-अधिकारी

पोत परिवहन मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 24 जून 2013

संकल्प

सं. ई-11013/01/2009-हिंदी--पोत परिवहन मंत्रालय के दिनांक 19.10.2010 के समसंख्यक संकल्प में आंशिक संशोधन करते हुए क्रम संख्या 26 और 27 में दिए गए संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा नामित गैर सरकारी सदस्यों डॉ. वी. मैत्रेयन और श्री एम. वी. मैसूर रेड्डी के स्थान पर संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा नव नामित गैर सरकारी सदस्यों के रूप में क्रमशः निम्नलिखित सदस्यों को पोत परिवहन मंत्रालय की हिन्दी सलाहकर समिति में शामिल किया जाता है:-

1. श्रीमती नाजनीन फारूख संसद सदस्य (राज्य सभा)
सी-201, स्वर्ण जंयती सदन, डॉ. बी. डी. मार्ग,
नई दिल्ली-110001
दूरभाष सं. 011-23708086, 23708042
मोबाइल सं. 09013181777

स्थायी पता:

यू.आर. रोड, नगांव टाऊन,
असम-782001
दूरभाष सं. 03672-2254193
मोबाइल सं. 09435352211, 09435191111

2. श्री अनिल माधव दवे
संसद सदस्य (राज्य सभा)
सी-603, स्वर्ण जंयती सदन, डॉ. बी. डी. मार्ग,
नई दिल्ली-110001
दूरभाष सं. 011-23766750, 23354181
मोबाइल सं. 09868181806

स्थायी पता:

सीनियर एमआईजी-2, अंकुर कलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल, मध्य प्रदेश-462016
दूरभाष सं. 0755-2460754
मोबाइल सं. 09406904555

दिनांक 19.10.2010 को जारी समसंख्यक संकल्प में दी गई अन्य शर्तें अपरिवर्तित रहेंगी।

आदेश

यह आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति, निम्नलिखित को प्रेषित की जाएः राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधानमंत्री का कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य मंत्रालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, संसदीय राजभाषा समिति, योजना आयोग, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, पोत परिवहन मंत्रालय की हिन्दी सलाहकर समिति के सभी सदस्य और भारत सरकार के सभी मंत्रालय तथा विभाग।

2. यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प, सर्वसाधारण की सूचनार्थ भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

एम. सी. जौहरी
संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 1st July 2013

No. 41-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Arunachal Pradesh Police:—

Name & Rank

S/Shri

01. Vikramjit Singh,
Superintendent of Police
02. Thomas Pertin,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 20th October 2012 an input was received by the district police authorities at Khonsa regarding the presence of one hardcore cadre a Self Styled Capt-cum-Rajapio of NSCN (K) namely Ngabo Aboh, in Sweetfall Colony of Khonsa town. Accordingly the Superintendent of Police, Tirap District, Shri Vikramjit Singh (IPS) constituted two teams: one led by him personally and the other led by Dy. SP James K Lego (SDPO Khonsa). The team led by Dy. SP James K Lego started searching the colony from the lower end while the team led by Shri Vikramjit Singh and consisting of SI Thomas Pertin (OC PS Khonsa), ASI Y. Tsering, HCs Tage Taji & Nani Koyang and Constable S. Mandal, D. Jugli, L. Mihu, H. Miso, T. Gumbo, L. Bangyang, K. Nyodu and P. Ruttum, started the search from the upper end. When the team, after completing search of two huts, reached and surrounded the third hut, Shri Vikramjit Singh started tactically entering the hut from the rear end followed by SI Thomas Pertin and HC N. Koyang while ASI Y. Tsering and the remaining team covered the front and rear entrances of the hut.

As soon as Shri Vikramjit Singh was about to step inside the hut one man came charging with a 'Dao' - a local made knife with a 15 inch long blade. Shri Vikramjit Singh tried to hold the knife wielding hand of the accused and in the process his left hand got cut on the palm and thumb. Finding resistance, the man immediately dropped the dao and wrestled his right hand free and reached behind his back. In the meantime HC N. Koyang who was just beside Shri Vikramjit Singh immediately snatched away the dao. Realising he was reaching for another weapon Shri Vikramjit Singh tried to control and bring down the accused to the ground. SI Thomas Pertin who was just a few steps behind saw that the accused was pulling out a pistol tucked in his belt, and leapt forward to hold his hands to prevent him from pulling the trigger. In the scuffle and grappling that ensued both Shri Vikramjit Singh, SP Khonsa and SI Thomas Pertin suffered minor injuries. On hearing the commotion the other team members rushed to the spot and managed to pin down the accused to the ground and disarm him. He was secured and then searched. One 7.65 mm pistol with 5 live

rounds of ammunition & some opium smeared cloths were recovered from his possession. On verification the input was confirmed that he was Ngabo Aboh, the dreaded Self Styled Capt-cum-Rajapio of NSCN(K) who had been terrorizing the businessmen as well as government officials for extorting money from them.

Recoveries made:

1. Automatic Pistol 7.65mm Caliber - 01
2. Magazine of 7.65 mm
3. Live rounds of 7.65 mm ammunition
4. 'Dao'- Knife with blade measuring 15 inches x 1.5 inches.

In this encounter S/Shri Vikramjit Singh, Superintendent of Police and Thomas Pertin, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20.10.2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 42-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Assam Police:—

Name & Rank

S/Shri

1. Pranjit Borah,
Sub Divisional Police Officer
2. Pranjit Lahkar,
Sub Inspector UB

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 15.10.2010, at around 8.30 PM, an information was received by Sub Divisional Police Officer, Gossaigaon, Shri Pranjit Borah from In charge, Simultapu OP, SI(UB) Pranjit Lahkar over phone that a group of suspected ULFA extremists was seen moving around in the Dingdinga area, with an intention to extort money and to kidnap people for ransom. As it was the time of Durga Puja celebration, all the available security forces were stretched to the limit and deployed for law and order duties. Even then, SDPO Gossaigaon Pranjit Borah accompanied by only his PSO left immediately for the said area and also instructed I/C Simultapu OP to proceed with his available OP staff. Also, the local Army unit of 15 Dogra Regiment, camp Gossaigaon was informed and they also sent a small team.

On reaching the area, the combined team of Police and Army was divided into two parts and one team, comprising Army personnel started search from the back side of Dingdinga Bazar i.e. from the Mechpara side and the other team comprising Police and Army started search from the Srirampur side. The team from the Srirampur side, which was led by SDPO, Gossaigaon, Pranjit Borah laid a check at Kembelpur, which was a cross road in the Srirampur-Tamarhat Road. At around 10.45 PM one motorcycle was seen coming from the Grahampur side with two persons on it. On seeing the bike, the search team led by SDPO, Gossaigaon, Pranjit Borah signaled for the bike to stop, but instead of stopping, the person riding pillion suddenly opened automatic fire at the team. SDPO, Gossaigaon Pranjit Borah, I/C, Simultapur OP SI(UB) Pranjit Lahkar and two of the SDPO's PSO, namely ABC Debojit Kalita of Kokrajhar DEF and CN Danbosco Khaka of 7th APBn, who were at the front, narrowly missed being hit by the extremists automatic fire and they dived to the open ground for cover. At the same time, the person driving the bike swerved right at the cross-road, while the pillion rider continued to fire.

Immediately on hitting the ground and still exposed on the open road, SDPO, Gossaigaon Sri Pranjit Borah & I/C Simultapu OP SI(UB) Pranjit Lahkar returned fire from their 9 mm service pistols, with the two PSOs also following suit. The person riding pillion was hit in this prompt and accurate retaliatory fire by SDPO, Gossaigaon and his team and fell to the ground. The other person also jumped from the bike and took cover beyond the embankment of the road, in paddy field and started to fire from his pistol. In the meantime, the injured extremist also crawled into the embankment and resumed firing from his automatic weapon.

At that point in time, SDPO, Gossaigaon and his team were totally exposed in the open while two extremists were well-concealed. Even then, they did not retreat and kept on firing. All the time exposing themselves to considerable risk to their lives. Due to this act of exemplary courage, the other members of the Police/Army team were able to take up positions at the cross road and opened fire, which diverted the attention of the two extremists. Taking advantage of this and without any consideration for their personal safety, SDPO, Gossaigaon Pranjit Borah and his team crawled to the left flank and directed accurate fire into the extremists position from a close range with their pistols. In this firing, both the extremists were hit and the firing from their side stopped.

After sometime, the extremists position was carefully approached and the two extremists were found lying, still alive. They were immediately shifted to RNB Civil Hospital, Gossaigaon by 108 Ambulance service, but were declared brought dead by doctor on duty.

The two extremists were later on identified to be hardcore member of the ULFA. They were: (i) Sukhdev Rava @ Kesto Ray, S/o late Nirod Rava, Vill: Thuribari, Bhumka, PS: Gossaigaon, (ii) Prasanta Barman S/o Sri Sudir Barman, Vill:

Jhakupara, Purani Bongaigaon, PS: Bongaigaon. The following Arms/Amn, etc. were seized from the slain militants:—

- (i) 9mm Carbine- 01
- (ii) 9mm Carbine Magazine- 02
- (iii) 9mm Pistol- 01
- (iv) 9mm Pistol Magazine- 02
- (v) 9mm ammunition (live)- 53 rounds
- (vi) Empty cases of 9mm- 04
- (vii) One Bajaj Discover Bike No AS-19/A20151

It was an act of exemplary courage & gallant action on the part of Sri Pranjit Borah, Sri Pranjit Lahkar and two PSOs, namely ABC Debojit Kalita and CN Danbosco Khaka in crawling towards the militants position, while completely exposed to the militants automatic fire and then neutralizing the two militants by their accurate firing. The risk involved in the operation was enormous and they have exhibited tremendous courage, skill and conspicuous devotion to duty which was clearly beyond the call of duty.

In this encounter S/Shri Pranjit Borah, Sub Divisional Police Officer and Pranjit Lahkar, Sub Inspector, UB displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15.10.2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 43-Pres/2013—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Assam Police:—

	Name & Rank	
01.	S/Shri Anurag Agarwal, Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
02.	Subhashish Baruah Sub Divisional Police Officer	(PMG)
03.	Greatson Marak, Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 18.03.2011 an information was received by Shri Anurag Agarwal, IPS, SP, Karbi Anglong regarding movement of KPLT cadres with arms and ammunition in the area of Dengja Teron gaon under Bopathar PS. On receiving the said

information Shri Anurag Agarwal, alongwith other Police and security personnel launched a joint operation in coordination with 5th Raj Rifle and 20 Bn CRPF in the early morning under the able leadership of Shri Anurag Agarwal, IPS. At around 6 AM when the police party was crossing the Dengja Teron gaon there was a heavy firing on the police party from the jungle side with an intention to kill them. Shri Anurag Agarwal commanded his party for quick retaliation and he also started firing towards the militants with his AK-47 Rifle. While firing as he could not get any cover nearby he exposed himself to the risk of extremist firing and started moving towards them in crawling position. His fearless action against the extremist firing galvanized and motivated other Police personnel, who also started firing towards the militants, resulting into a fierce encounter for about 20-25 minutes. Shri Anurag Agarwal, advanced towards the direction of firing and thus exposed himself to the militants firing. Some militants of the group tried to escape under the cover of darkness and thick vegetation. Similarly Shri Subhashish Baruah, SDPO Bokajan also observed with his party, particularly ABC Greatson Marak and started moving towards the extremist firing. Shri Anurag Agarwal chased the fleeing militants for around 2-3 km till they disappeared in the jungle from other direction. Shri Subhashish Baruah and Shri Greatson Marak also moved towards the extremists. Afterwards he organized a thorough search of the area and during search operation a bullet ridden unidentified dead body in Army uniform was recovered. Later on the dead body was identified as Angtuk Teron, Corporal of KPLT. During search following arms & ammunitions were recovered from the encounter site:—

- (i) AK- 56 Rifle -1
- (ii) AK- 56 Magazine-2
- (iii) Detonator (2 Nos tied with wire)-3
- (iv) Jeletin stick (Neo-gel-90)- 1
- (v) AK-56 live Amns. Rounds- 36
- (vi) AK-56 Empty cases- 23
- (vii) Batteries- 5
- (viii) Electric Switch- 1

In this encounter S/Shri Anurag Agarwal, Superintendent of Police, Subhashish Baruah, Sub Divisional Police Officer and Greatson Marak, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18.03.2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 44-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Bihar Police:—

	Name & Rank
	S/Shri
01.	Ganesh Kumar, Superintendent of Police
02.	Kaleshwar Paswan, Sub Divisional Police Officer
03.	Neeraj Kumar Singh, Dy. Superintendent of Police
04.	Chandra Bhushan Mishra, Sub Inspector
05.	Om Prakash, Sub Inspector
06.	Dhanraj Kumar Junior Commando
07.	Dhiraj Thapa, Junior Commando
08.	Ajay Kumar Choudhary, Junior Commando
09.	Jai Ram Singh, Junior Commando
10.	Prakash Kumar Sharma, Junior Commando
11.	Anirudh Kumar Pandit, Constable
12.	Nandu Ram, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13.03.2011 Shri Ganesh Kumar, IPS, Superintendent of Police, District East Champaran (Motihari), Bihar, received an intelligence input from Shri K. S. Dwivedi, IPS, IG (Ops), Bihar Patna about assemblage of 30-35 armed hardcore ultras of banned CPI (Maoist) in village Darmaha Police Station Kesaria. On receiving this information, SP Motihari immediately collected the necessary details about terrain and topography of the village, planned the operation and chalked out the strategy to apprehend the ultra. He mobilized his district Police force and directed SDPO Chakia, Shri Kaleshwar Paswan, one company of CRPF to reach the village STF (SIG) Force and Dy. SP STF Neeraj Kumar Singh also reached the village on the direction of IG (Ops). As soon as the Police team reached the village around 3.30 PM, the naxal started indiscriminate firing at the police from their

automatic weapons. The Police force took positions and asked the naxals to surrender. However, the naxals continued to fire at the Police. The Police informed SP Motihari, who was already on way to the village, and opened restricted and effective firing at the naxals.

After about half an hour, SP Motihari reached and took charge of the whole situation. The naxals were occupying strategic points, whereas the Police team was in open fields without any protective cover. Unfortunately, SAP Jawan Shivshankar Singh sustained bullet injury in the thigh while crawling to get into the Gypsy. Meanwhile, the ultras positioned themselves in advantageous position in the wheat fields and huts which were inaccessible with Gypsies. Then, the Police team led by the SP moved towards the ultras in crawling position, braving the indiscriminate firing and rescued the villagers trapped inside the huts. As the ultras continued to fire at the Police, the Police too returned the firing. As darkness fell, the Police cordoned the entire village from all sides so that the ultras could not escape. Throughout the night, the ultras made many futile attempts to escape by resorting to indiscriminate firing. But all such attempts were foiled by a strong counter offensive, effective cordon, and alert patrolling.

At around 2 AM on 14.03.2011, Sri K. S. Dwivedi, IG Operations reached the spot, took on spot stock of the situation and took over command in his hands. IG (Operation) endowed with high caliber, immaculate planning and its flawless execution, took the lead of the action. Before sunrise he with Police teams braving all odds, started moving towards the naxalites, under available protection. The naxalites once again made concentrated effort to stop them by heavy fire. The Police men fired in counterattack which resulted in death of two extremists. Exploiting the prevailing situation, members of both Police teams, irrespective of serious risk to their lives, attacked the Naxalites, with exemplary courage and arrested ten of them with arms.

After sunrise, an extensive search operation was launched and dead bodies of 6 naxals and huge catche of Arms and Ammunition were recovered. This included 14 Police Rifles (all looted by the naxals from Police men of Bagaha, Sitamarhi, Motihari and Rail Muzaffarpur Districts), 1449 live rounds and 2 live bombs. The arrested naxals included Atish, a Sub-Zonal Commander of CPI (Maoist), who had executed several naxal operations in past. Because of the meticulous planning and execution of operation by SP Motihari and IG (Operation) 10 hardcore extremists were arrested and 6 killed, without causing any injury to the civilian population.

The Police officers and men have exhibited great sense of commitment and sincerity at the call of duty and without caring for their lives and personal safety, exhibited the highest form of courage and lead from the front in an unprecedented operation against the naxals.

The following Arms/ammunition recovered from the site of operation:—

i)	Dead Bodies of Killed Naxals	- 06
ii)	Naxalites Apprehended	- 10
iii)	7.62 MM SLR Rifle	- 05 Nos.
iv)	.303 Bolt Action Rifle	- 09 Nos.
v)	Country made Pistol	- 01 No.
vi)	Empty Magazine of 7.62 MM SLR	- 11 Nos.
vii)	Empty Magazine of .303 MM Bolt action	- 11 Nos.
viii)	Live round of 7.62 MM	- 695 Round
ix)	Live round of .303 MM	- 733 Round
x)	Empty case of 7.62 MM	- 56 Nos.
xi)	Empty case of .303 MM	- 11 Nos.
xii)	Empty case of 7.62 x 39 MM	- 32 Nos.
xiii)	Charger clip of .303 MM Ammunition	- 68 Nos.
xiv)	Walky-Talky Set	- 02 Nos.
xv)	03 Battery Tource	- 01 No.
xvi)	Electronic Detonator	- 01 No.
xvii)	Electronic Charger	- 01 No.
xviii)	Flash for laser mine	- 01 No.
xix)	Purse with Cash	- Rs. 2000/-
xx)	Chindi Cloth	- 25 Gm

In this encounter S/Shri Ganesh Kumar, Superintendent of Police, Kaleshwar Paswan, Sub Divisional Police Officer, Neeraj Kumar Singh, Dy. Superintendent of Police, Chandra Bhushan Mishra, Sub Inspector, Om Prakash, Sub Inspector, Dhanraj Kumar, Junior Commando, Dhiraj Thapa, Junior Commando, Ajay Kumar Choudhary, Junior Commando, Jai Ram Singh, Junior Commando, Prakash Kumar Sharma, Junior Commando, Anirudh Kumar Pandit, Constable and Nandu Ram, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14.03.2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 45-Pres/2013—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for

Gallantry to the undermentioned officers of Chhattisgarh Police:-

Name & Rank

S/Shri

01.	Mayank Srivastava, Addl. Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
02.	Neelkanth Sahu, Dy. Superintendent of Police	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 15th of December 2008, Narayanpur Police received information that armed Maoists of Kohkameta Dalam were organizing themselves in large number near village Kumnar and Ghodagaon in inaccessible and undulated Abujh-Maad Hills area of Narayanpur, to cause some big terrorist incident. On the basis of this information, the same night under the leadership of ASP Shri Mayank Srivastava and Dy. S.P. Neelkanth Sahu (Dy. SP Head Quarter) a joint force of DEF and CRPF left for Ghodagaon. On reaching the jungle area of Ghodagaon on 16.12.2008 morning, the force was divided into 3 parties - Party 1 under Dy.SP Hq Shri N K Sahu, Party 2 under ASP Srivastava and Party 3 under DC Sri Lalit Yadav 63 Bn CRPF. ASP Srivastava divided the task and briefed the party commanders. Party 1 led by Shri Sahu was cut-off party towards east of Ghodagaon, while Party 2 and Party 3 were to cordon and search Ghodagaon and Kumnar respectively. Party 2 and 3 were searching and by early morning advancing towards east of Ghodagaon. Party 1 spotted movement of some armed maoists on Ghodagaon hillocks. Party 1 informed both the other parties and advanced towards the target. Maoists started indiscriminate firing on the party but Dy.SP Sahu alongwith some of his men retaliated wisely while advancing towards them. Dy.SP Sahu and one special police officer (gopaniya sainik) advanced a bit too close to the maoists and were ahead of all other men, so to avoid cross firing, others stopped firing. Yet he continued advancing and firing, without caring for the safety of his own life. A grenade exploded very near to them. In the meantime Party 2 also reached near the target. Maoists were on an advantageous position by being on the hillocks. ASP Srivastava observed the terrain and location of Maoists and Police parties, and started cordoning them from the other side. Another group of Maoists started heavy firing on Party 2. ASP Srivastava showed exemplary courage and advanced towards Maoists with some of his men giving a direct assault on them. Even though the enemy was firing indiscriminately, and bullets were flying past him, yet he kept on moving courageously and tactically, without caring for the safety of his own life. He inspired his men to follow him. Soon Maoists lost their morale of continuing the fight and started retreating. Party 3 also reached from the other side. When Party 3 was moving towards the firing site, naxals blasted 3 landmines, DC Lalit and Constable Kulvinder Singh challenged naxals and with retaliatory fire and kept on advancing towards them. Seeing the heavy action of all

3 parties, maoists withdrew by getting down the hills from other side taking the advantage of dense forests. On searching the area, Police recovered two dead bodies of uniformed Maoists.

Recovery: The Police party also recovered one muzzle loading gun, one I.E.D., Explosive Powder, 9 MM pistol, 06 live Round, one grenade, one Torch, one Radio, Seven fataka bombs, electric wire 50 mtr, 01 detonator and other incriminating materials.

In this encounter S/Shri Mayank Srivastava, Addl. Superintendent of Police and Neelkanth Sahu, Dy. Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16.12.2008.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 46-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Chhattisgarh Police:-

Name & Rank

Shri Dhaneshwar Yadav, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On October 21, 2010 two joint teams comprising of the 38 Bn ITBP and district police moved for anti-naxal operation in Manpur PS area of Distt. Rajnandgaon adjacent to the Chhattisgarh-Maharashtra border. The first team was led by Inspector H.P. Nayak and the other team was led by Inspector Sanjay Singh of the district police force. Later in the day, the two parties met at village Parvidih and launched search operation in the hilly and dense forest area of Bukmarka and Sambalpur. At about 20.00 hrs, a group of about 40-50 heavily armed naxals ambushed the Police party and opened heavy fire on it at a place about 2 kms from Sambalpur.

Constable Dhaneshwar Yadav displayed immense personal courage and tactical acumen during the encounter. He moved close to the naxal positions and engaged the naxalites effectively by firing from his personal weapon. His gallant action in face of heavy enemy fire motivated other jawans. The effective response of the security forces made the naxals flee. Constable Dhaneshwar Yadav and other jawans under the leadership of Inspector H.P. Nayak chased the fleeing naxals. During the encounter and pursuit of the naxalites, Constable Dhaneshwar Yadav got seriously wounded and laid down his life enroute to Rajnandgaon.

Constable Dhaneswar Yadav displayed exemplary courage in face of grave danger and highest level of devotion to duty. He laid down his life in line of his duty.

Recovery: 03 muzzle loading Guns, 2.860 kg explosive etc.

In this encounter Late Shri Dhaneshwar Yadav, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/10/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 47-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Delhi Police:—

Name & Rank

Shri Naresh Kumar, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the intervening night of 17th and 18th May 2012, Shri Naresh Kumar, Constable alongwith DHG Constable Shankar was on picket duty at Bunkar Chowk and patrolling on M/Cycle No DL-ISN-5993 in the area of PS Bharat Nagar. At around 2.00 PM on receipt of an information on wireless set pertaining to stoning by 5/6 persons on board Tata-407, he intensified that patrolling in the area. At around 2.45 PM on receipt of further information through wireless set that the above said Tata-407 was being chased by police vehicle and it was entering area of Police Station Bharat Nagar. He alongwith the DHG Constable took position at Bunkar Chowk picket to intercept the said vehicle. In the meantime that Tata-407 in which 5/6 persons were standing behind and 2/3 persons were in the driver cabin, came rushing from JJ Colony, Wazirpur side and passed from the picket. The said vehicle was being chased by three police vehicles. He alongwith DHG Constable started chasing the said vehicle. He was warned by occupants of Tata-407 not to pursue the chase ignoring the intimidation and without caring for threat to his life, he continued chasing the Tata-407 and near Bharat Nagar drain, he overtook the said vehicle. He shouted at the staff deployed at the picket to close the barricades to stop the said vehicle. On this, the persons on board Tata-407 shouted to kill him and immediately the driver of the said vehicle hit his M/Cycle and run the vehicle over him. He died on the spot.

It is worth mentioning that the said vehicle Tata-407 was plying without its Registration number plate and these culprits had also attacked people with iron rod and pelted stones in a marriage ceremony which was taking place in the

area of K-Block Sakurpur, Delhi. They were being chased by two PCR vans and one ERV of PS Subhash Place, North-West District Delhi.

Constable Naresh Kumar showed exemplary courage and outstanding sense of responsibility and chases the goons travelling in the vehicle despite repeated intimidation and high risk involved in doing so and laid down his life for the service of the nation.

In this encounter late Shri Naresh Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/05/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 48-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

Name & Rank

S/Shri

01. Vidhi Kumar Birdi,
Superintendent of Police
02. Haseeb-Ur-Rehman,
Addl. Superintendent of Police
03. Noor-Ul-Hassan,
Dy. Superintendent of Police
04. Amjid Khan,
Follower

Statement of service for which the decoration has been awarded

During the intervening night of 14-15/07/2011, District Police Kupwara received a specific information about the presence of some terrorists in the house of one Gh. Mhd. Mir s/o Gaffar Mir at Muqdam Mohalla, Maidanpora. Dy. SP (ops) Lolab along with Police party laid a cordon around the house alongwith troops of 18 RR. In the morning of 15.07.2011, terrorists hiding in the house opened indiscriminate firing and took 04 inhabitants of the house as hostage. It became very difficult to rescue the hostages (inmates) as terrorists started heavy and indiscriminate firing in all directions and at the same time the forces could not retaliate as it could have led to collateral damage in terms of civilian casualties. The priority was to rescue the hostages and evacuate the civilians living in the vicinity. Sh. Vidhi Kumar Birdi, SP Kupwar, Sh. Haseeb-ur-Rehaman, ASP (ops), Kupwara and Sh. Noor-ul-Hassan, Dy. SP (ops) Lolab, in consultation with other forces devised a strategy to rescue

the hostages. Simultaneously the civilians living in the vicinity, were evacuated. Sh. Vidhi Kumar Birdi, SP Kupwara alongwith Sh. Noor-ul-Hassan, Dy. SP (ops) Lolab, went very close to the house in a BP bunker and tried to persuade the terrorists to release the hostages. The terrorists were asked to release the hostages but at the same time the inmates were encouraged to come out of the house. As the BP bunker started receiving heavy fire, the party retreated.

After a while, Sh. Vidhi Kumar Birdi and Sh. Noor-ul-Hassan in the form of a small team assisted by Ct. Mohd Akbar, and Foll. Amjid Khan went close to the rare side of the house under intense firing, without caring for their lives and safety, so as to encourage the inmates to move out. Finally all of the inmates were pulled out from the window of the ground floor of the house and evacuated except one lady as the terrorists started lobbing grenades from the first floor and firing towards the team retreated to a safer location.

Meanwhile in order to shift the attention of terrorists, thrust was given to the evacuation of civilians from the adjoining houses in the vicinity. Sh Haseebur Rehman, ASP (Ops), Kupwara alongwith police party started evacuating the civilians from the surrounding houses to the safer location without caring for their life as terrorists were continuously firing and these surrounding houses were directly in the arc of fire of the terrorists. During the operation, another attempt was made by Sh. Vidhi Kumar Birdi, SP Kupwara, Sh. Noor-ul-Hassan, Ct. Mohd Akbar and Foll. Amjid Khan and the lady were rescued successfully despite intense firing from the terrorists.

The Police party led by Sh. Vidhi Kumar Birdi, SP Kupwara, Sh. Haseebur Rehman, ASP (ops), Kupwara and Sh. Noor-ul-Hassan, Dy. SP (ops) Lolab controlled and restrained the firing of other forces till the evacuation was complete thus preventing any chance of civilian causality/injury. Soon after the inmates were rescued and civilians evacuated, operational teams under the guidance of the officers got involved in launching offensive against the holed up terrorists inside the house, resulting into a day long fierce gunfight wherein the house caught fire. The operation got extended till 16/07/2011 as the terrorists were still firing intermittently from inside the house. Subsequently the operation was concluded in the evening of 16/07/2011. In this operation five terrorists (FTs) inside the house got eliminated who were indentified as Qari Saifullah (LeT), Qari Hammad (LeT), Saqib Bhai (LeT), Chota Saad @ Chota Qari (HuM) and Umair @ Hafiz (JeM). Following quantity of Arms/Ammunition were also recovered from their possession:—

01	AK - 47	05
02	AK 47 Magazine	21
03	UBGL	05
04	Radio Set I-COM	01

In this encounter S/Shri Vidhi Kumr Birdi, Superintendent of Police, Haseeb-Ur-Rehman, Addl. Superintendent of Police,

Noor-Ul-Hassan, Dy. Superintendent of Police and Amjid Khan, Follower displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/07/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 49-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

Name & Rank

Shri Waseem Ahmad,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On March 26, 2009 over a specific information regarding presence of one of the most wanted terrorist of North Kashmir in a residential house belonging to one Kalam-u-din Kisana s/o Faqir Mohd Kisana r/o Hatchmargi Vilgam, Police Handwara with the assistance of 01-PARA and 06 RR swiftly prepared a team and divided it into three splinter groups. One of the group led by SI Waseem Ahmad, while reaching in the close proximity of the said house, observed the presence of some civilians in the adjoining houses of the target house. Waseem Ahmad, SI alongwith his team moved with exemplary courage to rescue the civilians from the site. As soon as, Waseem Ahmad and his team started evacuating the civilians, the terrorist fired upon them. However, Waseem Ahmad, SI displayed excellent presence of mind and greatly utilized his skilled tactics as a result of which he evacuated the family members from the target house and shifted them to safer places. After this, the terrorist was asked to surrender which he refused and rather fired indiscriminately upon Waseem Ahmad, SI and his team, who were at a vulnerable site while challenging the terrorist. Due to the high battle tactics, Waseem Ahmad, SI managed to rescue himself from the abrupt attack of terrorist and in a lying position retaliated the attack of the terrorist. The fire was retaliated in a professional and skilled manner so as to avoid any sort of damage to the life of civilians and property. The firefight continued for hours as the terrorist continued to fire and lobed grenades upon the operational party. The other groups of operational party were manning the outer cordon of the target house so that the terrorist may not flee from the spot. After sensing it that the terrorist is holding a huge quantity of ammunition and the encounter could continue for the night which may prove fatal for the operation party, SI Waseem Ahmad voluntarily moved towards the target house in retaliatory fire exercise during which the terrorist also fired indiscriminately upon Waseem Ahmad, SI. But with great valour and vigor, Waseem Ahmad, SI succeeded in

reaching inside the house and launched a massive assault as a result of which the terrorist was, later-on, identified as Mohammd Umer Bahi s/o Mohd Suliman R/o Chak No. 40/12-L, Tehsil Chicha Watni Distt. Sahiwal, Pakistan of LeT outfit. The said terrorist was active in the area of Rajwar and Ramhal for a very long time and had developed a reign of terror among the people and main stream political workers of the said area. His killing was highly commended by the local masses of the area and the role of Police Handwra in the operation in general and of Waseem Ahmad, SI in particular was also lauded.

Recoveries Made:

1. AK-47 Rifle	- One Number
2. AK Magazines	- One
3. AK Rounds	- Twenty
4. Pouch	- One

In this encounter Shri Waseem Ahmad, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/03/2009.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 50-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

Name & Rank
S/Shri
01. Mohd Shafi Mir, Addl. Superintendent of Police
02. Raj Kumar, Dy. Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 15.02.2010, over specific information about presence of terrorists at Village Thokerpora Qaimoh Kulgam, an operation was launched under the supervision of Mohd. Shafi Mir, Addl. SP Kulgam and Sh Raj Kumar Dy. SP (Ops) Kulgam with the assistance of 9 RR and 18th Bn CRPF. Accordingly, the entire area was cordoned off under proper strategic plan to nab/eliminate the terrorists hiding in the village. The biggest challenge was to identify the house in which the terrorists were hiding and to dominate the adjoining houses also. At about 07.10 hours when search of the target house was going on, the party came under heavy volume of fire from different directions. Mohd. Shafi Mir, Addl. SP Kulgam and Sh. Raj Kumar Dy. SP (Ops) Kulgam handled the operation party with great courage. In the

process, one of the terrorist came out of the house to escape from the site of encounter. Mohd. Shafi Mir, Addl. SP Kulgam, however, exhibiting great alertness by way of targeting the said terrorist and killed him on spot. Shri Raj Kumar, Dy. SP (Ops) Kulgam, after elimination of the terrorist, mounted pressure on another terrorist with the result he also came out of the house and was shot dead by the said officer from a close range. The terrorists were, later on identified as Mohd. Ashraf Sheikh @ Ashraf Molvi (Distt. Comdr) S/o Gh. Hassan Sheikh R/o Rampora Qaimoh and Rouf Ahmad Bhat @ Abu Saleem S/o Mohd. Maqbool Bhat R/o Redwani Qaimoh, who were involved in many terrorist related activities.

Asraf Molvi was working as District Commander of LeT outfit. He was detained under PSA twice but after release did not remain silent and re-indulged afresh as a hard core terrorist. The subject played vital role in motivating youths to join militancy and was also responsible in killing of Gulzar Ahmad Dar S/o Jalaludin Dar R/o Brazloo, besides firing on Police Station Qaimoh on two occasions. Both the terrorists were killed without any collateral damage of life or property which indicates the leadership qualities and presence of mind on the part of Mohd. Shafi Mir, Addl. SP and Raj Kumar, Dy. SP. The following Arms/Ammunition were recovered:—

1. AK 46 Rifle	- 01 No.
2. AK 47 Rifle (KK)	- 01 No.
3. Magazine	- 03 Nos.
4. AK-47 rounds	- 50 Nos.
5. Grenade	- 01 No.

In this encounter S/Shri Mohd. Shafi Mir, Addl. Superintendent of Police and Raj Kumar Dy. Superintendent of Police conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/02/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 51-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police:—

Name & Rank

Shri Mohd. Khursheed Wani
SG Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08.06.2010, over a specific information, regarding the presence of terrorists in the forests of Lahanpathri area of

D H Pora, Kulgam an operation was launched by SOG Kulgam and 62 RR. The entire area was cordoned off under proper strategic plan to nab/eliminate the terrorists hiding in the area. The biggest challenge with operational group was to localize the terrorists hiding in the dense forests. SP Kulgam alongwith CO 62 RR, reached the spot. A party under command of Dy. SP Ops Kulgam was formed and given the task to localize the terrorists/identify the location of hiding terrorists and to dominate the adjoining forests. The terrorists on noticing the operational party resorted to indiscriminate firing from different locations of the forests. However, amidst heavy firing, the SOG Party with the help of BP shield advanced towards the forests from where the terrorists were firing. The endeavor of SOG Party to reach the location was truly gallant. The storming party successfully occupied the target area and without wastage of time cleared some forests adjacent to the target location. This was done in a lightening pace coupled with true exhibition of professionalism and finally the fire fight started which continued for almost 02 hours and in the gun battle one terrorist of HM outfit namely Farooq Ahmad Dar @ Ishfaq S/o Ghulam-Ud-Din Dar R/o Bramdar Tehsil Mohore got killed. The said terrorist was active in District Reasi for some time and later on, sneaked to DH Pora area for carrying out the terrorist activities in the said area.

The professionalism coupled with outstanding courage demonstrated by SOG party particularly Sgct. Mohd. Khursheed Wani was remarkable as the endeavor to reach to the target in extremely hostile situation was truly gallant. Completion of the mission remained the key feature of this operation. The operation was a surgical one without any damage in terms of life or property. The following arms and ammunition were recovered:—

1. AK -56 Rifle	: 01
2. AK -Magazine	: 03
3. AK-Ammn	: 40 Rds

In this encounter Shri Mohd. Khursheed Wani, SG Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/06/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 52-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police:—

Name & Rank

Shri Rishi Kumar
Follower

Statement of service for which the decoration has been awarded

Over a reliable information about the presence of JeM Chief Commander Abu Dawood in Narol area, a source was deputed to go in hunt of his exact hideout. On 16/01/2010 the deputed source informed that the wanted commander is roaming in Shinkatha. Accordingly, a joint search and destroy operation was launched under the supervision of the DIG and SSP Poonch and the suspected area was cordoned off. In the wee hours of 17/01/2010 a house to house search was made. In the mean time commando group contingent led by Dy. SP (Ops) Poonch also joined the search operation. The search operation continued till noon but of no avail. Thus the party was asked to relax for some time nearby spring. At about 1500 hours source Mohd. Razaq (code name) informed that Dawood is present in the house of Rtd. HC Mohd. Din. The said civilian led the troops to the suspected house. SPO Maqsood Ahmed and SPO Mohd. Farooq challenged the terrorist to surrender but in turn they received indiscriminate fire and had a narrow escape. Despite heavy fire both the SPOs kept on advancing in kneeling position to the direction of fire. The terrorist was hiding in a cattle shed and was firing intermittent from a window. Besides he also lobbed grenade on the raiding party. Both the SPOs without caring for their lives surged forward towards the window and threw grenade one after the other. After the blast the atmosphere became calm for a short spell. Meanwhile Dy. SP(ops) and follower Shri Rishi Kumar standing close to door of cattle shed saw a terrorist lingering on because of an injury and trying to escape. On seeing them, the terrorist opened fire upon them. On this, both of them chased the fleeing terrorist upto 10-15 meters without caring for their lives, gave him a burst fire and the terrorist was shot dead. The slain terrorist was identified as Abu Dawood Chief Commander of JeM.

Recoveries Made:—

1. Rifle AK-56	01 Nos.
2. Mag. AK	03 Nos.
3. Ammn. AK	61 Rounds
4. Chinese Grenade	02 Nos (destroy in situ)
5. Mobile set Nokia	01 Nos.
6. SIMs	07 Nos.
7. Radio Set ICOM	01 No. (damaged)
8. Pistol rounds	10 Nos.
9. 7.62MM Pistol Rds.	02 Nos.
10. Indian Currency	Rs. 1400/- in purse and Rs. 3837/- pierced with bullet

In this encounter Shri Rishi Kumar, Follower displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/01/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 53-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police:—

Name & Rank

Shri Morifath Hussain, (Posthumously)
SG Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 02.06.2011, on a specific information regarding the presence of terrorists in Village Seer Road Sopore, an operation was planned/launched by Police Sopore/52 RR. On reaching the target site, the area was cordoned and presence of terrorists got established. The cordon was tightened by the deployment of joint troops of Army 52 RR/ Police Sopore and no loophole was left for the escape of terrorists from the cordon. During the exercise of cordon and search operation, the searching parties suddenly came under heavy volume of fire from a house which was under the scanner of cordon and search party thereby, making the task of rescuing the civilians from the target house and from its adjoining houses more herculean. A small team of JKP headed by then SP PD Sopore accompanied by Sg Ct. Morifath Hussain became volunteer for the said job. The rescue team of JKP by putting their life to great risk evacuated all the civilians trapped inside the target house as well as from the surrounding houses. During the entire rescue operation, the dreaded terrorists kept on firing indiscriminately upon the rescue party in general and on Morifath Hussain, Sgct in particular. However with great caution and care and by exhibiting high professionalism, all the civilians were successfully evacuated. Soon after this exercise, the joint operation teams involved themselves in launching offensive against the holed up terrorists resulting in a long drawn gun battle. Since the terrorists were in possession of huge cache of arms/ammunition thereby, relentlessly firing upon the operation parties. Sensing the weapon power present with the terrorists, the operation team in general, and Morifath Hussain, Sgct in particular, keep their moral high and pushed the terrorists hard with their inexorable fire retaliation and ultimately proved instrumental in the neutralization of three hardcore top terrorists of Let outfit who were late on identified as FT Abdullah Babar R/o PAK, Faisal Ahmad Bhat @ Gazali S/o Gh Hassan Bhat R/o Bagat Batpora Sopore and Gh Nabi Dar S/o Mohd. Ayoub Dar R/o Naseembagh Seer Road Sopore. In this regard, case, FIR No 146/2011 U/S 307 RPC 7/25 A Act stands registered in P/S Sopore. The arms and

ammunition recovered during the operation includes 03 AK-47 Rifles (damaged), 06 AK Magazines (damaged), 55 AK rounds, 03 RPG, 01 Matrix sheet and 02 Mobile phones.

In the entire operation, Shri Morifath Hussain, Sgct played a conspicuous role of bravery/camaraderie and ensured the safe evacuation of the civilians. The selfless devotion to duty and matchless courage exhibited by the official led to the neutralization of three dreaded terrorists. However, the said official later got martyrdom on 06.07.2011 in mine blast carried out by terrorists at P/S Sopore. To this effect, case FIR No 182/2011 stands registered in PS Sopore.

In this encounter late Shri Morifath Hussain, SG. Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/06/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 54-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

Name & Rank

S/Shri

01. Showkat Ahmed,
SG Constable
02. Syed Gowhar,
Constable
03. Muneer Ahmed,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On a specific information generated by SOG Handwara regarding presence of terrorists in Hamla Krimhora Forests (Tehsil Handwara District Kupwara), an operation was planned/carried out by SOG Handwara with the assistance of 21 RR. The target site was properly cordoned by the joint operation teams and contact with the hiding terrorists got established in the evening of June 15, 2011 when terrorists tried to break the cordon and open volley of fire on the Police party which includes Sg Ct. Showkat Ahmad, Ct. Syed Gowhar 7th Bn., Ct. Muneer Ahmad. They and their associates retaliated the fire effectively leaving no chance for terrorists to break the cordon and flee from the spot. Having good combating skills in Counter Insurgency Operation, these personnel became volunteer and advance towards the hiding location of the terrorists and launched massive assault on them which lead to neutralization of one

terrorist on the spot. The other terrorist was still holding good quantity of arms/ammunition and tried to break the cordon but was engaged by these police personnel in firefight and finally got killed. The terrorists were later on, identified as Abu Jibrān @ Aamir R/o PaK Div, Commander LeT for North Kashmir and Naveed R/o Pakistan LeT.

Both the slain terrorist were active in the area of Rajwar, Ramhal, Qaziabad, Mawar areas of Police District Handwara for quite a long time and have developed a rein of terror among the people and main stream political workers of the said area. These terrorists were involved in various subversive activities in the area and were a great threat for VIPs, Security Forces and Police agencies and were also motivating youths to join terrorist cadres.

The following arms/ammn/other items were recovered:

1. AK 47 Rifle	:	02 Nos.
2. AK Magazine	:	08 Nos.(01 damaged)
3. AK rounds	:	209 Nos.
4. Chinese Grenade	:	02 Nos.
5. Pouch	:	02 Nos.
6. Indian Currency	:	Rs. 2020/-
7. Wireless Set	:	01 No.(damaged)

In this encounter S/Shri Showkat Ahmed, SG, Constable, Syed Gowhar, Constable and Muneer Ahmed, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/06/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 55-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

Name & Rank

Shri Stanzin Narboo, (Posthumously)
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On April 05, 2011 Awantipora Police received specific information regarding the presence of HM District Commander Sajad Ahmad Dar @ Amir/Balley/Molvi S/o Gh. Mohi-u-din Dar in the house of Javid Ahmad Sheikh S/o Md. Akbar Sheikh in Village Dadsar. The operation was planned with 42 RR and cordon was established around the

said house. The outer cordon was established with the assistance of 180 &185 CRPF. A joint team of Police & RR headed by Inspector Tariq Ahmad NGO SHO Awantipora was constituted for house intervention. The other team members were SI Stanzin Narboo, SI Nazir, Ct. Ashok Singh, Ct. Bikram Singh SOG Tral, Ct. Nazir Ahmad, 05 SPO's and 03 Army personnel of 42 RR who stormed into the house for search, but could not find the terrorist commander as he hid himself in the bathroom. The holed up terrorist fired upon the search operating team, injuring SI Stanzin Narboo of Police and one Jawan Amarjit Singh. Rest of the Police party took positions immediately in two separate rooms of the house. Meanwhile terrorist came out of the hideout and tried to flee, injured SI Stanzin Narboo bravely fired and injured the terrorist. Later on SI Stanzin Narboo & Amarjit Singh of RR succumbed to injure. SI Nazir Ct. Ashok Singh, Ct. Bikram Singh SOG Tral, Ct. Nazir Ahmed, 05 SOP's engaged the terrorist into gun fire. The terrorist fired indiscriminately, lobbed grenades and tried to run away from the target house to nearby mustard fields.

Showing excellent courage, professional qualities and past experience in counter insurgency search operations, the joint search team members fired upon the terrorist and killed him on spot. During encounter Maj Tashi Wagyal & SPO Shamim Ahmad got injured. Killed terrorist was of "A" category of HM outfit and was operating in Tral area since last 06 years. He was commanding the HM outfit in the area and was involved in a number of subversive activities/ killings of civilians. With the killing of said terrorist the general public has a sigh of relief.

Recoveries Made:—

01	AK Rifle	01 No.
02	Magazine of AK 47	04 Nos (03 damaged)
03	AK Ammunition	58 Rds.
04	Detonator	03 Nos.
05	Mobile batteries	04 Nos.
06	Pouch	01 No.
07	Seal with pad	01 No. each
08	Cutter	01 No.
09	Indian Currency	Rs. 35,580/- (Rs. 3230 damaged)

In this encounter Late Shri Stanzin Narboo, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/04/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 56-Pres/2013—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

Name & Rank

Shri Daler Singh, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30.09.2010, on a specific information developed by police Ganderbal regarding presence of terrorists in village Akhal, a joint operation of Army and police was launched in the area under the command of Shri Sanjay Bhagat DySP(Ops) Ganderbal. While the Army laid an outer cordon, the target house was sealed off by Police and all the escaping routes were plugged in. The police party comprising of Sgct. Ghulam Mohammad Dar, Const. Omkar Singh, Const. Mohinder Singh and Const. Daler Singh while tried to enter the house, the terrorists fired indiscriminately on the advancing party to break the cordon and escape. All the officials showing extreme presence of mind and exemplary courage managed to engage the terrorists to avoid their escape. In the meanwhile one terrorist came out towards Const. Daler Singh and fired upon him, taking cover of the compound wall of the target house, and injured him seriously. However despite being injured Const Daler Singh with high degree of devotion towards duty fired upon the terrorist and injured him with a supporting fire from the Police party consisting of Sh Sanjay Bhagat DySP (Ops), Sgct. Ghulam Mohammad Dar, Const Omkar Singh and Const. Mohinder Singh. However, with the advance of Shri Sanjay Bhagat DySP (Ops), who also aimed at terrorist from a very close range taking risk of his life, the terrorist was killed in an ensuing encounter. However, Const. Daler Singh also succumbed to his injuries.

The above mentioned police personnel under the command of Shri Sanjay Bhagat DySP (Ops) Ganderbal, taking advantage of effective covering fire by Army, again advanced towards the target house where from the terrorists were continuously targeting the advanced party. SgCT Ghulam Mohammad Dar, Const Omkar Singh and Const. Mohinder Singh crawled in the paddy fields on the eastern side and despite heavy volume of fire, they managed to reach a close proximity of the house. The terrorists continued the fire from the concrete bathroom of the house. Sh Sanjay Bhagat DySP (Ops) with a cover fire from other police officials lobbed a grenade to flush out the terrorist from the bathroom. While coming out the terrorist targeted the police party with a heavy volume of fire in which Const. Omkar Singh got injured. Showing highest degree of comradeship and leadership Shri Sanjay Bhagat DySP (Ops) Ganderbal evacuated the injured colleague from the scene and engaged the terrorists with an effective fire alongwith Police party and killed him. Both the slain Pakistani terrorists of Lashkar-e-Toiba outfit were later identified as (1) Hafiz Jabbar and (2)

Amir. The following quantity of arms and ammunition were recovered from the site of encounter:-

1.	AK Rifles	- 03 Nos.
2.	AK Mags	- 07 Nos.
3.	AK Rds	- 43 Nos.
4.	Pouch	- 01 No.
5.	UBGL	- 01 No.
6.	UBGL Grenades	- 01 No.

In this encounter Late Shri Daler Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/09/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 57-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

Name & Rank

Shri Ghulam Hassan Gojjar, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 21.06.2010, over a specific information regarding presence of a terrorist in Baghat Batpora Sopore, Police Sopore with the assistance of 22 RR planned the operation and rushed for the target site. The Police party under the command of SP P D Sopore in association with the troops of 22 RR, carried out cordon & search operation of the area. The searching party was led by Ct Gh Hassan who without taking care of his own safety, approached the house where the terrorist was hiding. On sensing that the above named Police officer and his associates are proceeding towards the hiding location, the terrorist opened volley of fire on Gh. Hassan and his associates. Before retaliating the fire, Ct Gh Hassan involved himself in the job of rescuing of civilians and during this exercise, terrorists time and again targeted him but due to high camaraderie exhibited by Gh. Hassan, he managed to evacuate all the civilians from the encounter site amidst in a volley of fire. Soon after rescue exercise, Ct Gh Hassan while leading from front retaliated the fire from a very close range resulted in an intense gun battle which concluded with the elimination of the terrorist who was later on, identified as @ Zubair Umair R/o PoK of LeT outfit. During the gun battle and in the process of evacuation of civilians, Ct Gh Hassan received a number of bullet injuries

and due to excessive bleeding, he achieved martyrdom. In this regard, case FIR No 286/2010 u/s 307, 7/27 I A. Act stands registered in P/S Sopore. Arms/ammunition was also recovered from the site of encounter.

Recovery:-

1. AK- 47	- 01 No.
2. AK-47 Mag	- 02 Nos.
3. AK-47 Rds	- 10 Nos
4. Pistol	- 01 No.
5. Pistol Mag	- 01 No.
6. Mobile phone	- 01 No.
7. Matrix Sheet	- 02 Nos

In this encounter Late Shri Ghulam Hassan Gojjar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/06/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 58-Pres/2013—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

Name & Rank

S/Shri

01. Yougal Manhas, Addl. Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
02. Vivek Gupta, Addl. Superintendent of Police	(PMG)
03. Sikander Hussain, Follower	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

Over the reports from 8th of July, 2010 regarding hiding of few terrorists in Beri Rakh (Chajjla village) area of P/S Mendhar which is thick vegetated with thorny bushes and quite vast in nature, Addl SP Poonch Yougal Manhas and SDPO Mendhar Vivek Gupta, IPS deputed SPO Mohd Yasin and SPO Rohit Sharma being locals, to go in hunt of their exact hide. It was a difficult task to sanitize it. After concentrated efforts and liaison with locals, on 13.07.2010, the deputed SPOs informed Addl SP Poonch and SDPO

Mendhar about presence of a few terrorists in a groove of bushes towards East of the Rakh. Accordingly the input was shared with NCA and a joint search operation was launched on 13.07.2010. The Police search party was divided into three columns each led by Addl SP Poonch, SDPO Mendhar and Dy SP(Prob) Pardeep Singh. The column led by SDPO Mendhar formed cordon from West, whereas column led by Addl SP was supposed to form siege from East. Similarly column led by Dy SP (Prob) was supposed to advance from below i.e. from bank of nallah. The area was dense with thickly and low lying thorn laden bushes. It was cumbersome to advance. Perforce troops had to advance in kneeling and lying positions. The surface was slippery and Jawans had to maintain their balance by holding thorn laden branches. The search commenced in the afternoon. When the party led by SDPO was advancing towards East from West, all of a sudden at about 1730 hrs terrorists opened fire and threw grenade from the nearby vicinity which proved quite detrimental as two of Army officers and five other ranks including SPO Mohd Yasin sustained injuries, minor & serious. Out of the seriously injured, Maj Ajit Kumar Thingi laid down his life. The fire was retaliated. Soon it was war like situation, despite heavy fire and terrain all the contingents did not deter from advancing. Suddenly SDPO Mendhar saw an Army jawan bleeding profusely; he went close to him and simultaneously ordered SPO Rohit Sharma & SPO Mohd Yasin to lift the injured jawan to a safer place for medical aid. SPO Rohit Sharma & SPO Mohd Yasin who had sustained minor injuries amidst heavy fire without caring for themselves, lifted the jawan and brought him at a safer place for evacuation. Though the exchange of fire continued but some of the terrorists managed to flee. Since there was apprehension that still a few terrorists are trapped, the siege was kept intact. As predicted, terrorists continued firing on searching party personnel on 14.07.2010 which continued till late night. On 15.07.2010, intermittent fire continued. Early in the morning, one terrorist hiding behind a bush who was firing intermittently was spotted by SPO Mohd Yasin & SPO Rohit Sharma who informed the same to the SDPO Mendhar. Without wasting anytime, the SDPO alongwith SPO Yasin & SPO Rohit Sharma advanced and killed the terrorist who was engaged throughout the night by the joint parties.

As the parties led by Addl SP started closing towards west from east, the other terrorist who had by then taken shelter in the other patch of bushes threw a grenade on the advancing party which resulted in minor splinter injuries to the personnel escort of Addl. SP and the terrorist took shelter close to a populated Mohalla of village Chhajla. But despite this, the Addl SP & his party did not lose presence of mind and tightened the cordon. In the meanwhile, it was also ensured by the Addl SP and his party, that the civilians are shifted to a safer place. Now as the parties were closing on to the cordon, the terrorist threw another grenade and fired indiscriminately on the searching party led by Addl SP. It was very difficult to locate the position of the terrorist. Advancing bravely Addl. SP assisted by Ct Badar Din &

Follower Sikander Hussain gunned down the terrorist while he was in the process of escaping to other patch of bushes while firing. With the killing of both the terrorists there was no retaliatory action from terrorists. Hence the combing of the area was carried out. During the course of search both the bodies were seized alongwith arms and ammunition and wireless set. The success of operation was because of acumen used by Addl SP & SDPO Mendhar while leading their parties with adequate moral boosting during the course of retaliatory action despite sustaining of injuries by their personal escort personnel. Whereas, as the SDPO not only provided good leadership but got evacuated an injured jawan and saved him. SPO Mohd Yasin & SPO Rohit Sharma risked their lives and found out the exact hide of terrorist and also lifted an army jawan amid heavy volume of fire and evacuated him to a safer place. On the other side, the Addl SP, CT Badar Din & Follower Sikander Hussain despite getting injured during the grenade attack did not loose their presence of mind and succeeded in locating and killing the fleeing terrorist besides shifting of civilians to safer place from the site of encounter. In this there was recovery of two AK-47 rifle, six magazine of AK-47, Indian currency of Rs.10,000, two religious books and two matric sheets.

In this encounter S/Shri Yougal Manhas, Addl. Superintendent of Police, Vivek Gupta, Addl. Superintendent of Police and Sikander Hussain, Follower displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/07/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 59-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

Name & Rank

S/Shri

01. Azhar Bashir,
Dy. Superintendent of Police
02. Mohd Alyas,
Sub Inspector
03. Mohd Ayaz,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 15.04.2010, over a specific information about shifting of base camp by two terrorists namely Fayaz Ahmad Shah

@ Fayaz Peer (Bn Commander of HM outfit) S/O Mohd Akbar R/O Sangerwani Pulwama and Abdul Rashid Khan @ Osama S/O Abdul Qayoom R/O Sonabrari Kokernag Anantnag from upper reaches of Keller forests to the village Thairana Keller Shopian, a special team from SOG Hqrs. Srinagar under the command of Dy SP Azhar Bashir alongwith SI Mohd Alyas, SI Sheetal Charak, HC Mohd Yaseen, Sg.Ct Farooq Ahmad, Ct Mohd Ayaz, SPO Joginder Paul, SPO Amjid Hussain, SPO Khurshid Ahmad and SPO Gh Hassan Bhat visited the said village and developed the information. The team after carrying out the recce of the area reported back and thereafter the team with adequate strength under the supervision of Dy SP Azhar Bashir, again proceeded to the said village. In order to avoid collateral damage and to conduct a clean operation, Shopian Police and 44 RR were also asked for assistance.

The operational parties were divided into three parties. First party of Shopian Police and 44 RR was tasked to lay the outer cordon of the target area, the second party comprising of a team of Srinagar Police and 44RR was tasked to cordon the Mohalla in which the target house was located and the third party comprising of SOG Srinagar and Shopian Police under the command of Dy SP Azhar Bashir was tasked to lay the close cordon of the house and to make an intervention. With full coordination, the parties marched towards the target area at about 1200 hours on 16.04.2010 at 1520 hours, the close cordon party of the target house evacuated the inmates not only from the target house but from the adjoining houses and shifted them to a safer place. After evacuating the civilians, the two holed up terrorists were asked to surrender which they totally refused. The intervention party started the process of intervention and after reaching near the target house, they came under heavy fire from the terrorists, who had taken position inside the house. The terrorists lobbed grenades towards the advancing party in which the police party had a narrow escape. However, in a tactical move, the intervention party withdrew only to enter the house from the rear side.

At this stage, Dy SP Azhar Bashir, who was in-charge of the close cordon party constituted two small parties and decided to enter the house from both front/rear side. The first party consists of Dy SP Azhar Bashir, SI Mohd Alyas, Sgct. Farooq Ahmad alongwith SPO Joginder Paul and SPO Khurshid Ahmad and the second party of SI Sheetal Charak, HC Mohd Yaseen, CT Mohd Ayaz alongwith SPO Amjid Hussain and SPO Gh Hassan Bhat. As soon as the first party tried to enter the house from the rear side, the holed up terrorist again lobbed grenades from a window but it caused no damage as the approaching party was advancing tactically. Dy SP Azhar Bashir alongwith his team crawled nearer to the window from where the terrorists had lobbed the grenades. At this stage, the terrorists opened the main door of the first floor and jumped with indiscriminate firing in an attempt to break the cordon and run away. SI Sheetal Charak alongwith HC Mohd Yaseen, Ct Mohd Ayaz, SPO Amjid Hussain and SPO Gh Hassan Bhat who had taken position just outside the target house retaliated the fire

effectively with the result one terrorist namely Fayaz Ahmad Shah @ Fayaz Peer S/O Mohd Akbar R/O Sangerwani Pulwama was eliminated while his associate Abdul Rashid Khan @ Osama S/o Abdul Qayoom R/o Sonabrari Kokernag Anantnag ran away towards the Vishru Nala with continuing indiscriminate firing. At this stage Dy SP Azhar Bashir alongwith SI Mohd Alyas, Sgt Farooq Ahmad, SPO Joginder Paul and SPO Khurshid Ahmad chased him bravely without caring for their personal lives and eliminated the second terrorist also . In this connection case FIR No. 157/ 2010, U/S 307 RPC, 6/27. A.Act stand registered in P/S Shopian. Both the terrorists were involved in many civilians killings. The elimination of both the terrorists was a big achievement for the Police and a sever jolt to the network of HM outfit. The following arms and ammunition were recovered:

1. AK -47 Rifle	: 01 No.
2. AK -74	: 01 No.
3. AK Magazines	: 06 Nos
4. AK-Ammn	: 93 Rds
5. Pouch	: 02 Nos.
6. Mobile Battery	: 02 Nos.
7. Wire cutter	: 01 No.
8. Compass Plastic small	: 01 No.
9. Pencil Cell	: 02 Nos.
10. Mobile Charger	: 01 No.
11. Ear phone	: 01 No.

In this encounter S/Shri Azhar Bashir, Dy. Superintendent of Police, Mohd Alyas, Sub Inspector and Mohd Ayaz, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16/04/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 60-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jharkhand Police:-

Name & Rank

S/Shri

01. Rati Bhan Singh,
Sub Inspector
02. Parmeshwar Tudu,
Constable

03. Shri Francis Toppo,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the occasion of panchayat election in Jharkhand, armed CPI (Maoist) squad was moving in various areas of the district to pressurize people for boycotting poll. They were trying to instill fear and consternation in the hearts of the people and were preparing mechanism to harm police. SI. Rati Bhan Singh O.C. Ghatsila got secret yet unconfirmed information on 22nd Nov., 2010 at 2100 hrs that an armed squad of naxal comprising of 10-15 members was visiting village Bardih roughly 20 k.m. from P.S and was making preparation for some violent action. After informing senior officers and without wasting time S.I. Rati Bhan Singh left for village Bardih with one officer and 08 constables on five motorcycles. To ensure their safety and secrecy they travelled the stretch of last 3 to 4 k.m. by switching off headlight of their motorcycles. As soon as the police party reached village Bardih and tried to verify the information it came face to face with armed naxals. Naxals opened indiscriminate fire at the police party led by SI Rati Bhan Singh and their situation become deplorable, but even in unexpected and difficult situation SI Rati Bhan Singh displayed extreme endurance, valour and sagacity and after securing safe position fired back at the naxal. To dodge the naxal who were numerically stronger than the police, SI Rati Bhan Singh changed his position continuously with two constables and created an impression that naxal were surrounded by a big police party. They increased the pressure on their enemy without caring for their lives which proved decisive. Leading to killing of one naxal, naxal party kept on firing on Police party. It narrowly missed SI Rati Bhan Singh, Constable Parmeshwar Tudu and Const. Francis Toppo. In spite of that SI Rati Bhan Singh, Const Parmeshwar Tudu and Const Francis Toppo tried to surround the naxals and did selective firings. Naxals had better morcha in terms of houses. Police party was in open. By showing great courage and valour they were able to arrest one armed cadre with weapon (.303 Rifle) while he was trying to escape. Three active supporters with huge regular weapons, ammunition, naxal propaganda material and about one lac rupees were also recovered.

It is also pertinent to mention that Arup Mochi killed in this encounter was a sub-Zonal Commander involved in more than eighteen (18) naxal related violence. Armed cadre arrested was also involved in more than twelve (12) cases of murder and violence.

In this battle SI Rati Bhan Singh o/c Ghatsila displayed valour and bravery by fearlessly leading this forces in a life threatening situation. He along with Parmeshwar Tudu, CT and Francis Toppo, CT. displayed courage strength, resoluteness, strategy, discipline, leadership and professionalism of the highest order.

Recoveries made:-

I. Arms

1. .303 Bore Police Rifle Mark 04 Bearing no. NL 28611
2. .303 Bore Police rifle Mark 4 bearing no. 6307
3. 9mm pistol bearing no. 16426408
4. 1 pistol (7.65mm) Auto pistol made in U.S.A.

II. Ammunition -

1. .303 Bore - 74 (seventy four)
2. 9mm - 04 (four)
3. 7.65 mm - 08 (eight)

III. Empty Cartridge -

1. .303 - 22
2. 5.56 Insas - 10

IV. Cash - Rs. 96910. (Rupees ninety six thousand nine hundred and ten)

In this encounter S/Shri Rati Bhan Singh, Sub Inspector, Parmeshwar Tudu, Constable and Francis Toppo, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/11/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 61-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Madhya Pradesh Police:-

Name & Rank

Shri Veer Singh Sapre, (Posthumously)
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

At 10 O'clock on 10/09/2006 Sub Inspector S.P. Saxena posted at Thana Chachoda received an information that 15 to 20 days back a Bhil lady Rodi Bai was raped by some one and as a consequence of the same, the Bhils have arranged a meeting near a tank at village Dand, Thana Suthalia in which the Bhils from Guna, Rajgarh and Rajasthan were assembling. This information was conveyed to the higher authorities by the Sub Inspector and when he himself reached the village Dand with policemen, he came to know that the abovementioned meeting of the Bhils had come to an end

and the Bhils in group have proceeded towards the village Konyakalan. At this the Sub Inspector alongwith his policemen proceeded towards the village Konyakalan to prevent any law and order situation. On his way he met the SDOP, Raghogarh and Thana Incharge Kumbhraj Mr. Veer Singh Sapre near village Teligaon. SDM Chachoda also joined them to handle the situation. They all together reached the village Konyakalan at about 3.15 pm and they saw that about 3 to 4 thousand Bhils with weapons like guns, lathi, farsa, iron bars, swords and lances were proceeding menacingly towards village Konyakalan. Seeing these intimidating and hell bent armed Bhils that villagers were crying for help and security as the life of the common villager was at stake.

When the police party tried to intervene with the Bhils, they did not get deterred, but they attacked the police party itself with the weapons they were carrying. To control the lethal attacks from the violent mobsters, Police opened fire first in air and then at the violent members of the Mob which hit one Bhil fatally. But the Bhils kept on launching attacks stubbornly. Though the armed mobsters (Bhils) were in large number, Mr. Veer Singh Sapre continued facing their assaults boldly to repulse their attack on the villagers and was very badly wounded. Police was able to extricate the villagers safely by risking their own lives. But before Shri Sapre was ferried to hospital for treatment, he succumbed to the injuries. Thus Shri Veer Singh Sapre made supreme sacrifice during duty in accordance with the most commendable traditions of the M.P. Police.

This incident is indeed a living example of one of the most gallant conduct exhibited by policemen in M.P. to prevent imminent loss of life of innocent citizens at the hands of highly charged and violent Mob even at great risk to their lives. Mr. Veer Singh Sapre, paid with his life for this noble cause in befitting recognition of his supreme sacrifice during duty to save innocent lives of villagers.

In this encounter Late Shri Veer Singh Sapre, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/09/2006.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 62-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Madhya Pradesh Police:-

Name & Rank

Shri D.P. Gupta, (Posthumously)
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 22nd April, 2011 at about 11PM SI D P Gupta of Kotwali Datia went to the residence of Shri Rajesh Sharma, DSP AJK to discuss a criminal case. When SI D. P. Gupta was returning to Kotwali the DSP AJK Shri Rajesh Sharma also came out of his residence who saw a red colour Alto car near the police station AJK, situated below his residence. From the car HC Hari Singh Jadon, Const Dilip Kumar Khare of PS AJK Datia, Const (Driver) Narendra Singh @ Tinku, HC Hari Singh Jadon son in law Rajveer Singh Tomar r/o village Bhodai Bujurg PS Tharet at present Unaо road Datia armed with his licensee .315 bore rifle (with an unknown person) got down at the PS AJK and all these persons were drunk at that time. Seeing this DSP AJK Sharma enquired from the PS staff as to why these private persons, armed with weapons, came to the PS during the odd hours of the night. This infuriated Rajveer Singh Tomar who started quarreling with DSP AJK Sharma. The Police employees with Rajveer Singh Tomar also supported his undesirable attitude and showed utmost indiscipline. SI D P Gupta who was present on the spot, came to the rescue of AJK Sharma and made them to leave the PS. Though SI D P Gupta made them to understand how to talk to senior officer, it seems that these persons took it otherwise which is evident from the fact that when SI D P Gupta was coming back to Kotwali for his duty on the motor cycle of Kalayan Gupta and Papan Gupta, they placed their Alto car ahead of the motor cycle near the police control room which naturally came to a halt. These persons showered abuses on SI Gupta for his undue interfering. SI Gupta put forth logical arguments to ward off the quarrel but sense did not prevail over them as these persons were drunk.

Meanwhile HC Hari Singh, Const Dilip Kumar Khare of PS AJK Datia, Const(Driver) Narendra Singh @ Tinku and also one unknown man conversed themselves and asked Rajveer to fire at him (SI Gupta). The fire (.315 bore rifle) opened by Rajveer Singh hit SI Gupta in his stomach who instantly died on the spot. Hearing this unfortunate happening, the DIG of Police C/R Gwalior declared a reward of Rs. 10,000/- on the head of main accused Rajveer Singh Tomar.

A case CR No. 121/11 u/s 147,148, 149, 302 IPC was registered against the above accused who have since been arrested except one (unknown man). The case is under investigation.

It is worthwhile to mention here that the tactful handling on the part of SI Gupta averted an untoward event of grave consequences with DSP AJK Rajesh Sharma for which the accused persons were bent upon. However, SI D. P. Gupta had to pay the price for it by his precious life. One .315 bore rifle has been recovered.

In this encounter Late Shri D.P. Gupta, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/04/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 63-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Madhya Pradesh Police:-

	Name & Rank	
	S/Shri	
01.	Shiv Pratap Singh, Constable	(Posthumously)
02.	Jitendra Kumar Panchal, Constable	

Statement of service for which the decoration has been awarded

Home grown terror outfits Indian Mujahidin (IM) and Student Islamic Movement of India (SIMI) are known for their terror activities including a number of bomb blasts in various parts of the country. A module of these terror outfits headed by Abdul Subhan Tauqeer is continuously operating its clandestine activities in the State and across the country. A targeted operation was launched by ATS Madhya Pradesh to thwart the nefarious designs of this module.

Unfortunately, on 28th November 2009, ATS Constable Sitaram Yadav along with two civilians was shot-dead in broad daylight in Khandwa by few terrorists of this module, to demoralize the ATS personnel and to create a fear psychosis in the minds of general public at large.

Name of Jakir s/o Badurl Husain age 28 r/o Ganesh Talai Khandwa, MP, a terrorist of this module figured prominently in this terror incident. Undeterred and unfazed by this serious setback to the operations, it further reinforced the ATS will to apprehend the terrorists of this module.

The Intelligence developments during the operation were indicating of the presence of one Jakir at Ratlam. So a small dedicated team consisting of SI Manish Dubey, Constable Jitendra Kumar and Constable Shiv Pratap Singh of ATS unit Ratlam was constituted and assigned the task to locate and apprehend the terrorist Jakir.

On June 3rd 2011, the team received an input that the terrorist Jakir alongwith one of his associate was seen at Mochipura Ratlam and was about to flee. As it was crucial information, the team immediately moved to auto stand to apprehend Jakir. Team noted that Jakir is accompanied by another person, Farahat. They could not get a chance to arrest the two at auto stand. Team followed them on two motor cycles.

On reaching the Ratlam Railway Station, the terrorist Jakir and his associate got down from the tempo. Getting the signal from the team leader, Constable Jitendra Kumar and Constable Shivpratap Singh promptly took the decision and caught hold of the terrorist Jakir. But unfortunately the terrorist Jakir managed to release himself and took out his weapon and opened firing indiscriminately at the police party. Simultaneously, the other associate also started firing at the police party. SI Manish Dubey returned the fire in self-defence and apprehended them but the team faced the volley of bullets from the deadly terrorists. Constable Jitender was hit in his arm and his hold got loose on Jakir. Seeing this, Constable Shivpratap, exhibiting exemplary courage, bravery dedication to duty of highest order decided to pounce on Jakir to save his fellow policeman and apprehend him. But he got hit by bullets while getting hold of Jakir. He could not hold him for long as even SI Manish could not come for held up being injured himself. Though they tried best to hold Jakir in their custody, he escaped as everybody in the police party was seriously injured. The ongoing exchange of fire activated the local district police. By this time ammunition with the terrorists was also exhausted. Later on, with the assistance of civilians and local police both the terrorists i.e. Jakir and Farahat, were apprehended while they were trying to flee from the custody of ATS team. All the three members of the team i.e. SI Manish, Const. Shivpratap and Const. Jitender Kumar showed exemplary courage and bravery of highest order. They put their lives in risk showing highest degree of dedication to their duty.

It was an operation, which resulted in the arrest of two deadly terrorists Jakir and Farahat of the banned terrorist organizations Indian Majuhidin and SIMI on 3rd June 2011. Though it was achieved at a great cost as Const Shivpratap succumbed to gunshot injuries. ATS Madhya Pradesh lost his one of the most young, dedicated and excellent brave member in this operation and the indiscriminate firing from the terrorists seriously injured two other members. In this regard a case of FIR No. 35/11 dated 03.06.2011 u/s 307, 302 34 IPC, 10, 13, 15 UAP Act 1967 and 25 27 Arms Act was registered at PSGRP of District Ratlam, MP and the case was charge sheeted in the court of Chief Judicial Magistrate, District Ratlam, MP.

In this incident following items were recovered:-

- (i) Two pistols
- (ii) One Mobile phone with SIM card.
- (iii) Leather wallet black colour.
- (iv) Cash Rs, 20,020/-
- (v) One used round.
- (vi) Cover of six used cartridge.
- (vii) One live cartridge.
- (viii) One damaged bullet.
- (ix) Covers of three used cartridge of 9 mm.

In this encounter Late Shri Shiv Pratap Singh, Constable and Shri Jitendra Kumar Panchal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/06/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 64-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Maharashtra Police:-

Name & Rank

S/Shri

01.	Dhananjay Pandhari Maske, (Posthumously) Police Constable
02.	Shankar Naru Pungati, Police Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08/04/2011 a police party of Gadchiroli district left for Naxal patrolling and reached approximately 2 km south of village Kandoli between 1000 hrs. to 1530 hrs. Pilot Sunil Tore and Dhananjay Maske saw 3 to 4 persons clad in green colored naxal dress, moving suspiciously behind the cover. Tore and Maske first shouted at them and asked them to stop. Maske immediately informed his party commander Rama Kudiami so that he could alert all police parties. Unexpectedly and suddenly, 80-100 unidentified naxals clad in green clothes started firing upon Maske and other police parties. In a smart move the naxals moved back, encircled the police parties and resorted to heavy gunfire attack. At the same time, courageously advancing towards the naxals Maske continued firing. As a result, one naxal received bullet injury and fell down. This move caused naxalites to withdraw. However this brave policeman received a bullet injury. Though he fell down, he kept on firing and protecting others.

Shankar Pungati who was giving cover fire to Dhananjay Maske also started advancing towards the naxalites in order to help Dhananjay Maske and save his life. About 2-3 naxals were seriously injured in the gun battle that ensued between naxals and PCs Maske and Pungati. During this engagement, Shankar Pungati also received bullet injury on his left leg. But despite injuries, Dhananjay and Shankar bravely launched heavy attack on naxals resulting in retreat of naxals and temporary stoppage of firing attack by them. The exchange of the fire between Naxals and Police parties lasted for one to one and half hours. During close gun fight, brave Dhananjay Maske succumbed to his bullet injuries.

Shankar Pungati was severely injured due to bullet hit on his left leg. Police party immediately rescued Shankar Pungati to Gadchiroli and provided medical treatment thus saved his precious life. PC Dhananjay Pandhari Maske and PC Shankar Pungati fought valiantly and did not relent even while facing death. Thus PC Dhananjay Pandhari Maske laid down his life at the altar of his duty.

In this encounter Late Shri Dhananjay Pandhari Maske, Police Constable and Shri Shankar Naru Pungati, Police Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/04/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 65-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Maharashtra Police:-

Name & Rank

S/Shri

01.	Chinna Gilla Venta, Police Naik	(Posthumously)
02.	Koko Ghisu Narote, Police Naik	
03.	Chandrayya Madanayya Godari, Police Head Constable	
04.	Sadashiv Lakhma Madavi, Police Naik	
05.	Mallayya Samayya Pendam, Police Naik	
06.	Ganpat Potti Soyam, Police Naik	

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19.05.2011 there was road opening operation in Bhamragad Subdivision of Gadchiroli district. Four C-60 parties of Chinna Venta, Koko Narote, Chandrayya Godari and Sadashiv Madavi reached at Nargunda for conducting antinaxal operation from Jambhia Gatta.

When they reached about 3 km from Nargunda conducting road opening patrolling, at about 0730 AM a group of about 150-200 unidentified naxals, armed with firearms, taking cover of bund of lake, started indiscriminate

gun firing on Police party. Police party immediately took its position and started counter firing at them. At that time party commander Chinna Venta with the help of other jawans of his party started advancing towards naxals hidden at the hillside pounding heavy gunfire attack on them. Despite of heavy gunfire attack from naxals, Chinna Venta advanced towards the injured policemen taking natural covers on the spot for their help. He also opened heavy fire on naxals causing them, distract their attention from injured Policemen. The naxals continued firing heavily on Chinna Venta party in which he received a bullet injury. Despite of injury, Venta kept on advancing towards injured Policemen giving cover fire to other policemen.

Meanwhile Sadashiv Madavi came to know that 3 policemen including Venta are badly injured and still they are fighting with naxals. Sadashiv immediately took over control. At that time Chandrayya Godari also came there with his party and took Mallayya Pendam, Ganpat Soyam and few other men with them and started advancing towards Koko Narote party who had already reached for the help of Venta. They opened heavy fire on hidden naxals. This charge was so fearless and of risk to their bodily injuries that naxals lost their nerves and started scattering. Many of naxals got fatal bullet injuries due to heavy attack from Koko Chandrayya and Sadashiv party.

The gunfire continued about one hour. After stoppage of fire, remaining policemen rushed towards injured Chinna Venta and tried to give him water, but he did not respond. They took in possession two dead bodies of naxals, two commando caps, one ammunition pouch, two pair of action company shoes, one plastic groundsheet, one plastic can and one claymore mine weighted 2 kg in steel Tiffin. In this action, around 7-8 naxalites were killed. All policemen especially Chinna Venta, Koko Narote, Chandrayya Godari, Sadashiv Madavi, Mallayya Pendam and Ganpat Soyam fought valiantly and did not relent under certain face of death. They made a certain defeat into and impossible victory. Though in the process Chinna Venta martyred himself at the altar of his duty.

In this encounter S/Shri Late Chinna Gilla Venta, Police Naik, Koko Ghisu Narote, Police Naik, Chandrayya Madanayya Godari, Police Head Constable, Sadashiv Lakhma Madavi, Police Naik, Mallayya Samayya Pendam, Police Naik and Ganpat Potti Soyam, Police Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/05/2011

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 66-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Maharashtra Police:-

Name & Rank

S/Shri

01. Hanmant Ramchandra Shinde,
Police Sub Inspector
02. Netaji Dinkar Gaikwad,
Asstt. Police Sub Inspector
03. Balwant Dadu Chavan,
Police Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An offence was registered at Karad City Police Station, District- Satara against Shri Salim Mohammad Shaikh @ Salya Chepya and other unknown criminals vide C.R. No. 19/2012 u/s 302,201,212(b), 34 of the IPC section 142 of BP Act and also sections of Indian Arms Act on 15.01.2009.

On 29.10.2009 Shri H.R. Shinde, PSI, Shri N.D. Gaikwad, ASI and Shri Balwant Chavan HC took accused, Salim Mohammad Shaikh to produce before the Additional District Court, Karad for hearing of the said case.

In the court premises itself, an unknown person came towards the accused, suddenly picked up a loaded revolver hidden under his clothing and pointed at the accused and the police party. Immediately the police party rushed towards him. Meanwhile he fired one round seriously injuring ASI Gaikwad. Displaying great courage and valour, PSI Shinde and the two other policemen caught hold of the assailant brought him under control and neutralized him.

Late, upon interrogation it was revealed that the assailant was one Deepak Bhimrao Patil, R/o Mangalwarpeth, Karad and had been involved in two other murder cases registered with Karad City Police Station and Satara City Police Station.

This timely and gallant act of the police party, Shri H.R. Shinde, PSI, Shri N.D. Gaikwad, ASI and Shri Balwant Chavan HC prevented a very unfortunate and heinous offence from being committed right in the court premises. Display of such great courage and presence of mind despite knowing that their own lives were in serious danger is highly commendable.

Recovery: One foreign made revolver (Wobbly Scot Lee Burning Ham Company) & 9 live cartridges, total worth Rs. 5,00,000/-

In this encounter S/Shri Hanmant Ramchandra Shinde, Police Sub Inspector, Netaji Dinkar Gaikwad, Asstt. Police Sub Inspector and Balwant Dadu Chavan, Police Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/10/2009.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 67-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Maharashtra Police:-

Name & Rank

Shri Sanjay Chandrakant Chougule, (Posthumously)
Police Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

Police Sub Inspector Sanjay Chandrakant Chougule was a 2005 batch direct recruit officer. During investigation of an offence vide Kholapuri Gate Police Station CR. No. 05/2011 u/s 307, 34 IPC r/w 3,25 Arms Act. PSI Sanjay Chougule had gone to Burhanpur (MP) where he showed exemplary bravery and arrested dreaded accused wanted in the said offence and recovered one pistol from accused persons.

On 15.01.2011 PSI Chougule along with a Crime Branch Team left for Malkapur to catch another absconding accused in the said offence. He made exemplary efforts and based on extremely scientific and professional investigation was able to trace the location of the accused at Malkapur in Buldhana district. While efforts were being made to arrest the accused, PSI Chougule and the Police party were fired upon by the accused persons. PSI Chougule in an extreme exhibition of bravery and courage retaliated the firing and made efforts to catch the accused. But during the process he sustained bullet injury. However he continued the fight even after sustaining bullet injury. He was shifted to Malkapur Hospital for medical treatment where he breathed his last on 16.01.2011 at 02.45 AM.

PSI Chougule has shown conspicuous gallantry, bravery, courage and dedication to his work and laid down his life while fighting dreaded criminals in this incident at midnight of 15 and 16 January 2011.

In this encounter Late Shri Sanjay Chandrakant Chougule, Police Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16/01/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 68-Pres/2013—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police:—

Name & Rank

S/Shri

1.	Potsangbam Tarunkumar Singh, Sub Inspector	(1st Bar to PMG)
2.	Radhakishor Tongbram, Havildar	(PMG)
3.	M Roshan Singh, Havildar	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the wake of the 10th General Election to the Manipur Legislative Assembly, there prevailed volatile law and order situation in the state, both in the valley and hill areas, due to clandestine and nefarious activities of different underground activists, which was compounded by the declaration of the CORCOM, a united front of 7 valley based militant outfits to launch attack on the candidates of Indian National Congress and its workers. The CORCOM banned election campaigning for Congress candidates, erecting Congress flags and use of vehicles hired by the Congress candidates from Transport associations for electioneering purpose, etc. Frequent incidents of firing, planting of remote control IED bombs, hurling of hand grenades rocked the entire area of valley districts, having an adverse impact on the election process itself.

To combat the fluid law and order situation, the State Police beefed up security measures in the state by way of deploying commando personnel and also in close coordination with para military and security forces operating in the State, Intelligence agencies as well as personal sources were nourished to collect hard actionable information as part of its security measures.

On 15.01.2012 at about 1900 hrs., the district police Imphal West received a reliable information that armed cadres of the prescribed organization Kanglei Yaol Kanna Lup (KYKL) and its armed with Military Defence Front (MDF) were loitering at Lamsang area for transportation/collection of arms and ammunition including explosive materials for the above cited purpose. Based on this reliable information, a team of commando personnel of Imphal West District led by Shri Th Krishnatombi Singh, Dy Superintendent of Police rushed to the said area i.e. Lamsang village for counter insurgency operation. Shri Ishak Shah, MPS, Addl SP (Ops), Imphal West District also accompanied the team for supervision of the operation. Thus, while the commando personnel were moving in four vehicles along the hill range of Langol and Kameng village in the night of 15.01.2012, a torch light signal was seen from the hill side at a distance of about 50 metres. No sooner the Addl SP Shri Ishak Shah shouted as to who are they and to stop, then they were

fired upon heavily mainly from two different sides, northern and southern foothill. As the commando personnel jumped out of their respective vehicles and took position to retaliate against the militants, one grenade exploded in between the parties of Shri Th. Krishnatombi Singh and Shri Ishak Shah amidst shower of bullets. Even as the commando personnel were initially caught with adverse situation due to heavy firing from two directions and hurdle of movement in the darkness, Shri Th. Krishnatombi Singh with iron nerve sprang up and advanced forward fighting the militants with incessant firing. In fact, his undaunted courage and bold action inspired his team to fight the militants with more courage, zeal and enthusiasm. Sub-Inspector P Tarunkumar Singh too, perceived the dangerous situation faced by Shri Th. Krishnatombi Singh having been caught under heavy shower of bullets. Sub Inspector P Tarunkumar Singh led another force of commando personnel including Havildar Roshan and two Constables in fighting with the militants on the southern side, whereby Shri Krishnatombi Singh could advance forward on the northern hill-side fighting the militants. Ishak Shah, MPS Addl SP tactically moved forward and managed to get close to Shri Krishnatombi Singh. Having the advantage of covering fire from Ishak Shah and Havildar Radhakishor Singh, Shri Th. Krishnatombi Singh made a swift advancement and attacked on the militants boldly, thereby clearing his way. Thus, the militants on the northern side unable to face the fierce attack of Shri Th. Krishnatombi Singh started fleeing away in different directions.

On the southern hill-side also, in the adverse situation of darkness uneven ground, and hurdles of thick bushes/shrub, SI P Tarunkumar Singh, Havildar Roshan and other commando personnel had a lively gun fight with the militants. Ultimately, the militants unable to withstand against the forceful acts of commando personnel led by SI P Tarunkumar Singh and Havildar Roshan retreated fleeing away in different directions.

When there prevailed lull due to ceasing of firing from the opposite direction, the commando personnel conducted search operation and found three bullet-ridden dead bodies, two in the northern hill-side and one on the southern hill-side. The slain militants were later on identified as hard-core militants belonging to the banned underground outfit Kanglei Yaol Kanna Lup (KYKL), namely: (1) Thakchom Benanta Singh (41) s/o Th. Ibohal Singh of Heirok Kabo Keikai. (2) Md Abdul Haque (24), s/o Md Asharaf Ali of Lilong Leihaothong Makok and (3) Morirangthem Ibungo Singh (28), s/o M Chaoba Singh of Heirok Tourangbam Leikai.

The following arms and ammunition, explosives including incrimination articles were found from the encounter site :—

1. One AK-47 rifle bearing No 071208
2. One magazine having one live round.
3. One live round loaded inside the chamber of the AK-47 rifle.
4. One mobile phone with cover.

5. One black colour mask.
6. Six nos. of empty cartridges.
7. One 9 mm Pistol bearing No. 410874.
8. One magazine having two live rounds of 9 mm ammn.
9. One live round of 9 mm ammn. loaded with the pistol.
10. One Nokia mobile handset.
11. One 15 days leave certificate issued by Major Dy. Commandant, Adjutant 15 AR in the name of Md. Abdul Haque.
12. One projectile.
13. One polethene bag containing IED material.
14. One muddy colour long piece of cloth wrappings the IED plastic bottle.
15. Two steel colour hand grenade pins.
16. Four nos. of empty cartridges found near the dead body, and
17. Two unexploded hand grenades.

In this encounter S/Shri Potsangbam Tarunkumar Singh, Sub Inspector, Radhakishor Tongbram, Havildar and M Roshan Singh, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15.01.2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 69-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police:—

Name & Rank

S/Shri

01. Maibam Uttam Singh, Sub Inspector	(PMG)
02. N. Nungshibabu Singh, Havildar	(1st Bar to PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 29th December, 2011, at about 6:00 pm a reliable information was received that some militants belonging to a valley-based underground outfit were loitering in and

around the Wakha, a village situated on the foothill of Leima Chingjl under Porpmat PS, with intent to disturb the upcoming general elections and also to lay ambush on security forces at any opportune moment. Based on this information, a combined team of commando personnel of Imphal East District and 28 Assam Rifles rushed to the said area for counter-insurgency operation.

Thus, while the combined team was proceeding towards the Wakha village along the Naharup-Wakha inter village road and about to reach the foothill area of Leima Chingjl, the commando party led by Sub-Inspector Maibam Uttam Singh, moving ahead in the frontline of the combined team, noticed about 3-4 youths spreading hither thither at a distance of about 100 meters from the southern side of the foothill. Suddenly, the combined team was fired upon by underground elements from their sophisticated weapons. As soon as the team was fired upon, they sprung into action by jumping down from the vehicles and retaliated the firing towards the underground elements and a brief encounter ensued.

Under this abnormal situation, SI M Uttam Singh, Hav. N Nungshibabu Singh assisted by the 28 Assam Rifles personnel, with dogged determination and iron nerve in utter disregard of their personal safety, advanced further tactically towards the side from where firing came on the northern side of the foothill and persistently firing towards the underground elements. In the meantime, rest of the commando force were engaged in the encounter from the roadside.

Thus, there ensued a lively encounter that lasted for about half an hour. When the firing from the opposite side ceased, the combined team conducted search operation and found a dead body of one of the militants in the area where both SI M Uttam Singh and Hav. N Nungshibabu Singh were advancing to silence the firing of the underground elements. On search, the commandos recovered one 9 mm pistol marked as C-Z75 Compact Cal. 9 LUGER made in CZECH REPUBLIC bearing No. C9950 loaded with 5(five) live rounds in the chamber, one mobile phone inside the pocket of the jogging shirt, one wallet containing Rs. 50 from the pant pocket and 1 (one) AK magazine loaded with 3 (three) live rounds at the foothill, at a distance of about 100 meters away from the dead body beside 5 (five) nos. of AK empty cartridges. It refers to cases FIR No. 398(12)2011 u/s 307/34 IPC, 25(1-C) Arms Act & 16 (1)(b)/20UA(P)A.Act of Prompat PS.

The deceased has been identified as one R K Somokanta@ Naocha (28) s/o (L) R K Sanatomba Singh of Wangoo Nungsaibam Leikai, a hard-core member of KYKL in the rank of Lance Corporal, No. 357 of 21st Batch. He is indulging in the prejudicial activities threatening the security of state since 2008.

From the above it is crystal clear that Sub-Inspector Maibam Uttam Singh displayed rare conspicuous act of gallantry in making forceful drive against the militants even

when he was initially fired upon from two angles without caring for his life. Simultaneously, he ensured strategic movement of the force with proper and effective command while engaging himself in fighting the militants in the forefront. Havildar N. Nungshibabu Singh also fought the militants in close proximity with his commander Sub Inspector M Uttam Singh at a very critical juncture of the encounter with dogged determination without caring for his life.

Had the two commando personnel not engaged in the encounter with such a degree of personal involvement in the forefront at the cost of their lives, the combined team might have suffered serious casualties.

In this encounter S/Shri Maibam Uttam Singh, Sub Inspector and N. Nungshibabu Singh, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29.12.2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 70-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police:—

Name & Rank

01. Md. Rajib Khan,
Sub Inspector
02. Sh. Oinam Sanjatkumar Singh,
Rifleman

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the wake of the 10th General Elections to the Manipur Legislative Assembly and Indian Republic Day Celebration of 26th January 2012, there prevailed volatile law and order situation in the State, both in the valley and hill areas, due to clandestine and nefarious activities of different underground activists, which was compounded by the declaration of CORCOM, a united front of 7 (seven) valley based militant outfits to launch attack on the candidates of Indian National Congress, its workers and Boycott of Indian Republic Day Celebration every year. The CORCOM banned election campaigning for Congress candidates, erecting of India flags, Congress flags and use of vehicles hired by the Congress candidates from Transport Associations in electioneering purpose and picked up the dropped of contingents relating with Indian Republic Day Celebration of 26th January 2012 etc. Frequent incidents of firing, planting

of remote control IED bombs, hurling of hand grenades, blockade of road to the entire area of valley districts to adverse impact on the election process and Indian Republic Day Celebration of 26th January 2012 itself.

To combat the worsening law and order situation, the State Police beefed up security measures in the State by way of deploying commando personnel in coordination with paramilitary and security forces operating in the State Intelligence agencies as well as personal sources were nourished to collect hard and actionable information as part of its security measures.

In the prevailing law and order situation, on 26.01.2012 at 5 pm, reliable information was received about presence and movement of some well armed cadres suspected to be activists of CORCOM in the general area of Yaralpat, Tinsid road with an intent to commit nefarious and antisocial activities like use of explosives and firing at the residence of Congress candidates, its workers as well as contingents of Indian Republic Day Celebration of 26th January 2012 etc. On receipt of the said source input, a combined team of Imphal-East and Imphal-West district commando personnel was organized and rushed to the said area for counter-insurgency operation.

The said area is hilly, remote and secluded, infested with insurgent activities. When the combined team reached the area at about 7:40 pm., it was dark. As such, the combined team was divided into 2 (two) groups and approached the suspected area with utmost caution keeping strategic distance amongst them.

Thus, when the combined team reached the foothill area of Yaralpat at about 7:40 pm, a group of 3-4 youths fired upon the commandos from the hillside with sophisticated weapons, thereby hitting on the first vehicle bearing Regn. No. MN 01 K 5500 (Gypsy issued by Manipur Govt. to Manipur Police Dept.) used by Sub Inspector Md. Rajib Khan. He was in such a difficult situation that he could hardly move ahead or retaliate. However, he was able to attack the militants with dedication. At this critical juncture, Rfn. O Sanjatkumar, jumping out of the vehicle advanced forward and getting close to Sub-Inspector Md. Rajib Khan, acted in the most brave manner against the militants. The commandos in the second vehicles joined in the encounter as the personnel in the first vehicle were momentarily held-up due to the heavy encounter. Ultimately, the militants unable to withstand against the forceful drive of the commando personnel started fleeing in different directions. The commando personnel continued to chase the fleeing youths with incessant firing. The movement of Sub Inspector Md. Rajib Khan and Rifleman Sanjatkumar was so swift that the militants were running here and there in their abortive attempts to escape. When the firing from the opposite side was ceased, the commandos conducted search operation, in which they found dead body of one of the militant. The slain militant was later on identified as Sagolsem Jiten Singh @ Mikoy (31 yrs of age), son of S Manglemjao Singh of Kongba Nongthongbam Leikai, Imphal hard-core cadre of

the underground outfit Kanglei Yaol Kamma Lup (KYKL), which was a major component of CORCOM. The following arms and ammunition were recovered from near the dead body:—

- (a) One 9 mm pistol.
- (b) 3 live rounds of 9 mm ammunition.
- (c) 3 empty cases of 9 mm and 3 empty cases of AK-47 ammunition.
- (d) One Chinese hand grenade.

In this encounter Md. Rajib Khan, Sub Inspector and Sh. Oinam Sanjikumar Singh, Rifleman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26.01.2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 71-Pres/2013—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police:—

Name & Rank

S/Shri

- 01. Sagapam Ibotombi Singh, (1st Bar to PMG)
Sub Inspector
- 02. Khangembam Herojit Singh, (PMG)
Rifleman

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 26.02.2012 at around 4:15 pm based on specific information about movement of valley based UG groups a part of Co-ordination Committee (CORCOM) in the general area of Cachipur and Langthabal to attack on Congress-I candidates and workers, SI S. Ibotombi Singh along with CDO team of Imphal West established frisking point near Standard Robert Secondary School along NH-2 to nab the said cadres.

At about 5:00 pm the checking team interrupted a Honda Activa grey in colour with a pillion rider and asked them to stop. But instead of stopping, they fled away towards south. The commando team also chased them, and shouting to stop. Instead of stopping, the pillion rider opened fire to the chasing party with automatic weapon, the bullet missed the commandos by inches with determination to nab them the police party chased them tactically and cornered them on the western side of NH-2, near Ujala Restaurant which was

located about 100 meters south of Standard Robert Higher Secondary School on Langthabal side. The pillion rider kept on firing upon the commandos. To stop them, SI S. Ibotombi Singh fired at the vehicle of two unknown persons and some of bullets hit the vehicle. Having no alternative, the two unknown person abandoned the vehicle in a nullah and ran into different directions. SI S. Ibotombi Singh along with Rfn. Kh. Herojit Singh displaying scant regard to their safety, immediately ran behind one of the UGs who were trying to get away and pinned down by firing on the fleeing UG and asked to surrender but he opened fire towards the pursuing team. Displaying alertness and quick presence of mind and courage that comes through experience, SI S. Ibotombi Singh and Rfn. Kh. Herojit Singh having no alternative shot him down simultaneously at the spot. The other suspect escaped by taking cover of crowd and houses.

A thorough search was conducted after the encounter which lasted for about 15 minutes. One 9mm pistol marked as MAUSER, one mobile handset, two Chinese made hand grenades and some empty cases of AK- rifle near the dead body and one Honda Activa Grey in colour bearing Redgn. No. MN-01N-9365 in the Southern side of Ujala Restaurant were found lying. The place was under protection of police personnel.

He was later on identified as Sammandram Nobin @ Naocha Singh (28) s/o S Gigon Singh of Chingamakha Keibung Maibam Leikai, a self styled Sergeant of 253 fighting mobile Bn (Army No. 2990) of the banned outfit Peoples Liberation Army (PLA).

Police record reveals that he was also directly involved in the ambush and killing of 4 (four) IRB personnel, 5 (five) other sustained injuries and snatching of 4 (four) nos. of SLR with magazines at Ngangkhasi hill near Mishimakhong at about 12:30 hrs on 12.09.2009.

In the above encounter, the officer and man of commando unit, Imphal West District, displayed raw courage under fire, the determination and gallant act of the highest, thereby killing one hardcore armed militant of the banned Peoples Liberation Army (PLA) leading to the recovery of arms/ amm. Had the police officers and men not reacted swiftly, professionally and tactically, the lives of many security personnel might have been endangered if the militants were able to carry out their nefarious design.

In this encounter S/Shri Sagapam Ibotombi Singh, Sub Inspector and Khangembam Herojit Singh, Rifleman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26.02.2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 72-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Odisha Police:—

Name & Rank

S/Shri

01. Brijesh Kumar Rai,
ASP
02. Tapan Kumar Nayak,
Sub Inspector
03. Resham Bahadur Hamal Thakuri, (Posthumously)
Havildar
04. Ranjan Kumar Nayak,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 02.05.2011 at about 11:30 AM ASP(U/T) Brijesh Kumar Rai along with SI Tapan Kumar Nayak, Ct. Sunil Bhera, Ct. Rajiv Lochan Kanhar, 14 IR Bn personnel including HAV RBH Thakuri with weapons proceeded from Daringabadi Police Station to Kerubadi at 11:30 AM on nine motorcycles for conducting warrant execution and promoting police public interaction. They reached Kerubadi at 12:15 PM and interacted with villagers for one and half hour.

The entire team started their return journey towards daringbadi at 1:45 PM following all tactics. CPI(Maoist) cadres had laid an opportunity abush near Damplly/Kalingabadi village and started indiscriminate firing on the police party sitting on the hill with an intention to kill the members of the police party and also to loot the weapons. The entire police party was in the killing zone and fired rounds hit the 2nd, 3rd and 5th motorcycles. The PSO Ct. Rajiv Lochan Kanhar of ASP Brijesh had been hit by a bullet on his right leg fingers and Brijesh Kumar Rai had been hit by a ricochet and had injury on the back of his right thigh. The pillion rider of the 5th motorcycle Hav RBH Thakuri unmindful of the grave risk to life took position and opened fire and repulsed the ambush laid by the CPI(Maoist) Cadres, but was hit by bullet on his neck and collapsed there. The other members of the police party took cover and did controlled firing in order to save themselves and also to inflict casualty to the Maoists. Tapan Kumar Nayak, Sub Inspector and Resham Bahadur Hamal Thakuri, who were in the front side took leadership and motivated the personnel to fight with confidence and continue controlled firing and engaged the cut off parties of the Maoists. Tapan Kumar Nayak, Sub Inspector and Resham Bahadur Hamal Thakuri then spontaneously decided to evacuate the injured Ct. Rajiv Lochan Kanhar and also to get the reinforcement to fight the CPI(Maoists). They crawled to a distance unmindful of the risk to their lives and moved out of the killing zone and rushed to Daringbadi. Enroute they alerted

the SOG unit stationed at Daringbadi headed by SI Ranjan Nayak. ASP(U/T) Brijesh Kumar Rai, made an operational plan to repulse the Maoists ambush as well as rescue the trapped police personnel, briefing the force and showing rare sense of courage rushed to the spot taking all precautions along with SI Tapan Nayak and the SOG unit No 19 headed by SI Ranjan Nayak. ASP Brijesh, SI Tapan Nayak and SI Ranjan Nayak alongwith the entire SOG team, encircled the hill from the rear. SI Ranjan Nayak who headed the SOG and showed immense courage even at the risk of life and lead the counter ambush from the front. After taking positions the police party fired the UBGL rounds. Seeing the reinforcement and the tactical counter ambush, the Maoists fearing defeat fled away taking the cover of the jungle. The team searched the area and rescued all the sepoyes of IR Battalion and the dead body of deceased Hav RBH Thakuri. The team also searched the area around the killing zone and recovered two IEDs (Tiffin bomb). Anticipating further ambush the entire team moved back tactically and reached Daringbadi police station safely.

In the entire operation the determination, bravery, courage devotion to duty shown by Brijesh Kumar Rai, ASP, Tapan Kumar Nayak, Sub Inspector, Resham Bahadur Hamal Thakuri, Havildar and Ranjan Kumar Nayak, Sub Inspector in leading this operation from the front unmindful of the grave risk to their lives has saved the lives of the entire police team and raised the morale of the force to a great height.

In this encounter S/Shri Brijesh Kumar Rai, ASP, Tapan Kumar Nayak, Sub Inspector, Late Resham Bahadur Hamal Thakuri, Havildar and Ranjan Kumar Nayak, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02.05.2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 73-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Odisha Police:—

Name & Rank

Shri Ranjan Khora, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 29.06.2008 morning the AP Greyhound Personnel consisting 66 member (55 Greyhounds, 02 Civil SIs, 4 Home

Guards and 2 Constables of Chitrakonda PS.) Ct. Ranjan Khora, Ct. Tapan Kumar Mohanty and 3 Boat Staffs while returning from Janbai towards Chitrakonda near Gunupur (Alampaka) after conducting search/combing operations, CPI (Maoist) suddenly opened burst fire on them and the Motor boat capsized in the water. In this incident One SI of AP 23 Greyhounds One AP Home Guards, CT Tapan Kumar Mohanty of Chitrakonda PS and two Boat drivers reached at Chitrakonda by swimming across the reservoir. 38 Dead bodies were recovered by the rescue operation team (including Ct. Ranjan Khora of Chitrakonda PS). In this connection Chitrakonda PS case No. 10. Dated 29.06.2008 u/s 302/307/120-B/121/124-A/147/148/149 IPC/25/27 Arms Act registered.

While returning in Motor Launch Constable Ranjan Khora faced sudden firing from the Maoist and the launch lost balance, was pierced by bullets and started sinking. Being sustaining a Bullet injury to his head, he helped others to safety and achieved martyrdom.

In this encounter Late Ranjan Khora, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29.06.2008.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 74-Pres/2013- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Punjab Police:-

Name & Rank

Shri Chamkaur Singh,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri Chamkaur Singh has exhibited a wonderful act of gallantry in case FIR No. 25 date 06/05/2011 u/s 392/397/307/342/332/353/186/34 IPC 25/27 Arms Act PS - Bajakhana, District Faridkot in which a highly volatile and big robbery was detected with his courage and expertise. The entire looted amount of Rs. 28,61,770/- was recovered at the spot.

Brief facts of this case are that on 06/05/2011 at about 4:20 p.m. a highly armed gang of robbers stormed into State Bank of Patiala, Bargari Branch and herded the entire Bank staff including the customers into a corner room. One of the tea vendor who happened to be inside the bank to supply tea, passed on an information through his cell phone to

police post Bargari. Head Constable(E) Chamkaur Singh assisted by two Punjab Home Guards Jawans rushed to the scene of occurrence. Prior to his arrival in the bank, the robber put their revolvers at the ear-temple of the bank employees, took hold of the main keys and snatched the cell phones of all of them. They bundled the cash to the tune of Rs. 28,61,770/- in a gunny bag and dragged it towards the exit door of the bank.

As soon as the robbers noticed the Police party, they felt scared and there was a stampede inside the bank premises. Head Constable(E) Chamkaur Singh imbued with courage and presence of mind warned them loudly to raise their hands and surrender the weapons including the bag of money. They, however, did not heed this warning and rather became more violent. Head-Constable(E) Chamkaur Singh took a kneeling position at a vantage place himself and ordered his subordinates to be more vigilant. One of the robbers was armed with a strange mechanical device which was hurling sharp spankers and fire particles. HC (E) Chamkaur Singh dared to jump forward when one of the robbers fired at him from a close range. The bullet zoomed past the head of HC Chamkaur Singh and hit a glass pan of the window scattering the glass splinters at the floor. The other robber top fired a shot which also did not hit Chamkaur Singh. Simultaneously one of the PHG Hardev Singh was also shot but luckily he also remained unhurt. Head-Contable(E) Chamkaur Singh without caring for his life caught hold one of the robber and grappled with him. Ultimately, HC(E) Chamkaur Singh over powered all the robbers with the help of his men and also recovered the entire looted amount of Rs. 28,61,770/-

Head-Constable(E) Chamkaur Singh suffered serious bruises and some wounds during this anti-robery operation. In spite of the fact that the robbers were armed with sophisticated weapons and walkie-talkie sets for communication purposes, HC(E) Chamkaur Singh did not feel frustrated. During the climax of this encounter a posse of police under the command of Inst. Gurjeet Singh too arrived there and patted HC(E) Chamkaur Singh for his highly successful task. On search of the desperadoes two pistols with 60 live cartridges, one a sophisticated mechanical device hurling sparks and fire-rolls and two empty cartridges were recovered from them.

In this encounter Shri Chamkaur Singh, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06.05.2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 75-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of West Bengal Police:—

Name & Rank

S/Shri

1. Praveen Kumar Tripathi,
Superintendent of Police
2. Sumit Kumar,
Sub Divisional Police Officer
3. Tapas Ghosh,
Constable
4. Bapi Sinha,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24.11.2011 Shri Praveen Kumar Tripathi IPS, SP Paschim Midnapore and Shri Alok Rajoria IPS, Addl SP (Operations) Jhargram having received the information of a top Polit Bureau member of CPI (Maoist) and his armed squad in and around Khushabani Jungle area under Jambani PS recce their hideout. During recce, they taking great risk to their lives, traversed heavily mined jungle area which was completely dominated by armed maoist groups.

After reccing the area, they along with Shri Sumit Kumar IPS, SDPO Jhargram and officers of 207 COBRA Bn under the leadership of Shri Vineet Kumar Goyal, IPS, DIG Midnapore Range meticulously planned a quick operation. After planning, the joint forces were briefed by Vineet Kumar Goyal IPS regarding terrain, risks, arms and ammunitions in the possession of armed cadres etc.

As per plan, Vineet Kumar Goyal IPS and Praveen Kumar Tripathi IPS taking overall command moved tactically with teams towards targeted hide out near Burishol Jungle. The teams after reaching their respective points cordoned the area.

At around 1630 hrs, when the assault team led by Alok Rajoria IPS was nearing the targeted hideout, 12-15 armed cadres started indiscriminate firing and hurled grenades. At this CT Tapas Ghosh, DAP Jhargram, AC Nagendra Singh, AC Binoj P Joseph, CT/GD S. Sreenu, CT/GD S Mathubela CT/GD Birendra Kumar Singh, CT/GD Deepak Kumar and all of 207 COBRA Bn led by Alok Rajoria IPS, putting their lives at high risk, showing extra ordinary courage and gallantry and adopting fire & move tactics advanced and fired amidst bullets & grenade splinters sprayed by armed cadres.

In between some of the armed cadres stared indiscriminate firing upon the teams positioned on other flanks of the jungle area. Amidst firing, Vineet Kumar Goyal and Praveen Kumar displaying immense courage crawled the jungle stretch

and advanced towards armed cadres with a view to catch them. They exhibiting courageous leadership and highest professional acumen not only launched a quick chase of the armed cadres who were forced to move to nearby Burishol village but also kept on coordinating, communicating and guiding other teams during entire operation for avoiding any harm/casualty to police side. The action later on resulted in arrest of some armed cadres.

On the other side, Sumit Kumar IPS and CT Bapi Sinha, facing heavy volley of fire from the armed cadres, showing exemplary gallantry fired at armed cadres with a view to save lives of team members and to catch the armed cadres which culminated in retreat of armed cadres.

During search of the area following firing which continued for half an hour, one dead body with AK-47 in his hand later identified as of a top Polit Bureau member of CPI (Maoist) was found lying on the ground. During further search, one AKM rifle, a bag containing cash, Maoist literature, hard discs and other material were also found nearby.

In the entire operation, despite heavy firing from the hard-core Maoists and peril to their own lives, the above officers and personnel exhibited exemplary courage and outstanding leadership in the most challenging circumstances, Gallantry, dedication to their duty, exemplary control over nerves in life threatening circumstances and have produced an inspiring success in fight against left militancy. The brave action by above noted personnel resulted in huge setback to left militancy in WB ushering a semblance of order and peace.

Recovery:

01	AK-47 Rifle bearing Arsenal No. KT-435182.	01
02	Camouflage coloured cotton made ammunition pouch.	01
03	Small black coloured multi pockets chain fitted rexin Bag (containing Hard Disc, Pen drive and Maoist literatures).	01
04	Motorola wireless hand set	01
05	Hard Disc store jet 500 G.B in damaged condition	01
06	Hard disc Seagate 320 G.B. in damaged condition.	01
07	C.D. in broken condition	01
08	Pencil torch light (black colour)	01
09	Samsungs Mobile Phone (black colour)	01
10	Nokia Mobile Phone (black colour)	01
11	U.S.B. cord in a plastic pocket	01

12	Data cards	04	These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/11/2011.
13	Mobile Chips	14	
14	Reliance Mobile Sim Card	01	SURESH YADAV OSD to the President
15	B.S.N.L. Mobile Sim Card	01	
16	4 G.B. data traveller pen drive	01	
17	Card reader Zembonic	01	No. 76-Pres/2013- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Border Security Force:-
18	Pocket diary	01	
19	One plastic pocket containing pullthrough, Oil bottle, Cotton pieces.	01	Name & Rank
20	Spectacle with golden colour covered	01	Shri Xavier Kindo, (Posthumously) Constable
21	Plastic pocket containing Naphthalene ball 05 Nos.	01	Statement of service for which the decoration has been awarded
22	Duracell battery (small)	01	The tactical Headquarter of 28 Battalion BSF is located at Laxmipur District- Koraput (Odisha), which is a hyper sensitive Left Wing Extremism infested area.
23	Ball Pen	04	
24	Thermo Meter	01	
25	Gillette blade	04	On 1st Sept, 2012, at about 0800 hrs, Constable Dhiren Kumar Sahu and Constable Xavier Kindo of Company Operating Base (COB), Pallur, Ex-28 Battalion BSF Narayanpatna, Koraput were part of the 40 members strong Improvised Explosive Device (IED) checking party led by Coy Commander Shri P.K. Bhutka, Assistant Commandant, which was tasked to search, detect and destroy buried IEDs in general area Patampunda, PS- Narayanpatna.
26	Gillette razor	01	
27	Scissors (small)	01	
28	Lotus media made compact disc	01	
29	Total Cash Rs. 84,535/- of various denomination	—	Constable Xavier Kindo was detailed as front scout, a coveted position, which is generally assigned to most active, alert and sincere member of the party and the requirement of the job is highly responsible and challenging. Constable Xaiver Kindo always Volunteered for this position. He was meticulously scanning the narrow dirt track surface of the road, for buried mines with Deep Search Metal Detector (DSMD). The dirt track, flanked by a 20' high steep vertical ridge on one side and a deep Nallah on the other. The going was very tough.
30	AK-47 Rifle having fixed Butt No. SAP/8-31, Arsenal No. BE-445317 fitted with sling, Loaded with one round 7.62 mm live ammunitions in chamber and one round 7.62 mm live ammunition in magazine.	01	
31	Empty Cartridges of 7.62 mm	02	
32	White colour Zariken	01	
33	Hearing aid machine of Novax company with extension cord	01	At about 0910 hrs, Constable Xavier Kindo noticed a faint signal on his Metal Detector. He immediately alerted the patrol about the suspected IED. The alert Constable Xavier Kindo while scanning the area noticed some Extremists positioned with weapons on the ridge, perhaps waiting for an opportunity to ambush the BSF patrol. Constable Xavier Kindo displaying raw courage and quick reflexes lobbed a grenade in the direction of the Extremists and simultaneously opened fire on them, who were totally surprised by offensive action of Ct Xavier Kindo. Simultaneously, he also shouted loudly "Ambush Hai", to alert his party. Constable Dhiren Kumar Sahu could see one of the extremists had been hit by the bullets fired by Constable Xavier. The extremists having lost the surprise
34	Leather chappal	01	
35	One Samsung made Mobile battery bearing No. AB-553446 BU with stain of blood.	01	

In this encounter S/Shri Praveen Kumar Tripathi, Superintendent of Police, Sumit Kumar, Sub Divisional Police Officer, Tapas Ghosh, Constable and Bapi Sinha, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

and fearing on slaughter by the BSF patrol, detonated the 20 Kgs massive IED planted on the dirt tract road.

Constable Xavier Kindo, being closest to the impact of the blast, made the supreme sacrifice in the line of duty with utmost bravery. The blast was so massive that Constable Dhiren Kumar Sahu, his buddy pair, was sucked into the crater formed by the blast, burying him in the debris, thus restricting his further reaction. The extremists were dislodged and forced to flee as they had suffered casualties in the hands of the gallant and alert scout Xavier Kindo. During search of the ridge, prominent blood stained drag lines were detected alongwith detonating switch and improvised camera flash, where the Extremists have taken position. Constable Xavier Kindo sacrificed his life while saving the lives of at least 40 other members of the IED checking party. He always volunteered for the position of front guide in all operation. He had also volunteered to remain deployed in extremists affected area even on completion of his normal tenure. Constable Xavier Kindo attained martyrdom while displaying selfless zeal, exemplary courage and bravery of the highest order in the best traditions of the Force. Flexible wires 200 mtrs (approx), Camera flash-01 and Pencil Cell 4 nos recovered from the spot.

In this encounter Late Shri Xavier Kindo, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/09/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 77-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:—

Name & Rank

S/Shri

- 01. Avizao Angami,
Assistant Commandant
- 02. Anil Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 17.10.2011, based on an information received from SP of East Garo Hills, Meghalaya, about the presence of 15-20 hard-core GNLA cadres in the area of Nangmandalgre under PS Williamnagar of East Garo Hills, a meeting was held at the HQ of SP East Garo Hills, to chalk out a plan to

neutralize above militants. The meeting was attended by the representatives of 120 Bn, 210 Cobra and SWAT team of the local Police. Having discussed the plan various teams moved out to their designated area of responsibility.

The QAT team of 120 Bn, under the command of Shri Avizao Angami, AC alongwith SWAT team of local Police also moved towards the target area. On reaching the target area the team of 210 Cobra placed cut off in the area as per the plan. Whereas, the QAT team of 120 Bn and SWAT team of local Police moved towards Nengmandalgre area and started searching the area. During the search on 18.10.2011 at about 1100 hrs the QAT team of 120 Bn came under heavy fire from the GNLA militants.

The party immediately took position and retaliated the fire. As the militants were firing from a dominating area Shri Avizao Angami re-organized the team of QAT & SWAT in order to prevent the militants from slipping out of the cordon and he himself alongwith CT/GD Anil Kumar crawled to the rear side of the militants. After crawling for about 30 to 32 mtrs. Shri Avizao Angami, AC and CT/GD Anil Kumar were taken by surprise with the appearance of a heavily armed hard core terrorist at a close range. The terrorist noticing their presence opened heavy fire on Shri Avizao Angami and CT/GD Anil Kumar. However, undeterred by the heavy fire from the militant, displaying exceptional grit and presence of mind both Shri Avizao Angami and CT/GD Anil Kumar retaliated with the return fire killing the attacking/heavily armed terrorist on the spot. The killed terrorist was subsequently identified as Barsis R Marak @ Dilsang, Deputy Commander, Williamnagar.

In this operation, Shri Avizao Angami, Asstt. Commandant 120 Bn displayed exceptional leadership and planning and lead the operation from the front at the grave risk to his own life. At the same time CT/GD Anil Kumar displayed great courage and presence of mind and discharged his duties taking grave risk to his life.

The following Arms/Ammn. were seized in this encounter:

(a) AK 56 Rifle 7.62 mm x .39mm	- 01 No.
(b) Magazine AK 56 series	- 03 Nos.
(c) 9mm pistol made in China	- 01 No.
(d) Magazine of 9mm pistol made in China	- 01 No.
(e) Ammunition of 7.62mm x .39	- 122 Nos.
(f) Ammunition of 9 mm	- 09 Nos.
(g) Walky-talky set Japan made with fitted battery	- 01 No.
(h) Antina of walky-talky set with cover Japan made	- 01 No.
(i) Bayonet	- 01 No.

(j) Wrist watch	- 01 No.
(k) Identity card of killed GNLA cadre	- 01 No.

In this encounter S/Shri Avizao Angami, Assistant Commandant and Anil Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/10/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 78-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:—

Name & Rank

S/Shri

01. Naushad Ali,
Inspector
02. Bhagwana Ram Thory,
Inspector
03. M. C. Rayalu,
Head Constable
04. T. Ramaswamy,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13/03/2011 at 1400 Hrs on receipt of information about the gathering of Maoist at Village-Darmaha, P/S-Keshriya, a party of C/153 Bn, CRPF consisting two platoons under the command of Insp/GD Bhagwana Ram Thory rushed to Police Station-Keshriya where Dy. SP Neeraj Kumar of STF briefed CRPF, Civil Police, SAP, BMP and STF Jawans to carry out raid & search ops in Village-Darmaha where 30-35 armed Maoists were reportedly hiding. The troops left for duty at Darmaha village and reached Kasba Tola by vehicles from where they proceeded on foot to Village-Darmaha. The party was led by C/153 Bn under command Insp/GD Bhagwana Ram Thory. When the party under command Insp/GD Bhagwana Ram Thory was laying cordon of the village, naxalites, who had taken shelter in the midst of village, realizing that they are being encircled started firing indiscriminately on the troops. All parties moving tactically in mutual support formation and in touch with one another over the wireless reached Village-Darmaha at 1500 Hrs. CRPF/ Police personnel took the position on the ground immediately

and shouted loudly not to fire and surrender. However, naxalites kept on firing towards troops with the motive to kill security personnel and loot their weapons thereby compelling the troops to fire towards naxalites in self defence. The CRPF party under command Insp/GD Bhagwana Ram Thory alongwith Police personnel continued to further beef up the cordon. Shri V.P. Singh, Second-in-Command 153 Bn, CRPF, having been updated by Insp/GD Bhagwana Ram Thory over mobile phone, rushed to the spot alongwith QAT. Though, naxals continued to fire towards the troops injuring SAP Jawan CT Shiv Sharan Singh. Immediately a party consisting of HC/GD M.C. Rayalu, HC/GD T. Rama Swamy, CT/GD Dharmender Kumar and CT/DVR Manoj Kumar gave cover fire and rescued the injured SAP jawan who was rushed to P.H.C. Chakiya for treatment. Undaunted by the grave situation and persistent fire, CRPF party under command Insp/GD Bhagwana Ram Thory took great personal risk in which the Insp/GD had shown exemplary leadership qualities. Displaying total devotion and stellar spirit of sacrifice, he led his force from the front and tightened the cordon followed with heavy firing towards the naxals resulting which naxals could not get chance to escape from the site.

In the meantime, SP-Motihari reached on the spot and decided to form two parties in B.P. vehicles to move as close to the naxalites as possible. In one Gypsy boarded HC/GD M.C. Rayalu, HC/GD T. Rama Swamy, CT/GD Dharmender Kumar and CT/DVR Manoj Kumar alongwith SP, Motihari, and in another Gypsy civil police/STF personnel, moved towards naxals to take their respective position, took stock of the situation and traced out the position of Naxals. However, naxals continued to fire heavily towards the position of B.P. Gypsy making it difficult to take suitable cover. At that time HC/GD T. Rama Swamy hurled a hand grenade towards probable position of naxals, which resulted killing of one or more naxals due to which naxals stopped their firing for sometime. Exploiting this hiatus HC/GD M.C. Rayalu, HC/GD T. Rama Swamy and CT/GD Dharmender Kumar also joined together and by taking extra pain and grave risk to their lives, crawled towards the direction of fire so as to move precisely to assess the position of the naxals. Faced with a full barrage of bullets they exhibited extraordinary bravery and it was their daring act that turned the tide in favour of security forces, which caused killing of two or more naxals. During the entire operation, they evinced signified great courage, conspicuous gallant act and tenacity under pressure despite the heavy firing from the Maoist side.

Meanwhile, Sh. K. K. Sharma DIG (Ops) Muzaffarpur with B/153 Bn CRPF and Sh. V. P. Singh, Second-in-Command, with unit QAT reached the spot, took over command of the situation and strengthened the cordon. Sh. K. K. Sharma DIG (Ops) Muzaffarpur being a senior officer assessed the whole situation at once and instantaneously worked out an efficient and effective strategy and detailed the police parties to keep extra alert and vigil on those gaps which naxalites

might exploit to escape from the cordon. Sh. K. K. Sharma DIG (Ops) Muzaffarpur personally visited all the points and assessed/discussed the situation and issued necessary directions to Jawans from time to time stressing that the Maoists should not escape the dragnet. He also put his life in danger several times by constant exposure even in the face of heavy cross firing between the police parties and Maoists. During almost the whole episode, Sh. K. K. Sharma DIG (Ops) Muzaffarpur, crouched and crawled uncaring for his life during heavy firing time and again reaching out to his boys and their various perches motivating and inspiring them. His exemplary leadership no doubt clinched the issue.

At around 0015 Hrs Sh. K. K. Sharma, DIG (Ops) MZR ordered CRPF personnel to fire two para bombs to illuminate the area just so the position of the naxals is exposed. Insp/ GD Naushad Ali, HC/GD O.N. Shukla fired one para bomb each and CT/GD K. Babu threw a hand grenade towards the suspected naxal position. All this while, the officers of the CRPF kept on patrolling in B.P. Gypsy/Bunker along the periphery of the cordon and repeatedly exhorting upon the troops vigilant and alert. In the meantime, at around 0300 Hrs, naxals made a daring attempt to break the cordon from the eastern side. However, Insp/GD Naushad Ali who noticed this move, moved up, challenged the naxalites and fired towards the naxals, putting his life in risk in the manoeuvre and fire. One of them was killed in the firing and remaining at once retreated.

Once again, at the dawn before the search began at 0530 hrs, the troops were briefed by Sh. K. K. Sharma DIG (Ops) MZR to be more vigilant to capture/arrest the naxalites alive as far as possible. Naxals hiding in one house fired indiscriminately towards the troops. Retaliating effectively, the troops in a stellar display of exemplary courage and putting their lives to a huge risk advanced towards the naxals which compelled them to surrender with their weapons.

The exemplary dedication executed by Insp/GD Naushad Ali, Insp/GD Bhagwana Ram Thory, HC/GD M.C. Rayalu and HC/GD T. Ramaswamy need a special mention as they deservedly applied their mind, training and experience to execute the order given to them, took extra pain and extreme risk to neutralize the naxalites, putting their life into risk and without caring about their life. They have exhibited extra ordinary bravery and conspicuous courage, which will go a long way in setting an example and boosting the morale of troops and Battalion during the well executed operation.

Recoveries made:

- i) Dead Bodies of Killed Naxals - 06
- ii) Naxalites Apprehended - 10
- iii) 7.62 MM SLR Rifle - 05 Nos.
- iv) .303 Bolt Action Rifle - 09 Nos.
- v) Country-made Pistol - 01 No.

vi)	Empty magazine of 7.62 MM SLR	- 11 Nos.
vii)	Empty magazine of .303 MM Bolt action	- 11 Nos.
viii)	Live round of 7.62 MM	- 695 Round
ix)	Live round of .303 MM	- 733 Round
x)	Empty case of 7.62 MM	- 56 Nos.
xi)	Empty case of .303 MM	- 03 Nos.
xii)	Empty case of 7.62 x 39 MM	- 02 Nos.
xiii)	Charger clip of .303 MM Ammunition	- 06 Nos.
xiv)	Walky-Talky Set	- 02 Nos.
xv)	03 Battery Tource	- 01 No.
xvi)	Electronic Detonator	- 01 No.
xvii)	Electronic Charger	- 01 No.
xviii)	Flash for laser mine	- 01 No.
xix)	Purse with Cash	- Rs. 2000/-
xx)	Chindi Cloth	- 25 Gm
xxi)	Note Book	- 02 Nos.
xxii)	Pocket Diary	- 02 Nos.
xxiii)	Computer Book	- 01 No.
xxiv)	Civil Dress	- 19 Pair
xxv)	Black Uniform	- 10 Pair
xxvi)	Black belt	- 04 Nos.
xxvii)	Radio	- 03 Nos.
xxviii)	Fultruh	- 02 Nos.
xxix)	Line yard with Visal	- 02 Nos.
xxx)	Eye Sketch	- 04 Nos.
xxxi)	Mobile Phone	- 07 Nos.
xxxii)	Sim Card	- 03 Nos.
xxxiii)	A large quantity of daily use items.	

In this encounter S/Shri Naushad Ali, Inspector, Bhagwana Ram Thory, Inspector, M.C. Rayalu, Head Constable and T. Ramaswamy, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and

consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/03/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 79-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:—

Name & Rank

S/Shri

01. Rana Navin,
Assistant Commandant
02. Brijesh Kumar,
Constable
03. Ashok Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 27/08/2010, an intelligence input was received regarding the presence of a group of 10 to 15 heavily armed Maoists led by Umakanta Mahato which was intending to launch an attack on SFs contingents/establishments. To pre-empt the plans of the Maoists, a special operation was accordingly launched by four teams of 205 CoBRA in the densely forested tracts near Patasimul and Jorananda villages under PS Jhargram of District West Medinipur, West Bengal.

As part of their broad operational plan, the teams laid tactical ambushes at specific points in the target area. At about 0130 hours of 27/08/2010, the scout of team number 12 of the aforementioned CoBRA contingent noticed the movement of a group of Maoists in the vicinity. In order to confront the approaching Maoists, the team Commander, Shri Rana Navin, Assistant Commandant, besides informing other CoBRA contingents in the vicinity, immediately re-positioned his team at the best possible tactical spot.

The tactical re-orientation however, could not prevent the Maoists from spotting their presence and they immediately launched a heavy barrage of gunfire on the CoBRA team from multiple directions. To complicate the already difficult situation, the Maoists also started shouting slogans to create a sense of panic among the CoBRA troops.

The rapidly developing situation now required a change in approach. Instead of getting bogged down in a prolonged exchange of fire, the team Commander decided to adopt a more pro-active approach. Abandoning the relative safety of the team's current position, Shri Rana Navin decided to move forward and carry out a flanking attack on the Maoist positions. Keeping the rest of his team in their entrenched positions, Shri Rana Navin alongwith Cts/GD Brijesh Kumar and Ashok Kumar launched themselves towards the

Maoists. Braving severe lack of visibility and terrain restrictions, the assault group moved towards the Maoists bravely.

The sudden change in the tactics thoroughly surprised the Maoists. However, failing to comprehend the scale of the sudden CoBRA assault, the Maoists continued with their belligerence and continued to resist the CoBRA advance. While the initial resistance of the Maoists seemed to be quite determined for about an hour, it soon fizzled out. Nevertheless, the Maoists kept firing intermittently for two more hours.

The determined assault of Shri Rana Navin, A/C, however, was far too much for the entrenched Maoists. With a fast approaching daylight, they decided to beat a retreat. While most of the Maoists were reportedly able to escape from the site of the incident, subsequent searches led to the recovery of the body of a dead Maoist along with a weapon. The slain Maoist was later identified as Umakanta Mahato who was the prime accused in the Gyaneshwari Express derailment case and was carrying a reward of Rupees One Lakh against his name announced by the CBI.

Recovery Made :—One revolver, three live ammunition, one fired empty cartridge, one motor cycle, forty empty bullet cartridges of various types of ammunitions and some Maoist posters.

In this encounter S/Shri Rana Navin, Assistant Commandant, Brijesh Kumar, Constable and Ashok Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/08/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 80-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:—

Name & Rank

S/Shri

01. Pratap Singh, Sub Inspector (Posthumously)
02. Satyabir Singh, Head Constable (Posthumously)
03. Devanand Singh, Head Constable (Posthumously)
04. Gajender Singh, Constable (Posthumously)

05. Dipak Chand Deka, (Posthumously)
Head Constable

06. Radha Kishan, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 03-05-2011 based on an intelligence input regarding presence of a naxal dasta in the hills of Hurmur and Ganeshpur a combined party of F/133 BN and G/94 BN alongwith Civil Police component under command of Shri R. K. Singh, Asstt. Commandant of F/133 Bn and OC P. S. Senha moved out for operations at 0430 hrs from Lohardaga. The combined party was briefed at Senha PS and there itself the route of induction, modus operandi of the operation was discussed and decided. The party reached Ganeshpur village at around 0900 hrs and started searching and negotiating a couple of hills via Chota Ganeshpur village. The party reached Hurmur forest area at around 1055 hrs. After crossing village Chota Ganeshpur the party entered in area with thick vegetation. On the trijunction where tracks from village Chatakpur side and village Hurmur side converging with the track going towards Sake side, the party confronted a couple who were cutting woods. After enquiring about their presence and finding nothing suspicious the party moved further towards Sake side on the track. As the party was moving towards village Sake on a lengthy patch of track in south east of village Hurmur, with hilly terrain on both sides and stream to its immediate right, a single sound of big blast occurred at once followed by heavy firing on the troops from three flanks i.e. from south-east, south-west and north-west side. The whole area was covered with dust and after some time when the dust cleared, everybody was seen lying injured on and near the track. In these serial blasts maximum number of personnel came under their impact and were seriously injured. The limbs of Sh. R. K. Singh A/C of leading section, HC/GD Satyabir Singh, HC/GD D. N. Singh and CT/GD Gajender Singh of middle section and SI/GD Pratap Singh of rear section were severly damaged as they stepped on the impact of IED. Even after seriously injured the combined troops gallantly retaliated the fire of naxals. Intermittently during the fire the Maoists started announcing on the public address system directing the jawans to lay down the arms. The design of the Maoists were to kill our troops and loot the weapons. During the gun battle SI/GD Pratap Singh, HC/GD Satyabir Singh, HC/GD Devanand Singh, CT/GD Gajender Singh, HC/GD D.C.Deka and CT/Bug Radhakrishan retaliated the naxal attack by frequently changing their position by crawling and motivated the associates till the encounter continued. SI/GD Pratap Singh, HC/GD Satyabir Singh, HC/GD Devanand Singh, CT/GD Gajender Singh, HC/GD D.C. Deka and CT/Bug Radhakrishan fought with the naxals till the encounter continued and succumbed due to hemorrhagic shock of blast injury and bullet injury.

The combined troops despite being grievously injured and bleeding profusely and even at a risk of succumbing did not loose nerve. They remained in communication and fought back and defeated the naxals. The reinforcement was to take some time to reach that forlorn place up the hill. The reverberating echo of gun fire from both sides was enough to make even a battle hardened troop jittery. The naxals despite their best efforts and being in a highly advantageous position could not succeed in their nefarious design to snatch the weapons in the mayhem of the troops as they had done in Chintalnar (Dantewada). The troops showed incredible bravery in the situation and fought gallantly and kept the naxals at bay. Subsequent details of intelligence suggests that this act of the naxals were unprecedented and for the first time they had experimented with cordex wire to detonate explosive devices in such a large number simultaneously. Though they had prepared a meticulous plan but it was foiled by gallant action of the troops.

The following items were recovered from the incident site:

Empty case of SLR Rifle - 01

Empty case of AK-47 Rifle - 14 and 01 live round

Empty case of Insas Rifle - 08

Empty case of .303 rifle -28 and miss fire live round 05

Empty case of .315 Rifle -20

Broken Ken of Still -01

Iron Can - Broken piece

Iron rod - Broken piece

Iron Volt - 03

Gray color can along with 100 Mtr cover wire

Red color wire - 2.5 Mtr

In this encounter S/Shri Late Pratap Singh, Sub Inspector, Late Satyabir Singh, Head Constable, Late Devanand Singh, Head Constable, Late Gajender Singh, Constable, Late Dipak Chand Deka, Head Constable and Late Radha Kishan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/05/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 81-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:—

Name & Rank

S/Shri

1.	Ram Singh Slathia, Constable	(Posthumously)
2.	Praveen Kumar, Constable	(Posthumously)
3.	Bappaditya Mondal, Constable	
4.	Aneesh M.V., Constable	

Statement of service for which the decoration has been awarded

Operation 'SHIKHAR' was planned to carry out seek, destroy and search operation at Villages Bendi, Aman, Beltherba and surrounding jungle area of Jhumra Hills under P. S. Mahuatand, Distt-Bokaro w.e.f. 26/09/11 to 30/09/11. It was a joint operation of two teams of 207 CoBRA and Jharkhand Jaguar. Accordingly, troops were briefed on Google map (two teams of B/207) about the planning, area, terrain, past incidence, intelligence inputs, logistic support and contingencies. As per planning, on 26/09/11 at about 2000 hrs. two teams of B/207 i.e. Team No. 04 and 06 under command Shri Rajesh Yadav, 2-I/C alongwith Sh. Puneet Kumar Bhardwaj A/C left coy location Bokaro by road to I.E.L Police Station, Gomia and picked up one assault group of Jharkhand Jaguar and representative of civil police.

Joint party moved by road and reached at D.P. 1 km behind the village CHILGO at about 2330 hrs via Konar Dam. As per planning, troops marched on foot to village BENDI and reached there at about 0330 hrs. early morning on 27/09/11. Teams of B/207 CoBRA cordoned off the village BENDI, placed cut offs and the assault group of Jharkhand Jaguar carried out search at village Bendi and its jungle areas. At about 0730 hrs whole party proceeded towards village Aman. After tactically bypassing village Beltharba/ Simrabela party moved to village Aman. Troops reached village Aman at about 1400 hrs and carried out search of suspected houses, thereafter took LUP at dominating height near village Aman. After a while, around 1420 hrs troops saw some suspected persons at about 200-250 meters away. The operational commander Sh. Rajesh Yadav, 2-I/C alongwith Sh. Puneet Kumar Bhardwaj A/C, Insp/GD Hukma Ram Yadav with a team including CT/GD Ram Singh Slathia, CT/GD Parveen Kumar, CT/GD Aneesh M.V., CT/GD P. K. Barik, CT/GD Asit Mallik, SI/GD Anil Kumar, CT/GD Bappaditya Mondal, and SI/GD Gaywat Mangesh. G. tactically moved toward the civilians to interrogate as well as to see the terrain. When the suspected persons saw the troops advancing towards them, they ran away and disappeared in dense forest, bushes and big boulders, taking advantage of undulating features. The troops however kept advancing towards them tactically in synergy as per feature of terrain.

Moment the party reached near the spot, the naxalites started firing with sophisticated arms taking cover of boulders. Immediately, troops took position, retaliated the fire and continued their advance tactically.

Heavy exchange of firing took place between the naxalites, who were hiding behind the boulders in a defensive position and the team personnel who kept advancing towards the naxalites tactically. This party, despite heavy fire from the naxalites without caring their own safety and putting their lives at high risk manage to reach near boulders. During encounter between the naxalites and team personnel, CT/GD Ram Singh Slathia was on extreme right of the party. When CT/GD Ram Singh tried to eliminate the naxalite, who was a few meters away from him one of the naxalites fired upon him from behind the boulders and as a result he sustained bullet injury in his neck. But CT/GD Ram Singh Slathia kept on firing at the naxals and pinned them down and subsequently succumbed to injuries even after best efforts made to save his life. CT/GD Parveen Kumar while spearheading the assault from the left flank also sustained bullet injury on his forehead and succumbed to death on the spot. While his team mates carried on the assault and kept the naxals at bay. During the exchange of heavy fire, other four personnel i. e. CT/GD Asit Malik sustained bullet injury on his shoulder, CT/GD Aneesh M.V. sustained bullet injury in his abdomen, CT/GD Bappaditya Mondal sustained bullet injury in his leg and CT/GD P. K. Barik sustained bullet injury on his left biceps. All the injured personnel were air lifted and evacuated at Apollo Hospital, Ranchi. An FIR of the incident lodged at P. S. Mahuatand, Distt-Bokaro (JKD) on 27/09/11 and a Case No. 063/11 of dated 30/09/11 has been registered U/S 147,148,149,121(A),332,307,353 of IPC, 27 Arms Act, 3/4 Explosive Act and 10.13 UAP Act at P.S.Mahuatand.

During this operation Sh. Rajesh Yadav, 2-I/C displayed good tactical appreciation, courageous attitude and made gallant action. In spite of tense, risky situation and very close proximity to the naxals, he kept the situation under control and showed good leadership and courage which compelled the naxals to flee from the site of encounter. He, inspite of being engaged in firing, planned and ensured safe landing of chopper and immediate casualty evacuation operation. Again on 29.09.11 when the party was ambushed, he showed good tactical appreciation/courage. Planned and executed a swift counter ambush and simultaneously kept the morale of troops high. Similarly, Sh. Puneet Kumar Bhardwaj, A/C also exhibited high sense of responsibility and made gallant action and gave full support/assistance to operational commander. He fought with the naxals at a very close quarter. On 29.09.11 during counter ambush, he himself led the troops and disconnected the I.E.D. from the power source without caring for his own safety. Both of them didn't care for their own safety and took extreme risk to save the lives of their team personnel.

In the entire operation, despite heavy firing from the hard-core naxals, and a very high probability of peril to their

own life the above personnel exhibited exemplary courage and devotion towards carrying out their assigned duties. The control over nerve exhibited by them under the life threatening circumstances is not only exemplary but also shows highest degree of courage, gallantry, devotion, dedication and commitment to duty in the face of heavy firing by the Naxalites. Due to very short distance between the Naxals and heavy volume of fire, death remained always a whisker away.

Recovery:

IEDs banners-02 Nos, Electric detonators- 10 Nos. electric wire, camera flash and batteries alongwith huge quantity of naxal posters.

In this encounter S/Shri Late Ram Singh Slathia, Constable, Late Praveen Kumar, Constable, Bappaditya Mondal, Constable and Aneesh M.V., Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/09/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 82-Pres/2012- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:-

Name & Rank

S/Shri

1. Sandeep,
Assistant Commandant
2. Manoj Kumar,
Constable
3. Gour Chandra Das,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On an intelligence input received through Intelligence Bureau, Special Branch and CRPF sources regarding running of training camp and congregation of Maoist Dastas comprising one naxal company and few Naxal platoons under the leadership of Nanhu Mochi @ Probhat (Secretary of Koel Sankh Zone), Arjun Yadav @ Nakul, Zonal Commander, Umesh Yadav @ Dinesh (over all incharge of Koel Sankh Zone), Silvester Member of BRC and Bada Vikas, Zonal Commander in the hills of Kumari/Borha villages, a special operation "TOOFAN" was planned by Shri D.K. Pandey, IG alongwith, DIG Ranchi, Smt Sampat Meena, DIG Palamu

Range Shri Laxman Prasad Singh, Commandant 133 Bn, Shri Sheel Nidhi Jha, Commandant 11 Bn Shri D.N.Lal, SP Gumla Shri N.K.Singh, SP Latehar, Shri Kuldeep Dwivedi and 2-I/C 203 CoBRA Shri Munna Kumar Singh under overall supervision of Shri Alok Raj, the then IGP(OPS) CRPF Jharkhand and Shri Rezi Dungdung, Zonal IGP Ranchi.

As per plan two striking parties were formed for this operation. Striking parties were deployed for Special search Ops duty in the forest area of Village- Karcha and Kumari wef. 17/11/2010 at about 1500 hours. The striking party-I moved for the operation by vehicle upto Rud via Garu and then moved further on foot to the target area tactfully and gradually advanced towards the operational area.

The strike Team II also bypassed the anticipated route and moved cross country towards the Naxal camp maintaining utmost surprise. However, the Naxals got wind of the movement of Strike Team II at late hours and planned to put up a hasty ambush on team II on the fringe of the hills in which their camp was located but they did not have an inkling regarding the move of Strike Team I which was launched from Daltonganj side which moved cross country climbing up the steep slope of the hills to reach the Naxal camp. As per the briefing the Strike Team II left 2 platoons of D/133 under the leadership of Sh. Sandeep, Assistant Commandant and one Assault group of Jharkhand Jaguar under the leadership of S. A Tigga Addl. SP at village Borha and further moved towards Kumari village with SOG. At about 1330 hours, Strike Team I mounted assault over command post of the Naxals. After exchange of fire, the Naxal Commanders started retreating and fled from the hills and while passing by the side of our advancing troops to Kumari had a brief encounter. In this encounter Shri Pawan Kumar Singh Dy. Comdt and Inspector Sanjay Kumar Singh and his members fought bravely against the Naxals resulting the Naxals to flee towards village Jamti at around 1430 hours.

In the mean while, one ERB Company of Maoist with one platoon and few local dastas comprising about 100-125 cadres managed to escape and attacked our platoons of D/133. They tried to overwhelm our troops taking advantage of vegetation, nallah and houses. Our Commanders at the spot A/Comdt Sandeep alongwith HC/GD G.C. Das, CT/GD Manoj Kumar and CT/GD Shiv Ram fought brilliantly and bravely. Considering the situation, party took superb decision with tactical skill and fell back to support the beleaguered troops at Borha. Though the terrain and vegetation was posing a problem and the task was getting tougher due to placement of Maoist snipers enroute and as the daylight was receding, the party did not lose its nerve and kept on moving towards the encounter site. On the way, party commander also kept on passing guidance through wireless set to Shri Sandeep OC-D/133 to maintain fire discipline which was ensured by Shri Sandeep effectively. When this party remained few dozen meters away from the main encounter site, Dy.Comdt Shri Pawan Kumar Singh and Inspector Sanjay Kumar Singh with their troops were ordered to encircle the maoist from

the right flank and give them covering fire. Even in the face of fierce firing, Insp Sanjay Kumar Singh undeterred by this, maneuvered their way with tactical brilliance and showed great courage in advancing towards the naxal positions. At this point the Naxals sensed their encirclement and as they had received a few hits, they were compelled to retreat in the hills leaving behind dead body of one of their commanders with an INSAS Rifle and dragging away few more bodies. Thus, the exemplary courage, great determination of Shri Pawan Kumar Singh, Dy.Comdt, Inspector Sanjay and the personnel of CRPF/ Jharkhand Jaguar/ DAP saved the lives of jawans/officers of D/133 and JJ and inflicted significant casualties to the naxals. Similarly Shri Sandeep, Assistant Commandant and his team held on to their position and thwarted naxals design of harming the troops and fought brilliantly. As darkness set in the Strike Team II under command of Shri Pawan Kumar Singh, DC(Ops) and others remained in the jungle of Borha securing the place tactically. In this operation CT/GD Manoj Kumar member of said team got injured while fighting bravely with the naxals. Immediately first aid was administered to him and in the morning of 19.11.10 he was evacuated from the encounter site by Shri Alok Raj, IGP JKD, CRPF through Chopper. In the encounter 02 naxals were killed beside serious injuries to several others.

It is one of the most successful operation executed by the Strike Team-II with almost perfection, bravery and determination in which they took on a big and well entrenched Maoist group, broke their meeting, neutralized them from one of the toughest, difficult and interior terrain.

Recovery:-

1. 5.56 MM INSAS Rifle	- 01 No.
2. 5.56 MM INSAS live Amns	- 26 rounds
3. 7.62 MM SLR miss fire Amns	- 01 No.
4. 5.56 INSAS Magazine	- 04 Nos.
5. IED weighting approx.	- 20 kgs.
6. Cash Rs. 265/-	
7. 7.62 MM fired cases	- 83 Nos.
8. 5.56 MM INSAS rifle fired cases	- 28 Nos.
9. .303 rifle fired cases	- 02 Nos.
10. .315 fired cases	- 02 Nos.
11. 7.62x39MM AK 47 fired cases	- 01 No.
12. Laptop	- 01 No.
13. Motorola walky talky set	- 08 Nos.
14. Computer key board	- 01 No
15. Cash Rs. 3,34,000/-	

In this encounter S/Shri Sandeep, Assistant Commandant, Manoj Kumar, Constable and Gour Chandra Das, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/11/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 83-Pres/2013- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Central Reserve Police Force:-

Name & Rank

Shri Naresh Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 17th of May 2011 in the Naxal of hotbed of Dantewada Distt., Commandant 2nd Bn, CRPF and SDPO Sukma Shri Tarkeshwar Patil, planned an operation wherein they were to visit Kerlapal, approximately 18 Kms away from Sukma and observed the progress of accommodation that was being constructed for housing A/2nd Bn, CRPF. As per plan at around 1745 hrs after a detailed briefing to the troops accompanying Commandant and SDPO left in a convoy of 3 vehicles which were of civil make and pattern (02 Scorpio and 01 Tavera) from their Bn HQ at Sukma for A/2nd Bn, CRPF, Kerlapal.

After taking stock of progress of construction at Kerlapal and having briefed the troops of A/2nd Bn, CRPF, Commandant and SDPO decided to move back to Hqr. around 1930 hrs. The plan was to avoid detection by Naxal informers/ sympathizers by taking advantage of darkness. While returning the vehicle with Commandant 2nd Bn, CRPF and SDPO led the convoy of vehicles. The Tavera with CRPF troops followed as the rear vehicle. With a view to add further deception, the CRPF Tavera overtook the Police vehicle moving in the middle of the convoy as per the plan. Around 2000 hrs approximately 6 Kms from Sukma an IED was blasted by Naxals in which the Tavera (middle vehicle) with Reg No. CG-10AF-8060 was blown up near Village Borguda.

The impact of explosion was so intense that it caused the immediate death of 7 out of 8 occupants of the vehicles. The crater of explosion, measured later, had a diameter of 13' and depth of 4.5'.

Meanwhile, the lone survivor, CT/GD Naresh Kumar, in spite of being critically injured, regained his consciousness

within few minutes and braving the severe pain and trauma which he sustained, tried to catch hold of his weapon which was thrown away during the blast. With great stress and pain CT/GD Naresh Kumar got his weapon. He was able to spot a few Naxals firing who were also charging towards him with a game plan of looting away all the weapons. He had to stop them, but to his utter dismay, he realized that neither of his hands could muster the power to cock the rifle. Showing great presence of mind and manifesting best practices of training at odd situations, CT/GD Naresh Kumar, used his boot to cock the rifle and then fired a volley of fire of 5 rounds against the charging Naxals.

This unexpected retaliation came as a shock to Naxals who stopped and did not move ahead to loot the weapons and cause any other damage. He even with his injury-crippled body crawled towards his colleagues to see if they could be revived or helped in any way. Amidst the gunshots he noticed a call on the cell phone of one his colleagues. He utilized this call and was able to inform his Battalion Hqr. regarding sending immediate reinforcements. Subsequently he again kept up with his battle till the time reinforcements reached the spot.

The first troops to come for his reinforcement took around 10 minutes of time. Not aware of the identity of these troops, CT/GD Naresh Kumar challenged the party and ordered them not to advance. It was only after the CRPF troops proved their identity they were allowed to approach the spot by CT/GD Naresh Kumar.

The selfless commitment and heroism of CT/GD Naresh Kumar constitutes a brave and gallant action which has few parallels in the annals of CRPF. In keeping with the finest traditions of the force, he displayed exemplary diligence and bravery to thwart the designs of his adversaries. He showed great presence of mind, even after being seriously injured by not only making Naxals retreat by his constant firing but also prevented the looting of AK 47-03, INSAS-02, X-95 Rifle-01, LMG-01, Auto Fall Rifle-01, (Rounds-1040, Grenades,-08, Rifle Grenades-06).

In this encounter Shri Naresh Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/05/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 84-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:—

Name & Rank

S/Shri

1. S. Sreenu,
Constable
2. Birendra Kumar Singh,
Constable
3. Deepak Kumar Xaxa,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24/11/11, information was received from SP P/Midnapur, Sh. Praveen Tripathi, regarding movement of 5-7 armed Maoists in the jungle area north-east of village Burisole, P.S. Jamboni about 13 kms from Jhargram. Based on the information, a joint operation was planned.

As per plan teams were dropped at different dropping points (DPs) on the road passing through the jungle. Both teams of 207 CoBRA moved towards target area maintaining speed, silence and stealth and reached their RV at about 1600 hrs. To prevent loss of stealth, it was decided to form a very small probing team to proceed towards the target point. This consisted of Shri Nagendra Singh, A/C, Sh. Vinoj P. Joseph, A/C, CT/GD. S. Sreenu, CT/GD S. Muthuvel, CT/GD Birendra Kumar Singh and CT/GD Deepak Kumar Xaxa.

When the probing team neared the target point, at about 1630hrs, it came under a heavy volley of fire from the Maoists. The probing team members were flung to the ground by this hail of bullets and Sh. Nagendra Singh, A/C was injured by a grenade splinter. With darkness approaching, the terrain offering no substantial coverage, it was an extremely high risk situation. Would this be another of those Maoist successes like Chintalnar? Would it better to have a tactical retreat, save the lives of themselves and the nearly 70 odd CoBRA personnel and fight another day? No - the CRPF was not going to let the Maoists gloat and celebrate but rather make them pay.

The long years of rigorous training and battle experience combined with a steely determination and a Devil may care attitude towards the risks involved, the four GD constables, viz., S. Sreenu, S. Muthuvel, Birendra Kumar Singh and Deepak Kumar Xaxa obediently responded to their two leaders for a frontal attack which was the only choice available if the CRPF had to succeed.

The four GD constables of CoBRA 207 advanced in buddy pairs on either side of the two commanders in an extended 'V' formation, using fire and cover tactics. Not for a moment in the over 30 minutes of close encounter at about 15- 30 yards did the constables flinch. CT S. Muthuvel, who was on the extreme left of the advancing party, in those mad

and frighteningly violent of volleys of enemy fire, even managed to fix, prime and fire four Rifle Grenades that prevented any further reinforcement the Maoists could have been banking upon to reach them. Even in the close clutter of men, bushes and trees, CT/GD S. Sreenu and CT/GD Birendra Kumar Singh, managed to lob one HE Grenade each at the target in addition to firing from their automatic weapons. CT/GD Deepak Kumar Xaxa stuck out thick and thin with the party firing from his service weapon to ensure that it was the CRPF which would become Ajeya that day. This unexpected and audacious movement totally neutralized the well entrenched position and the advantage of surprise the Maoists had enjoyed initially over the security personnel when the operation had commenced.

In the encounter, it was discovered later on that Koteswar Rao @ Kishanji, a politburo and central committee member of CPI(Maoist) had been killed. The architect of the Lalgarh experiment, the leader of many attacks and killings of security forces, a strategist par excellence Kishanji bit the dust thanks to this operation in which these four constables, shoulder to shoulder fought with great determination, extraordinary bravery and conspicuous bravery

During encounter one Naxal killed/gunned down by the troops and recovered deadbody. The deadbody of killed Naxal was later identified as Koteswar Rao @ Kishenji, a Polit Bureau and a Central Committee Member of CPI(Maoist), one prominent naxal leader. The following items were also recovered from the site of encounter :-

01	AK-47 Rifle bearing Arsenal No. KT-435182.	01
02	Camouflage coloured cotton made ammunition pouch.	01
03	Small black coloured multi pockets chain fitted rexin Bag (containing Hard Disc, Pen drive and Maoist literatures).	01
04	Motorola wireless hand set	01
05	Hard Disc store jet 500 GB in damaged condition	01
06	Hard disc Seagate 320 GB. in damaged condition.	01
07	C.D. in broken condition	01
08	Pencil torch light (black colour)	01
09	Samsungs Mobile Phone (black colour)	01
10	Nokia Mobile Phone (black colour)	01
11	U.S.B. cord in a plastic pocket	01
12	Data cards	04
13	Mobile Chips	14

14	Reliance Mobile Sim Card	01
15	B.S.N.L. Mobile Sim Card	01
16	4 G.B. data traveller pen drive	01
17	Card reader Zembonic	01
18	Pocket diary	01
19	Plastic pocket containing pullthrough, Oil bottle, Cotton pieces.	01
20	Spectacle with golden colour covered	01
21	One plastic pocket containing Naphthalene ball 05 Nos.	01
22	Duracell battery (small)	01 Nos.
23	Ball Pen	04 pieces
24	Thermo Meter	01
25	Gillette blade	04 Nos.
26	Gillette razor	01
27	Scissors (small)	01
28	Lotus media made compact disc	01
29	Cash Rs. 84,535/- of various denomination	--
30	AK-47 Rifle having fixed Butt No. SAP/8-31, Arsenal No. BE-445317 fitted with sling, Loaded with one round 7.62 mm live ammunitions in chamber and one round 7.62 mm live ammunition in magazine.	01
31	Empty Cartridges of 7.62 mm	02 Nos.
32	White colour Zariken	01
33	Hearing aid machine of Novax company with extention cord	01
34	Leather chappal	01
36	Samsung made Mobile battery bearing No. AB-553446 BU with stain of blood.	01

In this encounter S/Shri S. Sreenu, Constable, Birendra Kumar Singh, Constable and Deepak Kumar Xaxa, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/11/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 85-Pres/2013—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force:—

Name & Rank

S/Shri

01.	N Manoranjan Singh, Assistant Commandant	(Posthumously)
02.	Rakesh Kumar Chaurasia, (Posthumously) Assistant Commandant	
03.	Susheel Kumar Verma, Sub Inspector	(Posthumously)
04.	Lalit Kumar, Head Constable	(Posthumously)
05.	Uday Kumar Yadav, Constable	(Posthumously)
06.	Manohar Lal Chandra, Constable	(Posthumously)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 16th Sept 2009 B/201 was given the task to carry out operation against the naxalites in village Singhanmadgu under PS Kistaram in Dantewada district of Chhattisgarh State. While conducting the operation by the officers and personnel alongwith troops of B/201 CoBRA, CRPF, 01 naxalite was killed and 01 country made gun recovered from him. During combing operation one make shift Arms manufacturing unit was unearthed from where 07 country made weapons alongwith 13 numbers of barrels and 2 grenades were recovered and factory destroyed by the troops. After completion of operation, while returning to its camp, the troops were ambushed by heavily armed naxalites on 17th Sept 2009 evening. Shri N. Manoranjan Singh, AC who was leading the party helped his team members in moving out safely from the ambush zone. Further, when he saw that the other teams behind him were surrounded by the naxalites, he moved back to provide support to the rear troops without caring for his life. He fired effectively on the naxalites with his personal weapon. He threw 01 hand grenade on the naxalites and caused heavy damage to them. While taking cover he was hit upon by volley of bullets fired by the naxalites in his lower abdomen and he achieved martyrdom instantaneously. Similarly, Sh. Rakesh Kumar Chaurasia, AC and SI/GD Sushil Kumar Verma were leading their team and managed their team mates to move out safely from ambush area. But during the course of encounter with naxalites they sustained bullet injury and attained martyrdom. HC/GD Lalit Kumar, CT/GD Manohar Lal Chandra and CT/GD Uday Kumar Yadav gave effective support fire along with the above officers/official and managed to bring out the troops safely.

Shri Manoranjan Singh, Shri Rakesh Kumar Chaurasia, SI(GD) Sunil Kumar Verma, HC(GD) Lalit Kumar, CT/GD Uday Kumar Yadav and CT/GD Manohar Lal Chandra fought against the naxals till the last breath without any fear, showed great courage, sense of responsibility, leadership quality and sacrificed their precious lives for the sake of our mother land.

In this encounter S/Shri Late N. Manoranjan Singh, Assistant Commandant, Late Rakesh Kumar Chaurasia, Assistant Commandant, Late Susheel Kumar Verma, Sub Inspector, Late Lalit Kumar, Head Constable, Late Uday Kumar Yadav, Constable and Late Manohar Lal Chandra, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the awards of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/09/2009.

SURESH YADAV
OSD to the President

MINISTRY OF SHIPPING

New Delhi, the 24th June 2013

RESOLUTION

No. E-11013/1/2009-Hindi—In partial modification to the even number Resolution of Ministry of Shipping dated 19.10.2010, non-official members nominated by Ministry of Parliamentary Affairs given at the serial numbers 26 and 27 namely, Dr. V. Maitreyan and Sh. M. Bala Mysura Reddy respectively, are replaced by the following newly nominated members by Ministry of Parliamentary Affairs as non-official members in the Hindi Salahakar Samiti of Ministry of Shipping :—

1. Smt. Naznin Faruque
Member of Parliament (Rajya Sabha)
C-201, Swarn Jayanti Sadan, Dr. B. D. Marg,
New Delhi-110001
Tele. 011-23708086, 23708042
Mobile No. 09013181777
Permanent Address :
U. R. Road, Nagaon Town,
Assam-782001
Tele. 03672-2254193
Mobile No. 09435352211, 09435191111
2. Shri Anil Madhav Dave
Member of Parliament (Rajya Sabha)
C-603, Swarn Jayanti Sadan, Dr. B. D. Marg,
New Delhi-110001
Tele. 011-23766750, 23354181
Mobile No. 09868181806
Permanent Address :
Senior MIG-2, Ankur Colony, Shivaji Nagar,
Bhopal, Madhya Pradesh-462016
Tele. 0755-2460754
Mobile No. 09406904555

Other terms and conditions given in the Resolution of even number dated 19.10.2010 will remain unchanged.

ORDER

Ordered that a copy of this Resolution be communicated to the following :—

President's Secretariat, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Ministry of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariate, Committee of Parliament

on Official Language, Planning Commission, Comptroller and Auditor General of India, All members of Hindi Advisory Committee of Ministry of Shipping and Ministries and Departments of Government of India.

2. Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

M. C. JAUHARI
Jt. Secy.

मुद्रण निदेशालय द्वारा, भारत सरकार मुद्रणालय, एन.आई.टी. फरीदाबाद में मुद्रित
एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2013
PRINTED BY DIRECTORATE OF PRINTING AT GOVERNMENT OF INDIA PRESS,
N.I.T. FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2013
www.dop.nic.in